नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023

वर्ष 03, अंक 255, नई दिल्ली, शुक्रवार 21 नवम्बर 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

"आत्मविश्वास ही सफलता की पहली सीढ़ी है।"

02 पर्यावरण पाठशाला : पेड़ों को विज्ञापन का स्टैंड न समझें

06 प्रदूषण से कम हो रही है धूप

08 जनतक स्थानों पर तंबाकू सेवन करना और खुले सिगरेट बेचना कानूनन अपराध है –

सुप्रीम कोर्ट ने सीएक्यूएम को दिल्ली वायु प्रदूषण पर अंकुश लगाने के लिए 'सक्रिय' कदम उठाने की अनुमति दी

सीएक्यूएम ने दिल्ली-एनसीआर में वायु प्रदूषण के खिलाफ अल्पकालिक और दीर्घकालिक उपायों का प्रस्ताव दिया

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) के आंकड़ों के अनुसार, 18 नवंबर 2025 को दिल्लीवासियों की सुबह 'बेहद खराब' हवा के साथ हुई, जब शहर का एक्यूआई 344 तक पहुंच गया और चार स्टेशनों ने प्रदूषण का स्तर 'गंभीर' बताया।

सुप्रीम कोर्ट ने बुधवार (19 नवंबर, 2025) को वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (सीएक्यूएम) को दिल्ली-एनसीआर में वायु प्रदूषण को रोकने के लिए ₹कोई भी सक्रिय उपाय₹ करने की पूरी छूट दे दी है। इससे पहले, वैधानिक निकाय ने मौजूदा ग्रे III चरण में ही वर्क-फ्रॉम-होम और 50% कार्यालय उपस्थिति जैसे ग्रेप IV प्रतिबंधों को शामिल करने का प्रस्ताव रखा था।

न्यायमूर्ति के. विनोद चंद्रन की पीठ की अध्यक्षता कर रहे भारत के मुख्य न्यायाधीश बी.आर. गवई ने एक आदेश में कहा, ₹वायु प्रदूषण कम करने के लिए सीएक्यूएम का कोई भी सक्रिय कदम हमेशा स्वागत योग्य है।₹ अदालत ने कहा कि सीएक्यूएम को हितधारकों से परामर्श करना चाहिए और सभी को साथ लेकर चलना चाहिए।

अदालत सीएक्यूएम द्वारा प्रस्तुत एक नोट का जवाब दे रही थी, जिसमें दिल्ली-एनसीआर में वायु प्रदूषण के कारण उत्पन्न स्थिति के लिए अल्पकालिक और दीर्घकालिक उपायों का प्रस्ताव दिया गया था।

एमिकस क्यूरी, वरिष्ठ अधिवक्ता अपराजिता सिंह ने सीएक्यूएम की सिफारिश पर प्रकाश डाला, जिसमें बीएस-III उत्सर्जन वाले वाहनों को 12 अगस्त, 2025 के सर्वोच्च न्यायालय के आदेश के संरक्षण से छूट देने की बात कही गई थी, जिसमें अधिकारियों को 10 साल पुराने डीजल और 15 साल पुराने पेट्रोल वाहनों के मालिकों के खिलाफ कोई भी दंडात्मक कदम उठाने से रोक दिया गया था।

मुख्य न्यायाधीश गवई ने सुश्री सिंह को जवाब देते हुए कहा, "हमने कहा है कि सीएक्यूएम कोई भी कदम उठा सकता है। इसका स्वागत किया जाएगा।"

GRAP II में कार्यालय समय में भिन्नता

सीएक्यूएम ने जीआरएपी III के अनुसार, कार्यालय समय में अंतर संबंधी प्रतिबंध को जीआरएपी II में शामिल करने का भी प्रस्ताव रखा। आयोग ने जीआरएपी I चरण के तहत अलग-अलग दरें और सार्वजनिक परिवहन बेड़े व मेट्रो सेवाओं में वृद्धि, यातायात भीड़भाड़ वाले स्थानों पर अधिक तैनाती और यातायात गतिविधियों के समन्वय की सिफारिश की। सीएक्यूएम ने कहा कि एनसीआर राज्यों और दिल्ली सरकार को वाहन एग्रीगेटर्स की नीतियों को शीघ्रता से अधिसूचित करना चाहिए और उनकी निगरानी के लिए एक पोर्टल विकसित करना चाहिए।

अदालत ने सीएक्यूएम को निर्देश दिया कि वह स्कूलों में नवंबर और दिसंबर के महीनों में खेल आयोजनों के मुद्दे पर गौर करे, जब प्रदूषण अपने चरम पर था।

सुश्री सिंह ने कहा कि इस तरह की घटनाएँ बच्चों को गैस चैंबर में डालने के समान हैं। अदालत ने स्पष्ट किया कि सीएक्यूएम को इस मुद्दे पर संबंधित राज्यों को आवश्यक निर्देश देने चाहिए।

दीर्घकालिक उपायों के रूप में, सीएक्यूएम ने इलेक्ट्रिक वाहन नीतियों की समीक्षा और 2000 सीसी और उससे अधिक क्षमता वाली लक्जरी डीजल कारों और एसयूवी में उच्च पर्यावरण संरक्षण शुल्क लगाने का प्रस्ताव रखा।

वर्तमान में पर्यावरण उपकर मात्र 1% है।

नोट में कहा गया है, ₹एकत्रित धनराशि का उपयोग सीएक्यूएम के परामर्श से एनसीआर में वायु प्रदूषण को कम करने के लिए किया जा सकता है।"

इसमें दीर्घकालिक उपाय के रूप में, दिल्ली से 300 किलोमीटर के भीतर किसी भी नए कोयला आधारित ताप विद्युत संयंत्र की स्थापना की अनुमति नहीं देने का प्रस्ताव किया गया।

सीएक्यूएम की अन्य दीर्घकालिक सिफारिशों में एक निश्चित समय-सीमा के भीतर विरासत में मिले कचरे का निपटान; निर्माण और विध्वंस कचरे का संग्रहण, परिवहन और प्रसंस्करण; तथा पर्याप्त हरित क्षेत्र के साथ सड़कों का पुनर्विकास शामिल है।

प्रदूषण नियंत्रण बोर्डों में रिक्तियों को भरें

न्यायालय ने प्रदूषण नियंत्रण बोर्डों में रिक्त पदों को भरने का आदेश दिया तथा दैनिक वेतनभोगी मजदूरों को निर्वाह भत्ता देने के लिए कदम उठाने के निर्देश दिए, जो मौजूदा GRAP III प्रतिबंधों के कारण अपनी आजीविका से वंचित हो गए हैं।

पीठ ने कहा कि वायु प्रदूषण के मुद्दे पर सर्वोच्च न्यायालय द्वारा नियमित निगरानी की आवश्यकता है।

23 नवंबर को सेवानिवृत्त हो रहे मुख्य न्यायाधीश ने कहा, ₹यह उचित होगा कि सर्वोच्च न्यायालय इन मामलों में जल्दबाजी करने के बजाय नियमित निगरानी करे।₹

अदालत ने अगली सुनवाई 10 दिसंबर के लिए निर्धारित की।

डीटीसी बचाओ - दिल्ली बचाओ !!

स्विच मोबिलिटी जैसे ठेकेदार-थर्ड पार्टी को बीच में लाना नहीं चलेगा !!

डीटीसी का निजीकरण नहीं चलेगा !!

डीटीसी की अपनी बसों की संख्या में बढ़ोतरी करो !!

डीटीसी प्रबंधन - दिल्ली सरकार होश में आओ !!

- सभी कॉन्ट्रैक्ट कर्मचारियों को पक्का करो, समान काम के लिए समान वेतन लागू करो !!
- गैर कानूनी रूप से निकाले गए सभी कॉन्ट्रैक्ट कर्मचारियों को वापस लो !!
- महिला कॉन्ट्रैक्ट कर्मचारियों की लंबित मांगों पर तुरंत कार्रवाई करो !!
- सभी सेवानिवृत कॉन्ट्रैक्ट कर्मचारियों को ग्रेच्युटी का भुगतान करो !!
- सफाई कर्मचारियों को पूरे दिन के वेतन की गारंटी करो, श्रम कानूनों का उल्लंघन बंद करो !!
- लाल किले पर हुए विस्फोट में मारे गए कॉन्ट्रैक्ट संवाहक के परिजनों को उचित मुआवजा एवं आश्रित को पक्की नौकरी देनी होगी !!

साथियों, भारत में पिछले तीन दशकों से भी ज्यादा से, एक ऐसी बीमारी ने मजदूरों को परेशान कर रखा है, जिसके चलते आज़ाद देश में रहते हुए भी मजदूर वर्ग गुलामी के दंश को झेलने के लिए मजबूर है. ठेकेदारी प्रथा - जहां मजदूरों के सारे अधिकार छीन लिए जाते हैं, न तो पूरा वेतन मिलता है और न ही नौकरी की गारंटी. मजदूरों-गरीबों के वोटों से चुनकर आई सरकारें संसद और विधान सभा में बैठकर, मजदूर-विरोधी 'श्रम कोड क़ानून' पास कर रही है और रेल, सड़क, डिफेंस, स्टील, कोयला, बिजली, रोडवेज इत्यादि जैसे ज़रूरी क्षेत्रों को निजी-पूंजीपतियों के हाथ बेच रही है. तेज़ी से हो रहे निजीकरण के कारण अब दिल्ली-NCR के नौजवानों को पक्की नौकरी की जगह केवल कॉन्ट्रैक्ट की गुलामी करनी पड़ रही है.

दिल्ली परिवहन निगम अपने ही किये समझौते को तोड़ रहा है - लम्बे समय से कॉन्ट्रैक्ट पर काम कर रहे कर्मचारी इस बात को अच्छी तरह से जानते हैं कि थर्ड पार्टी/कांट्रेक्टर के माध्यम से जब काम लिया जा रहा था तब कॉन्ट्रैक्ट कर्मचारियों ने बहुत बहादुरी से संघर्ष करते हुए डीटीसी से ठेकेदार/थर्ड पार्टी को बाहर किया था और कर्मचारी सीधे डीटीसी के अनुबंध के तहत कार्य पर लिए गए थे. आज दिल्ली परिवहन निगम फिर से स्विच मोबिलिटी जैसी कंपनी के माध्यम से अनुबंधित कर्मचारियों को थर्ड पार्टी/कांट्रेक्टर के नीचे काम करने के लिए मजबूर कर रहा है. ये तो वही बात हो गई कि जो कुछ हमारे पास था, उसे भी छीना जा रहा है. जिन कर्मचारियों को सालों सेवा के बाद पक्का होना था, उन्हें अब स्विच मोबिलिटी के नीचे काम करने के लिए भेजा जा रहा है - ज़ाहिर सी बात है कि ऐसे में डीटीसी धीरे-धीरे अपना पल्ला झाड़ लेगी और सभी कॉन्ट्रैक्ट कर्मचारियों को स्विच मोबिलिटी के भरोसे छोड़ देगी. जिन कर्मचारियों ने स्विच मोबिलिटी के साथ काम करना शुरू कर दिया है - उनके ऊपर ओके ड्यूटी करने का ज़बरदस्त दबाव बनाया जा रहा है. यह सरासर गैर-कानूनी है, डीटीसी प्रबंधन कॉन्ट्रैक्ट कर्मचारी के सेवा काल के दौरान बिना किसी से सलाह किये उनके सेवा शर्तों में परिवर्तन कर रहा है. कॉन्ट्रैक्ट कर्मचारियों को अपनी मांगों को उठाने के लिए सेवा से मुक्त किया जा रहा है. जो कॉन्ट्रैक्ट कर्मचारी सेवानिवृत हो रहे हैं या काम छोड़ रहे हैं - उन्हें ग्रेच्युटी का भुगतान नहीं किया जा रहा. DM और डिपो के अफसर कॉन्ट्रैक्ट कर्मचारियों को आये दिन कारण बताओ नोटिस दे रहे हैं और काम से बाहर कर रहे हैं. तीस हज़ार कर्मचारियों वाले डीटीसी को प्रबंधन और सरकार ने निजी हाथों में सौंपने की पूरी तैयारी कर ली है.

आए थे हरि भजन को ओटन लगे कपास - हमारे ही बीच के कई कॉन्ट्रैक्ट कर्मचारियों ने पहले आम आदमी पार्टी के नेताओं के आगे-पीछे चक्कर लगाए, फिर भाजपा के नेताओं के चक्कर लगाये. लेकिन कर्मचारियों से वोट लेने के बाद, सभी सत्ताधारी पार्टियों के नेता न सिर्फ उन्हें भूल गए हैं बल्कि उनके खिलाफ क़ानून बना रहे हैं. कर्मचारियों को पहले आम आदमी पार्टी की सरकार ने बेवक़ूफ़ बनाया और अब भाजपा की सरकार बना रही है. संसद में भाजपा सरकार द्वारा पास किये गए चारों 'श्रम कोड क़ानून' जब लागू हो जाएंगे तब सामान काम का समान वेतन और पक्का होने जैसी मांगों के लिए श्रम कानूनों में मौजूद सभी प्रावधान ख़त्म हो जाएंगे. फिक्स्ड टर्म एम्प्लॉयमेंट की नीति के चलते कॉन्ट्रैक्ट कर्मचारी, कानूनी लड़ाई में पीछे चले जाएंगे. मतलब यह कि जब समान वेतन या पक्का करने का क़ानून ही नहीं रहेगा तब हमारे लिए इन दोनों मांगों को उठाना काफी मुश्किल हो जाएगा. इसलिए हमें डीटीसी के निजीकरण के खिलाफ और कॉन्ट्रैक्ट कर्मचारियों के पक्का होने के संघर्ष में अत्यंत सावधान रहने की ज़रुरत है. **हमें ये कभी नहीं भूलना चाहिए कि हमारी ताकत हमारी एकता और संघर्ष में है, न कि किसी सत्ताधारी दल के नेता के पीछे-पीछे चलने में.**

डीटीसी बचाओ, दिल्ली बचाओ : जब दिल्ली की आम जनता प्रदूषण के चलते हाहाकार कर रही है, तब दिल्ली सरकार को डीटीसी की अपनी बसों की संख्या में बढ़ोतरी करनी चाहिए थी. लेकिन ऐसा नहीं करके 'हिंदुजा समूह' की कंपनी स्विच मोबिलिटी को बसें चलाने की अनुमति दी गयी है, ये वही हिंदुजा समूह है जिसके मालिकों पर अपने घरेलु कामगारों के श्रम अधिकारों के हनन का आरोप लगा था ! आज दिल्ली/केंद्र के विभिन्न सरकारी विभागों/उपक्रमों में लगे हुए कॉन्ट्रैक्ट कर्मचारी अपने अधिकारों के लिए एकजुट हो रहे हैं. हमें भी डीटीसी को निजी हाथों में जाने से बचाने के लिए, अपने पक्का होने और समान वेतन की मांगों के लिए - धर्म-जाति-भाषा इत्यादि पहचानों से ऊपर उठकर एक होना होगा. किसी सत्ताधारी पार्टी के नेताओं के वादों में नहीं आकर अपनी मांगों के लिए आन्दोलन खड़ा करना होगा, तभी हमें जीत मिल पाएगी. अंत में डीटीसी के सभी साथियों से निवेदन है कि 12 नवंबर 2025 से होने वाले गेट/डिपो मीटिंग में अवश्य हिस्सा लें.

आप सभी साथियों से अपील है कि मजदूर अधिकारों के संघर्ष को तेज़ करने के लिए हमसे ज़रूर संपर्क करें: संपर्क : 9818631301, 9871051400, 9999927300, 9212442168, 9718485767

डीटीसी वर्कर्स यूनिटी सेंटर (ऐक्टू)

TEMPLE OF LIBERALIZATION AND WELFARE ALLIED TRUST (REGD.) TOLWA

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत

पिंकी कुंडू महासचिव, का संदेश आज के माता-पिता के लिए

प्रिय माता-पिता,

आज के समय में बच्चों को शिक्षा और संस्कार दोनों की आवश्यकता है। केवल अंग्रेज़ी भाषा या आधुनिकता के पीछे भागना ही काफी नहीं है, बल्कि अपने भारतीय मूल्यों और संस्कारों को भी जीवित रखना ज़रूरी है।

- संतुलित शिक्षा – बच्चे को पढ़ाई के साथ-साथ धर्म, संस्कृति और मानवता की शिक्षा दें।
- भाषा और संस्कृति – अंग्रेज़ी सीखना अच्छी बात है, लेकिन हिंदी, संस्कृत और अपनी मातृभाषा को भी प्राथमिकता दें।
- संस्कारों का पालन – बच्चों को बड़े-बुज़ुर्गों के पैर छूना, प्रणाम करना, हवन-कुंड में आहुति देना और मंदिर जाने की आदत डालें।
- समय का सदुपयोग – बच्चों के साथ गुणवतापूर्ण समय बिताएं, उन्हें भावनात्मक सहारा दें, ताकि वे आपके लिए समय निकालें और आपकी भावनाओं को समझें।
- संस्कृति और आधुनिकता का समन्वय – आधुनिक जीवनशैली को अपनाएं, लेकिन अपनी संस्कृति को न भूलें।

नोट: संतान को दोष देने से पहले स्वयं का आकलन करें। हमने ही उन्हें केक काटना सिखाया, बाय-बाय करना सिखाया, लेकिन प्रणाम और आशीर्वाद देना भुला दिया। गलती हमारी है, संस्कारों की कमी नहीं। मानो तो ठीक, नहीं तो जीवन चलता रहेगा।

https://tolwa.com/about.html,

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत

पिंकी कुंडू महासचिव,

आस्तिक होना जीवन में अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि आस्था मनुष्य को कठिनाईयों में भी साहस प्रदान करती है जब हम परमात्मा में विश्वास रखते हैं तो हमें यह अनुभव होता है कि हमारे जीवन के उतार-चढ़ाव केवल क्षणिक मात्र हैं और अंत में सब ठीक होगा यही विश्वास हमारी चिंताओं को हल्का कर देता है और हृदय को शांति प्रदान करता है !

ईश्वर पर भरोसा और निष्ठा रखने वाला व्यक्ति हर परिस्थिति को धैर्य और समर्पण के साथ स्वीकार करता है आस्था से हमें यह सीख मिलती है कि जीवन का हर क्षण ईश्वर की योजना का अंश है हिस्सा है चाहे सुख आए या दुख, आस्तिक व्यक्ति संतुलित रहता है, क्योंकि उसे दृढ़ भरोसा होता है कि भगवान उसी की भलाई के लिए मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं !

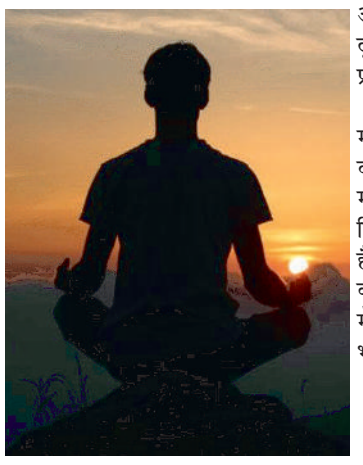

चिंताओं का बड़ा कारण है—अनिश्चितता और भय जब मनुष्य अपने दम पर सब हल ढूँढने की कोशिश करता है, तो वह थककर टूटने लगता है किन्तु ईश्वर में विश्वास रखने से मनुष्य का हृदय हल्का हो जाता है उसे यह आत्मशक्ति मिलती है कि परिस्थितियाँ चाहे जैसी भी हों, वह अकेला नहीं है, इसलिए कहा जा सकता है कि आस्तिकता न केवल धर्म का विषय है बल्कि जीवन जीने की सुंदर कला भी है भगवान में विश्वास ही वह शक्ति है जो मनुष्य को सच्ची शांति, भयमुक्त करके धैर्य और निडरता प्रदान करती है !

https://tolwa.com/about.html
tolwadelhi@gmail.com
tolwaindia@gmail.com

"टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत" सेवा ही संकल्प है!

पिंकी कुंडू, महासचिव टोलवा ट्रस्ट

हमारा मकसद सिर्फ मदद नहीं, बदलाव लाना है।

A voice for the voiceless, and a hand for the helpless.

हमारा उद्देश्य है समाज के उन हिस्सों तक पहुँचना जो आज भी भूख, शिक्षा और आर्थिक तंगी से जूझ रहे हैं। हम जरूरतमंदों को बिना भेदभाव के भोजन, बच्चों को मुफ़्त शिक्षा, और समाज को जागरूकता देने का कार्य कर रहे हैं।

क्या मिलेगा हमसे जुड़कर

Ground-level food distribution,

Getting children free education,

हम मानते हैं – छोटा कदम भी बड़ा बदलाव ला सकता है।

If you believe in humanity, equality, and service — then you're already a part of our family.

हमें सपोर्ट करें और एक आवाज़ बनें इस बदलाव की।

Together, let's serve. Together, let's change.

टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत से जुड़ने के लिए नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें और फार्म भरकर जुड़े,

www.tolwa.com/member.html

स्कैनर को स्कैन कर के भी आप टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत से फार्म भर कर जुड़ सकते हैं,

वेब साइट पर www.tolwa.com पर भी जाकर आप फार्म भर के टोलवा ट्रस्ट से जुड़ सकते हैं। www.tolwa.com

SCAN ME

टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत
tolwaindia@gmail.com
www.tolwa.com

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत

पिंकी कुंडू महासचिव

प्रिय साथियों,

समाज में बढ़ते अन्याय, शोषण, भेदभाव और भ्रष्टाचार के विरुद्ध अब एकजुट होकर आवाज़ उठाने का समय है।

इसी उद्देश्य से टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत) में समर्पित लोगों को जोड़ा जा रहा है।

क्यों जुड़ें:

1. समाज में सम्मानित पद के साथ मानव अधिकार रक्षक के रूप में पहचान।
2. जिला, तहसील व ब्लॉक स्तर पर पदनाम के साथ कार्य करने का अवसर।
3. प्रशासनिक व सामाजिक समन्वय के माध्यम से पीड़ितों को न्याय दिलाने में सहभागिता।
4. मानव अधिकार, महिला सुरक्षा, बाल अधिकार, पर्यावरण व जनहित विषयों पर प्रशिक्षण एवं प्रमाणपत्र।
5. सरकारी एवं गैर-सरकारी कार्यक्रमों में प्रतिनिधित्व का अवसर।

आप किन कार्यों में सक्रिय रह सकते हैं:

1. मानवाधिकार उल्लंघन मामलों की जांच व रिपोर्टिंग।
2. पुलिस, प्रशासन व आयोगों को आवेदन भेजना।
3. समाज में जनजागरण अभियान चलाना।
4. महिला उत्पीड़न, बालश्रम, भ्रष्टाचार, या भूमि विवादों में पीड़ितों की मदद करना।
5. शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण संरक्षण व जनसेवा गतिविधियों में भाग लेना।

किसे जुड़ना चाहिए:

1. सामाजिक कार्यकर्ता, शिक्षक, पत्रकार, वकील, छात्र, एवं वे सभी जो समाज में सकारात्मक बदलाव लाना चाहते हैं।

2. वर्तमान में कई जिलों में सक्रिय सदस्यों की आवश्यकता है।

3. आपका छोटा सा कदम समाज के बड़े परिवर्तन की शुरुआत हो सकता है।

पिंकी कुंडू महासचिव टोलवा ट्रस्ट
https://tolwa.com/about.html
tolwaindia@gmail.com
tolwadelhi@gmail.com

आइए, न्यायपूर्ण और मानवीय समाज के निर्माण में अपनी भूमिका निभाएँ!

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत

सपनों की उड़ान भरो, मंज़िल खुद बुलाएगी

TEMPLE OF LIBERALIZATION AND WELFARE ALLIED TRUST (REGD.) TOLWA

पिंकी कुंडू महासचिव,

जीवन में सफलता का मार्ग हमेशा आसान नहीं होता, लेकिन जो मन में दृढ़ संकल्प लेकर आगे बढ़ते हैं, उनके कदमों को मंज़िल स्वयं दिशा देती है।

सपनों की शक्ति वही समझ सकता है, जो चुनौतियों से घबराने के बजाय उन्हें अपने विकास का अवसर बनाता है।

सुबह का उगता सूर्य हमें यही संदेश देता है कि अंधकार चाहे जितना गहरा क्यों न हो, प्रकाश की किरणें रास्ता ढूंढ ही लेती हैं। ठीक उसी प्रकार, जब हम अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित रहते हैं, तो समय आने पर परिस्थितियाँ भी हमारे पक्ष में खड़ी हो जाती हैं।

सपनों की उड़ान भरने के लिए केवल इच्छाशक्ति ही नहीं, बल्कि साहस, अनुशासन और निरंतर प्रयास भी ज़रूरी है। जो व्यक्ति अपने जीवन के उद्देश्य को पहचानकर उसके लिए कार्य करता है, वह स्वयं ही प्रेरणा का स्रोत बन जाता है।

व्यक्ति के जीवन में यही संकल्प उसे नई ऊंचाइयों तक ले जाता है — और यही संदेश हम सबके लिए प्रेरणा है।

भारत रत्न एवं नोबेल पुरस्कार से सम्मानित महान भौतिकशास्त्री डॉ. सी. वी. रमन जी की पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि। 'रमन प्रभाव' की ऐतिहासिक खोज ने भारत को विश्व विज्ञान के केंद्र में स्थापित किया। ज्ञान, अनुसंधान और नवाचार के प्रति उनका समर्पण सदैव प्रेरणास्रोत रहेगा।

स्वास्थ्य विशेष

स्वास्थ्य आपका कोशिश हमारी

टूटते-झड़ते बालों में दोबारा जान भर सकती हैं आम की पत्तियां, बस जान लें कैसे करना होगा इस्तेमाल

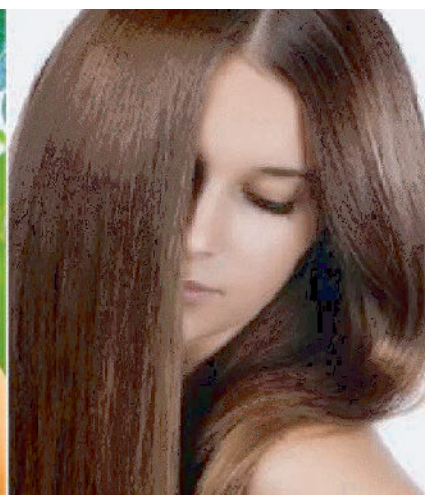

गली-मोहल्ले या किसी पार्क में आम का पेड़ आपको आसानी से लगा मिल जाएगा। क्या आप जानते हैं कि इसकी पत्तियां आपके बालों के लिए कितनी गुणकारी साबित हो सकती हैं? जी हां अगर आप भी इनके लाजवाब फायदों (Mango Leaves For Hair) से अनजान हैं तो यहां हम आपको बताने जा रहे हैं कि हेयर-केयर में इन्हें किस तरह शामिल करना बालों के लिए बहुत फायदेमंद हो सकता है।

क्या आपके बाल भी टूटते और झड़ते हैं? क्या आप भी अपने बेजान बालों में नई जान डालना चाहते हैं? अगर इन सवालों के जवाब हां में हैं, तो यह आर्टिकल आपको जरूर पढ़ना चाहिए है। दरअसल, यहां हम बात कर रहे हैं आम की पत्तियों (Mango Leaves) की! जी हां, ये सिर्फ फल देने वाला पेड़ नहीं है, बल्कि बालों की कई समस्याओं का शानदार समाधान भी हैं।

आपने शायद ही कभी सोचा होगा कि आम की पत्तियां भी हमारे बालों के लिए इतनी फायदेमंद हो सकती हैं। दरअसल, इनमें विटामिन ए, सी, बी और कई एंटीऑक्सीडेंट्स भरपूर मात्रा में पाए जाते हैं, जो बालों को मजबूत बनाने, उन्हें झड़ने से रोकने और उनमें चमक लाने में मदद करते हैं। आइए जानें।

कैसे करें आम की पत्तियों का इस्तेमाल? आम की पत्तियों का इस्तेमाल करना बेहद आसान है। यहां कुछ तरीके दिए गए हैं जिन्हें आप आजमा सकते हैं:

1. आम की पत्तियों का हेयर मास्क यह सबसे असरदार तरीकों में से एक है।

सामग्रीः

1. ताजी आम की पत्तियां (लगभग 10-15)
2. थोड़ा पानी
3. 1 चम्मच नारियल का तेल या जैतून का तेल

बनाने का तरीकाः

1. आम की पत्तियों को अच्छी तरह धो लें।
2. इन्हें थोड़ा पानी मिलाकर मिक्सर में पीस लें ताकि एक गाढ़ा पेस्ट बन जाए।
3. अगर आप चाहें तो इसमें नारियल का तेल या जैतून का तेल मिला सकते हैं।
4. इस पेस्ट को अपने बालों की जड़ों से लेकर सिरे तक अच्छी तरह लगाएं।
5. इसे 30-45 मिनट तक लगा रहने दें।
6. फिर हल्के शैम्पू से धो लें। बेहतर रिजल्ट्स के लिए इसे हफ्ते में 1-2 बार इस्तेमाल करें।

आम की पत्तियों का पानी यह बालों को साफ रखने और उन्हें पोषण देने का एक आसान तरीका है।

सामग्रीः

1. ताजी आम की पत्तियां (लगभग 15-20)
2. 2-3 कप पानी

बनाने का तरीकाः

1. एक बर्तन में पानी और आम की पत्तियां डालें।
2. पानी को तब तक उबालें जब तक पत्तियों का रंग बदलने न लगे और पानी थोड़ा कम न हो जाए।
3. पानी को ठंडा होने दें और फिर पत्तियों को छानकर अलग कर दें।
4. अपने बालों को शैम्पू करने के बाद, इस पानी से बालों को धो लें। इसे धोना नहीं है। यह आपके बालों को मजबूत बनाने और चमक देने में मदद करेगा। आम की पत्तियों का तेल

यह तरीका बालों को लंबे समय तक पोषण देने के लिए है।

सामग्रीः

1. आम की सूखी पत्तियां (या ताजी पत्तियां जिन्हें धूप में सुखा लिया गया हो)
2. नारियल का तेल या जैतून का तेल

बनाने का तरीकाः

1. आम की सूखी पत्तियों को छोटे टुकड़ों में तोड़ लें।
2. एक पैन में नारियल का तेल गरम करें और उसमें ये पत्तियां डाल दें।
3. धीमी आंच पर तब तक पकाएं जब तक पत्तियों का रंग काला न हो जाए और उनके पोषक तत्व तेल में मिल न जाएं।
4. तेल को ठंडा करें और छानकर एक बोतल में रख लें।
5. इस तेल से हफ्ते में 2-3 बार अपने बालों और स्कैल्प की मालिश करें।

बालों को बनाना है घना और मजबूत, तो हर हफ्ते बदल-बदलकर करें इन 3 Hair Oils का इस्तेमाल

हर कोई चाहता है कि उसके बाल घने मजबूत और शाइनी हो लेकिन आजकल की भागदौड़ भरी जिंदगी प्रदूषण और गलत खान-पान की वजह से बालों का झड़ना और पतला होना आम बात हो गई है। अगर आप भी इन्हें लेकर परेशान हैं तो घबराइए नहीं! आज हम आपको 3 ऐसे बेहतरीन Hair Oils के बारे में बताएंगे जो सचमुच बालों को हेल्दी और स्टॉन्ग बना सकते हैं।

क्या आपके बाल भी पतले होते जा रहे हैं? क्या कंघी करते ही गुच्छों में बाल टूटकर हाथ में आ जाते हैं? अगर इन सवालों के जवाब 'हां' में हैं, तो यह आर्टिकल आपके लिए ही है। दरअसल, स्ट्रेस, प्रदूषण और गलत लाइफस्टाइल की वजह से बालों का झड़ना और उनका बेजान दिखना एक आम समस्या बन गई है।

ऐसे में, क्या हो अगर हम आपसे कहें कि आपके बालों को फिर से घना और मजबूत (Strong Hair) बनाने का एक आसान और आजमाया हुआ तरीका है?

जी हां, आपने सही पढ़ा! आपको बस एक छोटा सा बदलाव करना है- अपने हेयर ऑयल को हर हफ्ते बदलना।

आइए यहां आपको बताते हैं कि किन हेयर ऑयल्स (Hair Strengthening Oils) का आपको हर हफ्ते बदल-बदलकर यूज करना होगा।

क्यों बदल-बदलकर ऑयलिंग करना है फायदेमंद? हर तेल में अलग-अलग पोषक तत्व होते हैं। एक ही तेल का लगातार इस्तेमाल करने से बालों को सारे जरूरी पोषक तत्व नहीं मिल पाते। ऐसे में, जब आप अलग-अलग तेलों का इस्तेमाल करते हैं, तो बालों को विटामिन, मिनरल्स और फैटी एसिड्स का पूरा पैकेज मिलता है, जो उनकी ग्रोथ और मजबूती के लिए बहुत जरूरी है।

1. नारियल का तेल (Coconut Oil)

नारियल का तेल बालों के लिए किसी वरदान से कम नहीं है। यह प्रोटीन के नुकसान को कम करने में मदद करता है और बालों को अंदर से पोषण देता है।

फायदेः

1. बालों को नमी देता है और रूखापन दूर करता है।
2. रूसी कम करने में मददगार।
3. बालों को टूटने से बचाता है।
4. बालों को चमकदार बनाता है।

कैसे इस्तेमाल करें: हफ्ते में एक बार, रात को सोने से पहले नारियल तेल को हल्का गर्म करके बालों की जड़ों से सिरे तक अच्छे से लगाएं। सुबह शैंपू कर लें।

2. जैतून का तेल (Olive Oil)

जैतून का तेल विटामिन ई, एंटीऑक्सीडेंट्स और हेल्दी फैट्स से भरपूर होता है, जो बालों को मजबूत बनाने और उनमें चमक लाने में मदद करते हैं।

फायदेः

1. बालों को मुलायम और चमकदार बनाता है।
2. दोमुंहे बालों की समस्या कम करता है।
3. बालों को अल्ट्रावॉयलेट किरणों से बचाता है।
4. स्कैल्प को हेल्दी रखता है।

कैसे इस्तेमाल करें: अगले हफ्ते, नारियल तेल की जगह जैतून के तेल का इस्तेमाल करें। इसे भी हल्का गर्म करके लगाएं और कम से कम 30 मिनट से 1 घंटे तक लगा रहने दें, फिर धो लें। रात भर रखना और भी अच्छा है।

3. बादाम का तेल (Almond Oil)

बादाम का तेल विटामिन ई, मैग्नीशियम और ओमेगा-3 फैटी एसिड्स का बेहतरीन स्रोत है, जो बालों की ग्रोथ को बढ़ावा देते हैं और उन्हें घना बनाने में मदद करते हैं।

फायदेः

1. बालों को तेजी से बढ़ने में मदद करता है।
2. बालों को घना और मजबूत बनाता है।
3. बालों का झड़ना कम करता है।
4. स्कैल्प को नमी देता है और खुजली दूर करता है।

कैसे इस्तेमाल करें: तीसरे हफ्ते में बादाम के तेल का नंबर आता है। इसे भी बाकी तेलों की तरह ही इस्तेमाल करें। आप चाहें तो इसमें थोड़ा-सा अरंडी का तेल (Castor oil) भी मिला सकते हैं, जो बालों को और घना बनाने में मदद करता है।

सरसों के तेल में पकाकर लगाएं ये 4 चार चीजें, बाल नेचुरली हो जाएंगे काले

प्रदूषण और तनाव के कारण बाल समय से पहले सफेद होने लगते हैं। ऐसे में बालों को काला और घना बनाने के लिए सरसों का तेल (Mustard Oil for Hair) एक बेहतरीन प्राकृतिक उपाय है। सरसों के तेल से बालों का टूटना-झड़ना कम होता है। सरसों के तेल के साथ कुछ चीजों को मिलाकर बालों को नेचुरलीकाला बनाया जा सकता है। बालों का काला और घना होना आपकी खूबसूरती पर चार चांद लगा सकता है। लेकिन आजकल प्रदूषण, तनाव और अनहेल्दी खान-पान के कारण बाल समय से पहले सफेद होने लगते हैं। ऐसे में केमिकल वाले हेयर डाई की जगह प्राकृतिक उपाय (Natural Remedies for Grey Hair) अपनाना ज्यादा बेहतर सकता है।

सरसों का तेल बालों के लिए एक बेहतरीन घरेलू उपचार है, जो न केवल बालों को काला बनाता है बल्कि उन्हें मजबूत और स्वस्थ भी रखता है। आइए जानते हैं सरसों तेल से बालों को कैसे काला और घना बना (Mustard Oil for Black Hair) सकते हैं।

1. सरसों तेल और कढ़ी पत्ता कढ़ी पत्ता बालों के लिए बहुत फायदेमंद होता है। यह बालों को काला करने के साथ-साथ रूसी और डैंड्रफ से भी छुटकारा दिलाता है। इसके लिए 2 चम्मच सरसों तेल को गर्म करें और इसमें एक मुट्ठी कढ़ी पत्ता डालकर हल्का भूरा होने तक गर्म करें और इसे ठंडा करके छान लें। इस तेल से बालों की जड़ों में हल्की मालिश करें और 1-2 घंटे बाद धो लें। हफ्ते में 2 बार इस्तेमाल करने से बाल काले और मजबूत होंगे।

2. सरसों तेल और मेहंदी मेहंदी बालों को प्राकृतिक रूप से काला करने में मदद करती है और सरसों तेल के साथ मिलाकर लगाने से बालों को पोषण भी मिलता है। इसके लिए एक कप मेहंदी पाउडर में थोड़ा पानी मिलाकर पेस्ट बना लें और इसमें 2 चम्मच सरसों तेल मिलाएं। इस पेस्ट को बालों पर लगाकर 2-3 घंटे के लिए छोड़ दें और फिर शैम्पू से धो लें। महीने में 2 बार इस उपाय को करने से बालों का सफेद होना कम होगा।

3. सरसों तेल और आंवला आंवला विटामिन-सी और एंटीऑक्सीडेंट्स से भरपूर होता है, जो बालों को काला बनाने और उनकी ग्रोथ के लिए बहुत अच्छा है। दो चम्मच सरसों तेल में एक चम्मच आंवला पाउडर मिलाएं और इसे हल्का गर्म करके बालों की जड़ों में लगाएं। फिर 30 मिनट बाद इसे धो लें। सप्ताह में 2 बार इसका इस्तेमाल करने से बालों का झड़ना कम होगा और रंग गहरा होगा।

4. सरसों तेल और प्याज प्याज का रस सल्फर से भरपूर होता है, जो बालों की जड़ों को मजबूत करता है और प्राकृतिक रंग को वापस लाने में मदद करता है। एक प्याज का रस निकालें और उसमें 2 चम्मच सरसों तेल मिलाएं। इस मिक्सचर को स्कैल्प पर लगाकर 30-40 मिनट के लिए छोड़ दें और फिर शैम्पू से धो लें। हफ्ते में 1-2 बार इसका इस्तेमाल करने से बालों का सफेद होना कम होगा।

रोज सुबह 15 दिनों तक खाली पेट पिएं मेथी का पानी, शरीर में दिखेंगे 7 कमाल के बदलाव

क्या आपको पता है अगर आप 15 दिनों तक रोज सुबह खाली पेट मेथी का पानी पिएंगे तो क्या होगा?

मेथी में कई ऐसे गुण मौजूद होते हैं, जो आपकी सेहत की काया पलट सकते हैं। इसलिए खाली पेट मेथी का पानी पीना सेहत के लिए फायदेमंद (Methi Water Benefits) साबित हो सकता है।

मेथी हमारी रसोई में इस्तेमाल होने वाला एक साधारण मसाला है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि यह आपकी सेहत के लिए कितना फायदेमंद हो सकता है? जी हां, मेथी में कई ऐसे गुण हैं, जो सेहत को बेहतर बनाते हैं। इसलिए रोज सुबह खाली पेट मेथी का पानी आपके शरीर में कई सुधार (Methi Water Health Benefits) ला सकता है।

अगर आप 15 दिनों तक लगातार सुबह खाली पेट मेथी का पानी पीना शुरू कर दें, तो आपको हैरान करने वाले बदलाव देखने को मिल सकते हैं। आइए जानें मेथी का पानी आपके शरीर पर क्या प्रभाव (Benefits of Drinking Methi Water) डाल सकता है।

1. पाचन तंत्र में सुधार मेथी का पानी फाइबर से भरपूर होता है, जो पाचन क्रिया को दुरुस्त करता है। यह कब्ज की समस्या को दूर करके पेट साफ रखता है। 15 दिनों में आपको पेट की जलन, एसिडिटी और गैस जैसी समस्याओं में कमी महसूस होगी। यह एक नेचुरल डिटॉक्स ड्रिंक की तरह काम करके आपके शरीर से टॉक्सिन्स को बाहर निकालता है।

2. वजन घटाने में सहायक यह उन लोगों के लिए फायदेमंद है, जो वजन कम करना चाहते हैं। मेथी में मौजूद फाइबर पेट को लंबे समय तक भरा हुआ महसूस कराता है, जिससे आपको बार-बार भूख नहीं लगती और कैलोरी इनटेक कम हो जाता है। साथ ही, यह मेटाबॉलिज्म को बूस्ट करके फैट बर्न करने की प्रक्रिया को तेज करता है।

3. ब्लड शुगर लेवल को नियंत्रित करना मेथी में सॉल्यूबल फाइबर की मौजूदगी शरीर में कार्बोहाइड्रेट और शुगर के अब्जॉर्प्शन को धीमा कर देता है। यह इंसुलिन सेंसिटिविटी को बेहतर बनाने में मदद करता है, जिससे टाइप-2 डायबिटीज के मरीजों को ब्लड शुगर लेवल को कंट्रोल करने में मदद मिलती है।

4. कोलेस्ट्रॉल कम करना मेथी का पानी शरीर में खराब कोलेस्ट्रॉल के स्तर को कम करने में मददगार साबित हो सकता है। यह आर्टरीज में प्लाक के जमाव को रोककर दिल को स्वस्थ रखता है और दिल की बीमारियों के खतरे को कम करता है।

5. त्वचा और बालों के लिए फायदेमंद मेथी में मौजूद एंटी-ऑक्सीडेंट और एंटी-इंफ्लेमेटरी गुण त्वचा को अंदर से साफ करते हैं। इससे मुंहासे, दाग-धब्बे और झुर्रियों की समस्या कम होती है। साथ ही, यह बालों के झड़ने की समस्या को रोकने और उन्हें मजबूत बनाने में भी कारगर है।

6. इम्यून सिस्टम को मजबूत बनाना मेथी विटामिन-सी, पोटैशियम और आयरन जैसे जरूरी पोषक तत्वों से भरपूर होती है। इसका पानी रोज पीने से शरीर की इम्युनिटी बढ़ती है, जिससे आप सर्दी-जुकाम और दूसरे इन्फेक्शन से बचे रहते हैं।

7. शरीर की सूजन कम करना मेथी में एंटी-इंफ्लेमेटरी गुण होते हैं, जो जोड़ों के दर्द और शरीर की अन्य सूजन को कम करने में मददगार साबित होते हैं।

पतले होते बालों के लिए रामबाण है मेथी का तेल, बेहतर रिजल्ट के लिए इस तरीके से करें इस्तेमाल

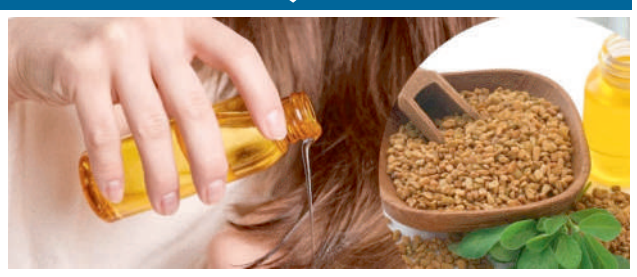

मेथी बालों के लिए काफी फायदेमंद होता है। इससे बना तेल बालों को मजबूत बनाता है और हेयर फॉल कम करने में मदद करता है। अगर आप भी बाल झड़ने से परेशान हैं, तो घर पर मेथी का तेल (Methi Oil for Hair Fall) बना सकते है। अगर आपके बाल भी काफी ज्यादा टूट रहे हैं या रुखड़े हो गए हैं, तो मेथी का तेल आपके बालों के लिए रामबाण साबित हो सकता है। मेथी बालों को मजबूत, घना और स्वस्थ बनाए रखने के लिए एक प्राकृतिक उपाय है (Methi Oil to Stop Hair Fall)। इसमें प्रोटीन, निकोटिनिक एसिड, लेसिथिन और आयरन जैसे पोषक तत्व पाए जाते हैं, जो बालों के झड़ने को रोकते हैं, उनकी ग्रोथ बढ़ाते हैं और स्कैल्प को मजबूत बनाते हैं। आइए जानें बालों को मजबूत और हेल्दी बनाए रखने के लिए मेथी का तेल कैसे बना सकते हैं और बेहतर परिणाम के लिए इसे कैसे इस्तेमाल करें।

1. मेथी का तेल कैसे बनाएं? मेथी का तेल बालों का झड़ना कम करता है। इसे लगाने से डैंड्रफ और खुजली से राहत देता है। मेथी बालों को नेचुरली काला और घना बनाता है। यह तेल स्कैल्प को हाइड्रेट भी करता है और रूसी को खत्म करता है।

सामग्रीः

1. 1 कप मेथी के दाने
2. 1 कप नारियल का तेल या सरसों का तेल

बनाने की विधिः

1. सबसे पहले मेथी के दानों को रातभर के लिए पानी में भिगोकर रख दें। इससे उनमें मौजूद पोषक तत्व आसानी से तेल में मिल जाएंगे।
2. अगले दिन भीगी हुई मेथी को पानी से निकालकर पीस लें और एक महीन पेस्ट तैयार कर लें।
3. एक पैन में नारियल या सरसों का तेल गर्म करें। तेल हल्का गुनगुना होने पर इसमें मेथी का पेस्ट डालें।
4. इसे लगभग 5-7 मिनट तक धीमी आंच पर पकाएं। जब तेल का रंग हल्का बदलने लगे और मेथी की खुशबू आने लगे, तो गैस बंद कर दें।
5. तेल को ठंडा होने दें, फिर एक साफ कपड़े या छलनी से छान लें। इस तेल को एक एयरटाइट शीशी में भरकर रखें। यह तेल 2-3 महीने तक चल सकता है।

मेथी के तेल को बालों पर लगाने का तरीका

1. सीधे तेल का इस्तेमाल
2. मेथी के तेल को हल्का गर्म करें और इसे स्कैल्प पर उंगलियों से मसाज करके लगाएं।
3. 30 मिनट से 1 घंटे तक लगा रहने दें, फिर माइल्ड शैम्पू से बाल धो लें।
4. मेथी तेल और दही का हेयर मास्क
5. 2 चम्मच मेथी का तेल और 2 चम्मच दही मिलाकर पेस्ट बना लें।
6. इसे बालों और स्कैल्प पर लगाकर 30 मिनट बाद धो लें। यह मास्क बालों को सॉफ्ट और शाइनी बनाता है।

मेथी तेल और एलोवेरा जेल मेथी के तेल में एलोवेरा जेल मिलाकर लगाने से बालों की जड़ें मजबूत होती हैं और डैंड्रफ दूर होता है।

उलझे बालों को सुलझाने में अब नहीं होगी परेशानी, यहां बताए 5 टिप्स करेंगे आपका काम आसान

उलझे बालों को सुलझाना क्या आपको भी मिशन इम्पॉसिबल जैसा लगता है? अगर हां तो यह आर्टिकल आपको जरूर पढ़ना चाहिए। यहां दिए टिप्स अपनाने से आप आसानी से उलझे बालों को सुलझा पाएंगे और इनके टूटने का डर भी नहीं रहेगा। जी हां यहां हम कुछ ऐसे टिप्स लेकर आए हैं जो बालों को सुलझाने के साथ इनमें नई जान भी फूंक देंगे। उलझे और रुखड़े बाल न केवल देखने में खराब लगते हैं, बल्कि उन्हें सुलझाते समय बाल टूटने का डर भी रहता है, लेकिन अब आपको चिंता करने की जरूरत नहीं है, क्योंकि हम आपके लिए लाए हैं 5 ऐसे कमाल के टिप्स (Hair Detangling Tips), जो आपके उलझे बालों को आसानी से सुलझाने में मदद करेंगे और आपके बालों को देंगे नई जान।

1. सही कंडीशनर है बेहद जरूरी बालों को धोने के बाद कंडीशनर का इस्तेमाल कभी न भूलें। एक अच्छा कंडीशनर आपके बालों को मुलायम बनाता है और उन्हें उलझने से रोकता है। कंडीशनर को बालों के बीच से सिरे तक लगाएं, जड़ों पर लगाने से बचें। इसे कुछ मिनटों के लिए छोड़ दें और फिर अच्छी तरह धो लें।
2. चौड़े दांत वाली कंघी का करें प्रयोग जब भी आपके बाल उलझे हों, तो चौड़े दांत वाली कंघी का ही इस्तेमाल करें। बारीक कंघी से बाल ज्यादा टूटते हैं। बालों को धीरे-धीरे नीचे से ऊपर की ओर सुलझाना शुरू करें। पहले सिरों को सुलझाएं, फिर बीच के हिस्से को और आखिर में जड़ों से सुलझाएं।
3. बाल सुखाने का सही तरीका बालों को धोने के बाद उन्हें तौलिये से रगड़ कर न सुखाएं। ऐसा करने से बाल और ज्यादा उलझते हैं। बालों को धीरे-धीरे तौलिये से दबाकर सुखाएं या फिर माइक्रोफाइबर तौलिये का इस्तेमाल करें। हो सके तो बालों को प्राकृतिक रूप से हवा में सूखने दें।
4. हेयर सीरम या लीव-इन कंडीशनर का यूज़ बालों को सुलझाने के बाद, उन पर थोड़ा सा हेयर सीरम या लीव-इन कंडीशनर लगाएं। ये आपके बालों को चमकदार बनाते हैं और उन्हें दोबारा उलझने से रोकते हैं। खासकर अगर आपके बाल घुंघराले या बहुत रुखड़े हैं, तो यह टिप आपके लिए बहुत फायदेमंद है।
5. रात में बालों का रखें खास ख्याल रात में सोते समय बाल अक्सर उलझ जाते हैं। इससे बचने के लिए आप अपने बालों को ढीली चोटी में बांधकर सोएं या फिर सिल्क या सैटिन के तकिए का कवर इस्तेमाल करें। ये आपके बालों को रगड़ से बचाते हैं और उन्हें कम उलझने देते हैं।

सुबह धनिया पानी पीते ही शरीर से बाहर निकल जाती हैं सारी गंदगी, पिघल जाती है पेट की चर्बी

धनिया केवल मसाला ही नहीं, बल्कि सेहत का खजाना भी है। ऐसे में सुबह खाली पेट धनिया पानी पीना शरीर को अंदर से डिटॉक्स करता है और कई बीमारियों से बचाव करता है। यह न सिर्फ पाचन को बेहतर बनाता है, बल्कि वजन घटाने, ब्लड शुगर कंट्रोल करने स्किन ग्लो बनाए रखने, पीरियड्स पेन में राहत, इम्यूनिटी बूस्ट, किडनी डिटॉक्स और बालों के झड़ने की समस्या में भी फायदेमंद है। रोजाना इसका सेवन करने से बॉडी और स्किन दोनों हेल्दी बने रहते हैं।

धनिया किचन में डेली इस्तेमाल होने वाला मसाला है, लेकिन क्या आप जानते हैं कि इसके बीजों से बना पानी आपके स्वास्थ्य के लिए किसी औषधि से कम नहीं है? जी हां, इसे एक पावरफुल डिटॉक्सिफायर माना गया है।

अगर आप डेली सुबह खाली पेट धनिया पानी का सेवन करते हैं, तो यह कई तरह की हेल्थ प्रॉब्लम्स से छुटकारा दिलाने में मदद करता है। यह न केवल शरीर को अंदर से शुद्ध करता है, बल्कि वजन कम करने, पाचन सुधारने और स्किन व बालों को हेल्दी बनाए रखने में भी कारगर है। तो आइए जानते हैं इसके कुछ चमत्कारी फायदों के बारे में-

1. पाचन क्रिया को दुरुस्त करता है धनिया में डाइजेस्टिव एंजाइम्स को एक्टिव करने की क्षमता होती है। यह एसिडिटी, गैस, अपच और पेट फूलने जैसी प्रॉब्लम्स से राहत देता है। सुबह खाली पेट पीने से पेट हल्का और दिनभर एनर्जेटिक महसूस होता है।
2. पेट लॉस करने में सहायक धनिया पानी मेटाबॉलिज्म को बढ़ाता है और शरीर में फैट के जमाव को रोकता है। साथ ही यह शरीर से टॉक्सिन्स निकालकर वॉटर रिटेंशन कम करता है, जिससे पेट लॉस प्रोसेस तेज से होती है।
3. ब्लड शुगर को कंट्रोल करता है धनिया बीज में मौजूद बायोएक्टिव कंपाउंड्स इंसुलिन एक्टिविटी को बेहतर बनाते हैं। डायबिटीज के मरीजों के लिए यह एक नेचुरल उपाय हो सकता है, लेकिन सेवन से पहले डॉक्टर की सलाह जरूरी है।
4. डिटॉक्सिफिकेशन में मददगार धनिया पानी लिवर और किडनी को साफ करने में सहायक है। यह शरीर से हानिकारक तत्वों को बाहर निकालता है और शरीर को डिटॉक्स करता है।
5. स्किन को निखारे और पिंपल्स कम करे धनिया के एंटीऑक्सीडेंट तत्व स्किन से फ्री रेडिकल्स हटाते हैं और स्किन को ग्लोइंग बनाते हैं। नियमित सेवन से पिंपल्स और दाग-धब्बों की समस्या में भी राहत मिलती है।
6. महिलाओं के लिए फायदेमंद धनिया में एंटी-इंफ्लेमेटरी गुण होते हैं जो पीरियड्स के दौरान पेट दर्द और ऐंठन को कम करते हैं। यह हार्मोनल संतुलन बनाए रखने में भी मदद करता है।
7. इम्युनिटी को बढ़ाता है धनिया पानी विटामिन-सी, पोटेशियम और आयरन का अच्छा स्रोत है, जो शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत बनाता है।
8. बालों के लिए लाभकारी इसका सेवन बालों की जड़ों को पोषण देता है, बालों का झड़ना रोकता है और स्कैल्प को हेल्दी बनाता है।

बनाने का तरीका रात में 1 चम्मच साबुत धनिया एक गिलास पानी में भिगो दें। सुबह इसे उबालकर छानकर और इसमें थोड़ा नींबू मिलाकर खाली पेट पी लें। डेली इसका सेवन करने से कुछ ही हफ्तों में फर्क नजर आने लगेगा।

पर्यावरण पाठशाला : पेड़ों को विज्ञापन का स्टैंड न समझें

— डॉ. अंकुर शरण

आज के समय में जब हर ओर विकास और विस्तार की दौड़ लगी है, पेड़ हमारे सबसे शांत, सबसे सहनशील और सबसे उपयोगी साथी बनकर खड़े हैं। लेकिन दुख की बात है कि हम अक्सर उनके अस्तित्व और उनके दर्द को समझ ही नहीं पाते।

कई लोग अपने छोटे-मोटे विज्ञापन, पोस्टर या दिशा-निर्देश लगाने के लिए पेड़ों पर कील ठोक देते हैं। यह काम देखने में भले साधारण लगे, लेकिन इसके दुष्परिणाम बेहद गंभीर होते हैं।

पेड़ों पर कील ठोकना क्यों गलत है?

जब पेड़ों की छाल में कील ठोकी जाती है, तो वह भाग पेड़ की त्वचा की तरह खुल जाता है।

इस घाव से पेड़ों में फंगस, बैक्टीरिया और कीट आसानी से प्रवेश कर जाते हैं।

कई बार यह संक्रमण धीरे-धीरे पेड़ को कमजोर कर देता है और अंत में उसकी मृत्यु तक हो जाती है।

पेड़ अपने घाव को भरने की कोशिश करते हैं, मगर लंबी कीलें, कमजोर तनों में लगे बोर्ड, टेप और तार उनके लिए बेहद हानिकारक होते हैं।

क्या यह कानूनी अपराध भी है?

जी हां। वन अधिनियम और नगर निगम के नियमों के अनुसार

पेड़ों पर कील ठोकना, उन्हें नुकसान पहुँचाना, छाल काटना या किसी भी रूप में क्षति पहुंचाना दंडनीय अपराध है।

इस पर जुर्माना और कई जगह कानूनी कार्रवाई भी की जा सकती है।

हमारी जिम्मेदारी

अपने आसपास ऐसे मामलों को देखें तो लोगों को जानकारी दें।

किसी संगठन, कार्यक्रम या दुकान के प्रचार के लिए पेड़ नहीं, उचित होर्डिंग या नोटिस बोर्ड का इस्तेमाल करें।

RWAs, दुकानदारों और युवाओं को पेड़-सुरक्षा के नियमों से अवगत कराएँ।

स्कूलों और कॉलोनियों में पेड़ सुरक्षा जागरूकता अभियान चलाएँ।

पेड़ हमें क्या देते हैं?

हम सब जानते हैं—

स्वच्छ हवा, छाँव, पक्षियों का घर, मिट्टी की सुरक्षा, बारिश का संतुलन, और जीवन जीने की ऊर्जा।

वे हमें इतना कुछ देते हैं... तो क्या हम थोड़ी सी संवेदनशीलता नहीं दिखा सकते?

एक विनम्र संदेश

पेड़ हमारी प्रकृति का आधार हैं।

उन्हें घाव देने से पहले एक क्षण रुककर सोचें—

"क्या मेरा यह छोटा सा विज्ञापन किसी जीवन को तकलीफ़ दे सकता है?"

पर्यावरण पाठशाला आप सब से अनुरोध करती है:

पेड़ों को काटें नहीं, चोट न पहुँचाएँ, और उन्हें विज्ञापन का स्टैंड कभी न समझें।

प्रकृति बचेगी तो हम बचेंगे।

indiangreenbuddy@gmail.com

दिल्ली का हर नागरिक जहरीली हवा में जीने को मजबूर है: भास्कर

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली: दिल्ली में बढ़ते प्रदूषण ने आम जनता का जीना दूभर कर दिया है। रेज़िडेंट वेलफेयर एसोसिएशन आई एवं जे ब्लॉक जहांगीर पुरी के अध्यक्ष एम.एल. भास्कर ने कहा कि दिल्ली सरकार का तथाकथित "प्रदूषण नियंत्रण अभियान" पूरी तरह विफल साबित हो रहा है, जिसके कारण राजधानी दुनिया के सबसे प्रदूषित शहरों की सूची में शीर्ष स्थान पर पहुँच चुकी है। एम.एल. भास्कर ने कहा कि दिल्ली की सत्ताधारी भाजपा सरकार सिर्फ़ आरोप-प्रत्यारोप की राजनीति में उलझी हुई है, जबकि प्रदूषण नियंत्रण के लिए कोई ठोस व प्रभावी कदम ज़मीन पर नज़र नहीं आते। सरकार बड़े-बड़े दावे करती रही, परंतु परिणाम शून्य हैं। उन्होंने कहा कि दिल्ली में वायु प्रदूषण गंभीर स्तर पर पहुँचने के बावजूद प्रदूषण-रोधी योजनाएँ सिर्फ़ कागज़ों पर चल रही हैं। सांस और फेफड़ों के मरीजों की संख्या लगातार बढ़ रही है। अस्पतालों में भीड़ रोज़ नया रिकॉर्ड बना रही है। कृत्रिम बारिश जैसे खोखले दावे करने वाली सरकार अपने मौजूदा संसाधनों का भी सही उपयोग नहीं कर पाई। एम.एल. भास्कर ने कहा कि स्थिति यह है कि दिल्ली का हर नागरिक जहरीली हवा में जीने को मजबूर है, लेकिन सरकार के पास न नीति दिखती है, न इच्छाशक्ति। यदि तुरंत प्रभावी कदम नहीं उठाए गए तो आने वाला समय और भयावह होगा।

संघर्ष से सिद्धि तक: डॉ. प्रियंका सौरभ की प्रेरक यात्रा

डॉ. प्रियंका सौरभ का संघर्ष: मौन में लिखी गई कहानी

(अब तक दस पुस्तकों का लेखन, स्नातक की पढ़ाई के दौरान विवाह, सीमित संसाधन, गाँव की पृष्ठभूमि और सामाजिक अपेक्षाओं के बीच प्रियंका ने हार नहीं मानी। माँ बनीं, गृहिणी बनीं, लेकिन कलम नहीं छोड़ी। पढ़ाई जारी रखी — डबल एम.ए., एम.फिल और अब पीएच.डी। पाँचवीं बार सरकारी नौकरी प्राप्त की और हरियाणा शिक्षा विभाग में प्रवक्ता बनीं। घर, बच्चों, स्कूल और समाज के बीच लेखन को जिया, रातों की नींद और सामाजिक चुप्पियों को पन्नों पर उतारा। उनका संघर्ष शोर नहीं करता, लेकिन हर शब्द में एक संघर्षशील स्त्री की अनकही शक्ति बोलती है।)

हर युग में कुछ आवाज़ें होती हैं जो भाषण नहीं देतीं, आंदोलन नहीं चलातीं, बस चुपचाप लिखती हैं — और फिर भी इतिहास को मोड़ देती हैं। प्रियंका सौरभ ऐसी ही एक सृजनशील शक्ति हैं, जिन्होंने न पगड़ी पहनी, न पताका उठाई — लेकिन उनकी कलम ने वो कर दिखाया, जो कई क्रांतियाँ भी न कर सकीं।

हरियाणा के हिसार ज़िले के आर्य नगर गाँव से शुरू हुआ प्रियंका का सफर आज वैश्विक मंच तक गूंज रहा है। स्नातक के समय ही विवाह हो गया, पर जीवन की रफ्तार रुकी नहीं। राजनीति विज्ञान में डबल एम.ए. और एम.फिल करने के बाद वे शिक्षा विभाग में प्रवक्ता बनीं। पाँचवीं सरकारी नौकरी, और अब पीएच.डी की शोध यात्रा — उनका जीवन लेखन और शिक्षा का संगम बन गया।

2020 की वैश्विक महामारी जहाँ

ठहराव बनी, प्रियंका के लिए वह 'समय की रेत पर' लिखने का समय बन गई। इसी शीर्षक से उनका निबंध संग्रह सामने आया, जिसमें उन्होंने समाज, मन, और मनुष्यता के बीच के झंझावातों को दर्ज किया।

डॉ. प्रियंका सौरभ का साहित्यिक संसार विषय-विविधता और संवेदनात्मक गहराई का अद्भुत समन्वय प्रस्तुत करता है। उनके काव्य संग्रहों में "दीमक लगे गुलाब" खोखले होते रिश्तों और संवेदनहीन समाज पर तीखा प्रहार करता है, जबकि "चूल्हे से चाँद तक" स्त्री-अनुभवों, सीमाओं और आकांक्षाओं की रचनात्मक पड़ताल करता है। "मौन की मुस्कान" चुप्पियों में छिपी व्यथाओं और मुस्कानों के भीतर की चीख को सजीवता से उभारता है। बच्चों के लिए लिखे गए बाल काव्य संग्रह "परियों से संवाद" में कल्पनाओं की उड़ान है, तो "बच्चों की दुनिया" बालमन की मासूम भावनाओं, प्रकृति-प्रेम और नैतिक मूल्यों से ओतप्रोत है। उनके हिन्दी निबंध संग्रह "समय की रेत पर" में सामाजिक बदलाव, स्त्री-विमर्श और समकालीन मुद्दों पर विचारोत्तेजक लेखन मिलता है, जबकि "निर्भयें" साहस, संघर्ष और आत्मसम्मान से जुड़ी विविध स्त्री कथाओं का सशक्त दस्तावेज है। अंग्रेज़ी में रचित निबंध संग्रह "Fearless" भारतीय स्त्री-जीवन, ग्रामीण संदर्भ और आंतरिक शक्ति की प्रभावशाली व्याख्या प्रस्तुत करता है। अंत में, लघुकथा संग्रह "आँचल की चुप्पी" स्त्री-मन के अनकहे संवादों और सूक्ष्म विद्रोहों को मार्मिक रूप से सामने लाता है। उनका नया काव्य/निबंधनुमा संग्रह "खिड़की से झांकती ज़िंदगी" रोज़मर्रा के अनुभवों, जीवन की छोटी-बड़ी हलचलों और मानवीय संवेदनाओं को खिड़की की प्रतीकात्मक दृष्टि से देखने का सुंदर प्रयास प्रस्तुत करता है।

प्रियंका सौरभ की नौ पुस्तकें उनके साहित्यिक विस्तार और सरोकारों का प्रमाण हैं — दीमक लगे गुलाब, चूल्हे से चाँद तक, मौन की मुस्कान (काव्य संग्रह), परियों से संवाद, बच्चों की दुनिया (बाल साहित्य), समय की रेत पर, निर्भयें (हिंदी निबंध संग्रह), Fearless (अंग्रेज़ी निबंध संग्रह) और आंचल की चुप्पी (लघुकथा संग्रह)। इनमें हर किताब किसी एक अनकही संवेदना या हाशिए पर छूटे हुए समाज की वाणी बनती है।

उनका लेखन कोई घोषणापत्र नहीं, आत्मा का जल है। वे उन विषयों को उठाती हैं जिनसे समाज अक्सर आँखें चुराता है — दिव्यांग बच्चों की पीड़ा, बुज़ुर्गों की उपेक्षा, शिक्षकों का मानसिक बोझ, स्त्रियों की चुप्पियाँ। वह स्त्री विमर्श को नारे में नहीं, संवेदना में ढालती हैं। उनकी कविताएं और लघुकथाएं पाठकों को झकझोरती नहीं, बल्कि सोच की ज़मीन को उपजाऊ बनाती हैं।

संघर्ष से सिद्धि तक (एक प्रेरक झलक)

शुरुआत: स्नातक की छात्रा के रूप में विवाह

पढ़ाई: राजनीति विज्ञान में डबल M.A. और M.Phil

रोजगार: पाँचवीं सरकारी नौकरी — प्रवक्ता, हरियाणा शिक्षा विभाग

वर्तमान: पीएच.डी शोधार्थी, लेखिका, स्तंभकार

साहित्यिक योगदान: 9 पुस्तकें, 10,000+ लेख, वैश्विक मंचों पर लेखन

सम्मान: IPS मानव पुरस्कार, नारी रत्न, सुपर वुमन अवार्ड, अंतरराष्ट्रीय डॉक्टरेट्स

>संघर्ष केवल बाधा नहीं, सीढ़ी भी हो सकता है — प्रियंका की यात्रा इसका प्रमाण है।र उनका साहित्य कोई ब्रांड नहीं, विचार का बीज है। सम्मान और पुरस्कार उनके पीछे आए।

> मैंने अपने हिस्से का आकाश नहीं माँगा,
मैंने बस इतना चाहा —
कि जो ज़मीन मेरी सोच को उगने दे,
वो बंजर न हो।

— प्रियंका सौरभ

जब दुनिया शोर में खो रही है, प्रियंका मौन में रच रही हैं। जब साहित्य बाजार में बिक रहा है, प्रियंका विचारों के खेत में बुन रही हैं। जब लेखक ट्रेंड बनने की होड़ में हैं, प्रियंका चेतना की दिशा तय कर रही हैं। उन्होंने यह सिद्ध किया है कि साहित्य में आज भी वह ताक़त है — जो बग़ैर भाषण के, सिर्फ़ सच्चे शब्दों से दुनिया बदल सकता है।

यह लेख उन सभी के लिए है जो मानते हैं कि लेखन केवल छपना नहीं होता — वह समाज की नसों में उतरकर कुछ नया रच सकता है। प्रियंका सौरभ उसी मौन क्रांति की प्रतीक हैं — धीरे, लेकिन गहराई से असर करने वाली।

शीत ऋतु काल

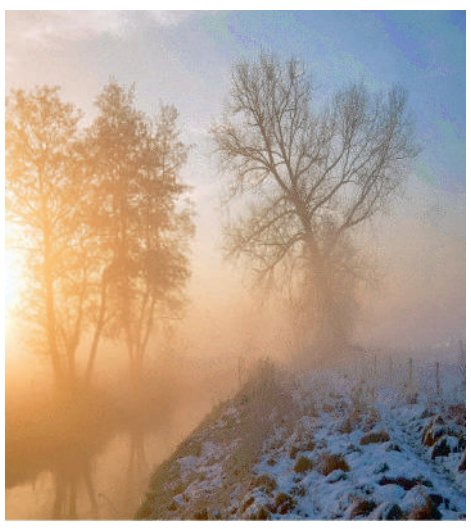

विदा कर बरखा रानी को शरद ऋतु ने रंग जमाया,
सुबह और शाम चारों ओर घना श्वेत कोहरा है छाया,
दिन हुए छोटे लम्बी हुई अब रातें ये शीत ऋतु काल,
ठंडी-ठंडी ठिठुरन भरी हवाओं से तन-मन कपकपाया ।

वृक्षों ने बड़ी ही धैर्यता से शुष्कता को है अपनाया,
कुछ सूखे पत्तों ने चुपके से धरती को गले है लगाया,
तपतपाती स्वर्णिम रश्मि रथियों ने मद्धिम की हैं चाल,
ओस की टिमटिमाती बूँदों ने हर मन को है रिझाया ।

हरसिंगार के फूलों ने वसुंधरा को है अनुपम सजाया,
पुष्पों के इर्द-गिर्द डोल भौरों ने प्रेम गीत गुनगुनाया,
फुर-फुर धुआँ मुँह से निकले और गुलाबी हुए है गाल,
अंगीठी पर जलते अलाव से तन-मन ने सुकून पाया ।

पर्वतों ने ओढ़ी हिम चादर रवि किरणों ने सौंदर्य बढ़ाया,
प्रकृति ने सौम्यता व 'आनंद' का भाव भीतर जगाया,
तन पर सजे स्वेटर, मफलर, जैकेट, कनटोप और शॉल,
कंपकंपाते हाथ पैर रजाईं में दुबकने का मौसम आया ।

खान-पान के शौक़ लजीज व्यंजन जाड़ा संग है लाया,
हरी सब्जियों, फलों और सूखे मेवों में अमृत हैं समाया,
योग, ध्यान,व्यायाम से मिले ताज़गी स्फूर्ति बेमिसाल,
तन-मन को आरोग्यवान शक्तिशाली हमने है बनाया ।

– मोनिका डागा 'आनंद', चेन्नई, तमिलनाडु

कानपुर के मिल में चार युवा मजदूरों की दम घुटने से मौत : ठंड से बचने के लिए अंगीठी जलाकर सोए थे

सुनील बाजपेई

कानपुर। मौत आती है तो इंसान को किसी ने किसी बहाने से अपने साथ ले ही जाती है। कुछ ऐसा ही हुआ चार युवा मजदूर के साथ। उनकी ठंड से बचने के चक्कर में मौत हो गई। चारों कोयले की अंगीठी जलाकर सोए हुए थे। पुलिस का दावा है कि मौत की वजह धुएं से दम घुटने है। घटना की सही वजह जानने के लिए पुलिस ने उनके परिजनों को सूचित करने के साथ ही पोस्टमार्टम के लिए शवों को भी भेज दिया है।

यह घटना बीती सुक्रवार की रात पनकी थाना क्षेत्र के इंडस्ट्रियल एरिया साइट-2 में स्थित एक ऑयल सीड मील में हुई। मौके पर पहुंची पुलिस ने बताया कि यहां पर ठंड से बचने के लिए कमरे के अंदर कोयला जलाकर सो रहे चार मजदूरों की कार्बन मोनोऑक्साइड गैस से दम घुटकर मौत हो गई। सुबह साथियों ने दरवाजा खोला तो अंदर का दृश्य देखकर उनके पैरों तले जमीन खिसक गई।

पुलिस से जानकारी के मुताबिक, मील में कुल सात कर्मचारी काम करते थे। देर रात खाना खाने के बाद चार युवक—अमित वर्मा (32), राहुल सिंह (23), संजू सिंह (22) और दाऊद अंसारी (28)—कमरे में ही रुक गए। उन्होंने अंदर से दरवाजा बंद कर ठंड दूर करने के लिए कोयला जला लिया। कमरे में वेंटिलेशन का कोई इंतजाम नहीं था। कोयला जलने से धीरे-धीरे कार्बन मोनोऑक्साइड गैस भरती गई और चारों युवक नींद में ही दम तोड़ बैठे। वहीं पुलिस आयुक्त रघुबीर लाल ने बताया कि फेब्रिकेटर का काम करने वाले सभी मृतक देवरिया जिले के तरकुलवा क्षेत्र के रहने वाले थे।

इस घटना की जानकारी तब हुई जब सुबह करीब छह बजे जब उनके साथी कमरे के बाहर पहुंचे तो काफी देर आवाज देने के बाद भी कोई प्रतिक्रिया नहीं मिली। किसी तरह दरवाजा खुलवाने पर अंदर चारों को मृत अवस्था में देख चीख-पुकार मच गई। घटना की सूचना पर पुलिस और फॉरेंसिक टीम मौके पर पहुंची। टीम ने कमरे की बारीकी से जांच की और सैंपल जुटाए। पुलिस ने बताया कि मौत का कारण जहरीली गैस ही प्रतीत हो रहा है। घटना की जांच की जा रही है।

ग़ज़ल

ऐ मेरे 'मेहबूब' मुझे सिर्फ इतना बताते जाना,
क्या? फिर होगा तेरा मेरी 'गलियों' में आना।

तकता रहूँगा राह मिट नहीं सकती तेरी चाह,
मिलने के मिला करेंगे अवसर भरता हूँ आह।

कभी तो आएगी 'मेरी याद' कभी पड़ेंगे पाँव,
जब बैठेंगे हम साथ पड़ेगी धूप मिलेगी छांव।

जुल्फों को लहराकर आना 'दूर' हमें हैं जाना,
मुझे देखना है तुम्हें बस होले-होले मुस्कुराना।

अब कभी पलकें उठाकर कहीं छुप न जाना,
सर उठाकर आना देखें चाहे ज़ालिम जमाना।

संजय एम तराणेकर
(कवि, लेखक व समीक्षक)

बीजेपी मुख्यालय में भारतीय जनता मजदूर संघ के शीर्ष नेताओं की अहम मुलाकात

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। भारतीय जनता मजदूर संघ के राष्ट्रीय महासचिव एवं दिल्ली प्रदेश प्रभारी श्री चरण सिंह जी और राष्ट्रीय सचिव (सोशल मीडिया) श्री रोशन कुमार जी ने आज भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय सचिव डॉ. नरेंद्र सिंह जी से बीजेपी राष्ट्रीय कार्यालय में महत्वपूर्ण सौजन्य भेंट की। बैठक में श्रमिक हितों, दिल्ली प्रदेश में संगठन विस्तार, तथा सोशल मीडिया नेटवर्क को मजबूत करने पर विस्तृत चर्चा हुई। नेताओं ने संगठन को जमीनी स्तर पर और अधिक सशक्त बनाने तथा मजदूर कल्याण को प्राथमिकता देते हुए आगे की संयुक्त कार्ययोजना तैयार करने पर सहमति जताई। इस भेंट को दोनों संगठनों के बीच भविष्य के रणनीतिक सहयोग की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है।

भातखंडे संगीत महाविद्यालय की हीरक जयंती: तीन दिवसीय भव्य संगीतमय उत्सव का सफल आयोजन

लखीराम ऑडिटोरियम मे देश–विदेश के कलाकारों ने बांधा समा

सुनील चिंचोलकर

बिलासपुर,छत्तीसगढ़। भातखंडे संगीत महाविद्यालय की 75वीं हीरक जयंती के अवसर पर लखीराम ऑडिटोरियम में तीन दिवसीय भव्य संगीतमय उत्सव का आयोजन किया गया। इस अवसर पर देशभर से आए कलाकारों ने शास्त्रीय संगीत की अनूठी प्रस्तुतियों से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया।

पहला दिन — : भव्य उद्घाटन और मनमोहक प्रस्तुतियाँ

समारोह का उद्घाटन इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. (डॉ.) लवली शर्मा ने किया। साथ में अटल श्रीवास्तव (विधायक, कोटा) एवं सुशील पटेरिया बेडारे (अध्यक्ष) उपस्थित रहे। इस दिन के संगीतानुष्ठान में अथर्व भालेराव (नागपुर) एवं अनिल देशपांडे ने गायन व तबला वादन प्रस्तुत किया। साथ ही स्थानीय कलाकार राजेश मोडेकर (तबला) व निलय साठवी (हारमोनियम) ने संगत दी।

दूसरा दिन — : उत्कृष्ट गायन से मंत्रमुग्ध हुए श्रोता

द्वितीय दिवस में मुख्य अतिथि के रूप में अमर अग्रवाल (विधायक, बिलासपुर), व्ही. के. सारस्वत (कुलपति, सुंदरलाल मुक्त विश्वविद्यालय) तथा पूजा विधानी (महापौर, नगर निगम बिलासपुर) उपस्थित रहे।

इस दिन अत्री कोटल ने अपने अद्भुत एवं सधे हुए गायन से सभी श्रोताओं का मन जीत लिया। संगत में निलय साळवी (हारमोनियम) तथा मुंबई से पधारे देवेंद्र श्रीवास (तबला) शामिल रहे।

तीसरा दिन — : समापन समारोह में शास्त्रीय संगीत की सुरमयी छटा

अंतिम दिवस के मुख्य अतिथि थे —

प्रो. ए. डी. एन. वाजपेयी (कुलपति, बिलासपुर विश्वविद्यालय) डॉ. प्रदीप कुमार (कुलपति, सी. व्ही. रामन विश्वविद्यालय) तथा सुप्रसिद्ध गैस्ट्रोएंटेरोलॉजिस्ट डॉ. देवेंद्र सिंह।

मुंबई में निवासरत बिलासपुर के युवा कलाकार यशवंत वैष्णव ने अपने तबला वादन से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। इसके साथ ही मुंबई से आए आदित्य मोडक ने शास्त्रीय गायन की मनभावन प्रस्तुति दी।

संगठन व उपस्थिति

तीनों दिन कार्यक्रम में स्पिक मैके के राज्य कोऑर्डिनेटर अजय श्रीवास्तव, सचिव विप्लव चक्रवर्ती, महाविद्यालय के शिक्षक–विद्यार्थी तथा बड़ी संख्या में संगीतप्रेमी नागरिक उपस्थित रहे।

75 वर्ष पहले रखी गई थी नींव

भातखंडे संगीत महाविद्यालय की स्थापना इन्दु चक्रवर्ती एवं स्व. सुधांशु शेखर चक्रवर्ती द्वारा वसंत पंचमी–1950 को की गई थी।

प्रारंभिक परीक्षाएँ लखनऊ संगीत विद्यापीठ से संचालित होती थीं।

सन् 1955–56 में महाविद्यालय को इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़ से मान्यता मिली, और तब से आज तक स्नातक, स्नातकोत्तर एवं डिप्लोमा की परीक्षाएँ इसी विश्वविद्यालय से सम्पन्न हो रही हैं।

अब तक लगभग 5000 विद्यार्थी इस महाविद्यालय से लाभान्वित हो चुके हैं।

कई पूर्व छात्र आज विभिन्न प्रतिष्ठित क्षेत्रों में अपना नाम रोशन कर रहे हैं

अर्णव चटर्जी – छत्तीसगढ़ी फिल्मों में संगीत निर्देशन

श्री गणेश – फिल्म निर्देशन एवं संगीत संयोजन

आदित्य चक्रवर्ती – बॉलीवुड फिल्मों (जैसे बोल बच्चन) में संगीत योगदान

महाविद्यालय की प्रमुख गतिविधियाँ व उपलब्धियाँ

गुरु पूर्णिमा, विष्णु दवे पुण्यतिथि, वसंत पंचमी एवं विभिन्न सरकारी कार्यक्रमों का आयोजन

सन्-2000 में राज्य में पहली बार सारेगमपा प्रतियोगिता का आयोजन

240 अनुभवी प्राध्यापकों की सतत सेवाएँ

सन्-2000 में स्वर्ण जयंती समारोह

भरथरी लोक विधा पर पहली राष्ट्रीय संगोष्ठी

2009 में हरेली व होली पर नाट्य मंचन

2009 में पाश्चात्य नृत्यशैली पर वृहद वर्कशॉप

महाविद्यालय की प्राविण्य सूची में स्थान प्राप्त विद्यार्थी

राहुल बरेठ, अमोल अरविंद फड़के, रत्नेश कुमार सूर्यवंशी, सुमित गुप्ता, दीप्ती कर्णेवार, आरती झा, कु. ऋतुजा जीवन गोरे, कु. हर्षिता, कु. श्वेता दांडेकर, अभिषेक कन्नौजिया, एम.एन. विग्नेश कुमार, कु. श्रेया द्विवेदी, प्रियंका तिवारी।

विश्व टेलिविजन दिवस आज

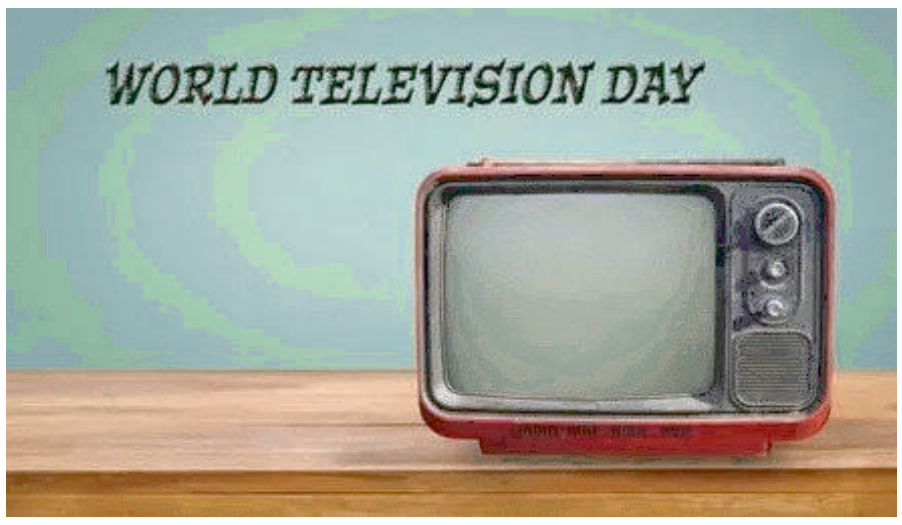

21 नवंबर को विश्व टेलिविजन दिवस मनाया जाता है। टेलिविजन ने संचार और वैश्वीकरण में काफी अहम भूमिका निभाई है। इसके महत्वों को रेखांकित करने के लिए ही विश्व टेलिविजन दिवस मनाया जाता है। टेलिविजन का हमारे जीवन में क्या महत्व है? टेलिविजन जनसंचार का एक ऐसा माध्यम है जिससे मनोरंजन, शिक्षा, खबर और राजनीति से जुड़ी गतिविधियों के बारे में सूचनाएं मिलती हैं। यह दो या तीन विमाओं में तस्वीरों और इमेज के संचार का माध्यम है। यह शिक्षा और मनोरंजन दोनों का एक स्वास्थ्यपरक स्रोत है। यह सूचना प्रदान करके समाज में अहम भूमिका निभाता है।

वर्ल्ड टेलिविजन दिवस क्यों और कब से मनाया जाता है? 21 और 22 नवंबर, 1996 को यूएन ने पहली बार विश्व टेलिविजन मंच का आयोजन किया। इससे मीडिया को टीवी के महत्व पर चर्चा करने का एक प्लैटफॉर्म मिला। टेलिविजन से दुनिया को बदलने में कैसे मदद मिल रही है, पर भी चर्चा हुई। यह विडियो इस्तेमाल का सबसे बड़ा स्रोत है। इसलिए 17 दिसंबर 1996 को संयुक्त राष्ट्र महासभा में एक प्रस्ताव पारित किया गया और 21 नवंबर को विश्व टेलिविजन दिवस के तौर पर मनाने का फैसला लिया गया। निर्णय लेने की प्रक्रिया पर टेलिविजन के असर को देखते हुए यह फैसला लिया गया है।

कैसे मनाया जाता है विश्व टेलिविजन दिवस? विश्व टेलिविजन दिवस को बढ़ावा देने के लिए लोग कई तरह की गतिविधियों का आयोजन करते हैं। पत्रकार, लेखक और ब्लॉगर्स टेलिविजन की भूमिका पर प्रिंट मीडिया, ब्रोडकास्ट मीडिया और सोशल मीडिया पर भी अपने विचार साझा करते हैं। स्कूलों में अतिथि वक्ताओं को आमंत्रित किया जाता है जो मीडिया और संचार की भूमिका पर बोलते हैं।

भारत में टीवी का पहला प्रसारण कब हुआ? भारत में पहला प्रसारण दिल्ली में 15 सितंबर 1959 में प्रायोगिक तौर पर शुरू किया गया। इसमें हफ्ते सिर्फ तीन दिन कार्यक्रम आते थे। वह भी सिर्फ 30-30 मिनट के लिए। लेकिन, शुरू से ही यह लोगों का मनोरंजन और ज्ञानवर्द्धन करने लगा। जल्द ही यह लोगों की आदत का हिस्सा बन गया।

दूरदर्शन ने अपना दूसरा चैनल कब शुरू किया? 26 जनवरी 1993 को दूरदर्शन अपना दूसरा चैनल लेकर आया। इसका नाम था मेट्रो चैनल। इसके बाद पहला चैनल डीडी 1 और दूसरा चैनल डीडी 2 के नाम से लोकप्रिय हो गया।

पीपल की पूजा करने से क्यों मिट जाता है शनि का प्रकोप?

जब किसी इंसान पर शनिदेव की महादशा चल रही होती है तो उसे पीपल की पूजा का उपाय जरूर बताया जाता है। कई बार मन में यह सवाल उठता है कि ब्रम्हांड के सबसे शक्तिशाली ग्रह शनि का क्रोध मात्र पीपल वृक्ष की पूजा करने से कैसे शान्त हो जाता है।

आज हम आपको बताने जा रहे हैं शनि और पीपल से सम्बंधित वह पौराणिक कथा जिसके बारे में आपने शायद ही पहले कभी सुना हो।

पुराणों की माने तो एक बार त्रेता युग मे अकाल पड़ गया था। उसी युग मे एक कौशिक मुनि अपने बच्चो के साथ रहते थे। बच्चो का पेट न भरने के कारण मुनि अपने बच्चो को लेकर दूसरे राज्य मे रोज़ी रोटी के लिए जा रहे थे।

रास्ते मे बच्चो का पेट न भरने के कारण मुनि ने एक बच्चे को रास्ते मे ही छोड़ दिया था। बच्चा रोते रोते रात को एक पीपल के पेड़ के नीचे सो गया था तथा पीपल के पेड़ के नीचे रहने लगा था। तथा पीपल के पेड़ के फल खा कर बड़ा होने लगा था। तथा कठिन तपस्या करने लगा था।

एक दिन ऋषि नारद वहाँ से जा रहे थे। नारद जी को उस बच्चे पर दया आ गयी तथा नारद जी ने उस बच्चे को पूरी शिक्षा दी थी तथा विष्णु भगवान की पूजा का विधान बता दिया था।

अब बालक भगवान विष्णु की तपस्या करने लगा था। एक दिन भगवान विष्णु ने आकर बालक को दर्शन दिये तथा विष्णु भगवान ने कहा कि हे बालक मैं आपकी तपस्या से प्रसन्न हूँ। आप कोई वरदान मांग लो।

बालक ने विष्णु भगवान से सिर्फ भक्ति और योग मांग लिया था। अब बालक उस वरदान को पाकर पीपल के पेड़ के नीचे ही बहुत बड़ा तपस्वी और योगी हो गया था।

एक दिन बालक ने नारद जी से पूछा कि हे प्रभु हमारे परिवार की यह हालत क्यो हुई है। मेरे पिता ने मुझे भूख के कारण छोड़ दिया था और आजकल वो कहा है।

नारद जी ने कहा बेटा आपका यह हाल शानिमहाराज ने किया है। देखो आकाश मे यह शनैश्चर दिखाई दे रहा है। बालक ने शनैश्चर को उग्र दृष्टि से देखा और क्रोध से उस शनैश्चर को नीचे गिरा दिया। उसके कारण शनैश्चर का पैर टूट गया। और शनि असहाय हो गया था।

शनि का यह हाल देखकर नारद जी बहुत प्रसन्न हुए। नारद जी ने सभी देवताओ को शनि का यह हाल दिखाया था। शनि का यह हाल देखकर ब्रह्मा जी भी वहाँ आ गए थे। और बालक से कहा कि मैं ब्रह्मा हूँ आपने बहुत कठिन तप किया है।

आपके परिवार की यह दुर्दशा शनि ने ही की है। आपने शनि को जीत लिया है। आपने पीपल के फल खाकर जीवंन जीया है। इसलिए आज से आपका नाम पिपलाद ऋषि के नाम जाना जाएगा।और आज से जो आपको याद करेगा उसके सात जन्म के पाप नष्ट हो जाएँगे।

तथा पीपल की पूजा करने से आज के बाद शनि कभी कष्ट नहीं देगा। ब्रह्मा जी ने पिपलाद बालक को कहा कि अब आप इस शनि को आकाश मे स्थापित कर दो। बालक ने शनि को ब्रह्माण्ड मे स्थापित कर दिया।

तथा पिपलाद ऋषि ने शनि से यह वायदा लिया कि जो पीपल के वृक्ष की पूजा करेगा उसको आप कभी कष्ट नहीं दोगे। शनैश्चर ने ब्रह्मा जी के सामने यह वायदा ऋषि पिपलाद को दिया था।

उस दिन से यह परंपरा है जो ऋषि पिपलाद को याद करके शनिवार को पीपल के पेड़ की पूजा करता है उसको शनि की साढ़े साती, शनि की ढैया और शनि महादशा कष्ट कारी नहीं होती है।

शनि की पूजा और व्रत एक वर्ष तक लगातार करनी चाहिए। शनि कों तिल और सरसो का तेल बहुत पसंद है इसलिए तेल का दान भी शनिवार को करना चाहिए। पूजा करने से तो दुष्ट मनुष्य भी प्रसन्न हो जाता है।

तो फिर शनि क्यो नहीं प्रसन्न होगा? इसलिए शनि की पूजा का विधान तो भगवान ब्रह्मा ने दिया है।

घर का कबाड़ करें दान

परिवहन विशेष न्यूज

संसार में हर वस्तु का अपना मूल्य होता है। संसार में ऐसा कुछ भी नहीं जो व्यर्थ और अर्थहीन हो जो चीज हमारे लिए उपयोगी नहीं है वो किसी दूसरे के लिए अनमोल भी हो सकती है। भारतीय वैदीक ज्योतिष में कुछ ऐसे सटीक उपाय बताएं गए हैं जिन्हें करके व्यक्ति न केवल अपनी समस्याओं से निजात पा सकता है अपितु धनवान भी बन सकता है।

क्या आप जानते हैं आप के घर पर पड़ा हुआ कबाड़ आपके जीवन में नकारात्मकता के साथ-साथ दुर्भाग्य और दरिद्रता को भी ला सकता है। भारतीय ज्योतिष शास्त्रों में कूड़े और कबाड़ का संबंध राहू ग्रह से होता है। जिसका घर में पड़ा रहना न केवल आर्थिक हानि देता है अपितु आपके जीवन में दुर्भाग्य भी ला सकता है परंतु यह ही कबाड़ आप किसी को दान देकर अपने दुर्भाग्य को सौभाग्य में बदल सकते हैं।

सोमवार के दिन रद्दी कागज अथवा पुराने फटे सफेद कपड़े

किसी विधवा को दान करने से व्यक्ति के पारिवारिक सुख बढ़ते हैं।

मंगलवार को पुराने लाल फटे कपड़े अथवा पुराने तांबे के बर्तन दान गरीब चौकीदार को दान करने से संपत्ती में वृद्धि होती है।

बुधवार के दिन टूटे कांच के बर्तन अथवा दरार पड़ी हुई क्राकरी किसी गरीब कन्या को दान करने से आर्थिक हानि से मुक्ति मिलती है।

गुरूवार के दिन पुराने फटे पीले कपड़े, पुरानी किताबें अथवा पुराने पीत्तल के बर्तन किसी गरीब ब्राह्मण को दान करने से व्यक्ति का भाग्य उदय होता है।

शुक्रवार के दिन पुराने रेशमी कपड़े उपयोग में न आने वाले पर्दे या चादरे गरीब सुहागन स्त्री को दान करने से दांपत्य सुख में वृद्धि होती है।

शनिवार के दिन सुबह पुराने सफेद काले कपड़े, पुराने स्टील के बर्तन दान करने से तथा पुरानी लकड़ी का फर्निचर दान करने से जीवन की बाधाएं दूर होती हैं। शनिवार की शाम को बंद पड़ी हुई घड़िया, जंग लगा लोहे का सामान अथवा पुराने नाले अथवा भुरे कपड़े किसी सफाई कर्मचारी को दान करने से तंत्र-मंत्र से मुक्ति मिलती है।

रविवार के दिन पुराना गुड़ और तांबे के बर्तन दान करने से प्रमोशन मिलता है।

डोनाल्ड ट्रंप-मोहम्मद बिन सलमान भू- राजनीतिक साझेदारी- स्वार्थ-प्रधान कूटनीति, रणनीतिक सौदे और बदलती वैश्विक शक्ति-संतुलन का विश्लेषण

अमेरिका,सऊदी अरब हो या भारत, वैश्विक मंच पर उन्हीं निर्णयों को प्राथमिकता देतें है,जिनसे उनका सामरिक, आर्थिक या राजनीतिक हित सुरक्षित रहे- एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

गोंदिया-वैश्विक स्तरपर अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और सऊदी अरब के क्राउन प्रिंस के बीच दिनांक 19 नवंबर 2025 को चल रही गलबहियां पूरी दुनियाँ ने देखी अमेरिकी राष्ट्रपति ने सऊदी को प्रमुख गैर-नाटो सहयोगी बता दिया है और एफ़-35, परमाणु डील समेत कई महान समझौते किए हैं मध्य -पूर्व की राजनीति में खलबली मचा देने वाले इन दो देशों ने 1945 में भी एक महान समझौता किया था,जब एक युद्धपोत पर राष्ट्रपति फ्रैंकलिन डी रूजवेल्ट और आधुनिक सऊदी किंग अब्दुलअजीज इब्न सऊद की मुलाकात हुई थी,इसी मुलाकात के बाद क्विंसी समझौते की नींव रखी गई थी।वैश्विक राजनीति सदियों से राष्ट्रीय स्वार्थ और रणनीतिक लाभ के सिद्धांत पर संचालित होती रही है।चाहे वह साम्राज्य वाद के दौर कीविस्तारवादी नीतियाँ हों, शीतयुद्ध काल के दो ध्रुवीय गठबंधन, या 21वीं सदी की आर्थिक-रणनीतिक कूटनीति, हर युग में महाशक्तियों ने अपनी प्राथमिकताओं को सर्वोपरि रखा। अभी हाल ही में एक दिन पूर्व डोनाल्ड ट्रंप और मोहम्मद बिन सलमान (एमबीएस) के बीच हुए ऐतिहासिक समझौतों निवेश के वायदों को भी इसी रूप में देखा जा सकता है। इन दोनों के बीच एक दिन पूरा वाइट हाउसमें जो हुआ वह सिद्धांत को पुष्ट करती हैं कि राजनीति में स्थायी कुछ नहीं होता, केवल राष्ट्रीय हित स्थायी होते हैं।यह लेख इन दोनों नेताओं के हालिया व्हाइट हाउस संवाद, उससे जुड़े रणनीतिक व्यापारिक और सैन्य समझौतों तथा वैश्विक शक्ति समीकरणों पर पड़े प्रभाव का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करता है।मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं कि राजनीति में स्वार्थ की अवधारणा नई नहीं है। अंतरराष्ट्रीय संबंधों केयथार्थवादी सिद्धांत के अनुसार, हर देश का सर्वोच्च उद्देश्य अपनी सुरक्षा, शक्ति और हितों की रक्षा करना होता है। यह सिद्धांत बताता है कि कोई भी राष्ट्र, चाहे वह अमेरिका हो, सऊदी अरब हो या भारत, वैश्विक मंच पर उन्हीं निर्णयों को प्राथमिकता देता है, जिनसे उसका सामरिक, आर्थिक या राजनीतिक हित सुरक्षित रहेडोनाल्ड ट्रंप का अमेरिका फर्स्ट और एमबीएस का विज़न 2030 इसी स्वार्थ- प्रधान रणनीति के दो उदाहरण हैं। दोनों नेता इस धारणा पर चलते हैं कि बड़े फैसलेभावनाओं या सामूहिक नैतिकता के आधार पर नहीं, बल्कि कच्ची वास्तविकताओं, पैसा, सुरक्षा, निवेश, तेल, हथियार और वैश्विक प्रभाव के आधार पर लिए जाते हैं।

साथियों बात अगर हम ट्रंप और एमबीएसः-दो आक्रामक नेताओं की समान नीति-शैली कोसमझने की करें तो डोनाल्ड ट्रंप वैश्विक राजनीति में अपनी लेन-देन आधारित कूटनीति (ट्रांसक्शनल डिप्लोमासी) के लिए जाने जाते हैं। उनके शासनकाल में वैश्विक समझौते लाभ-हानि के कठोर आकलन पर आधारित थे। वे अंतरराष्ट्रीय गठबंधनों पर पुनर्विचार करने, नाटो देशों से अधिक धन मांगने, चीन पर टैरिफ लगाने और पुराने समझौतों को रद्द करने में संकोच नहीं करते थे।इसी प्रकार मोहम्मद बिनसलमान अपने देश को आधुनिक आर्थिक महाशक्ति बनाने के लिए उग्र सुधारवादी नीति अपनाते हैं। सऊदी की तेल-निर्भर अर्थव्यवस्था को विविध बनाने, बड़े पैमाने पर विदेशी निवेश लाने और मध्य-पूर्व की शक्ति-संतुलन में वर्चस्व बनाए रखने के लिए वे साहसिक कदम उठाते रहे हैं। उनके शासनकाल में सऊदी अरब ने क्षेत्रीय राजनीति में आक्रामक सैन्य और आर्थिक हस्तक्षेपों के माध्यम से खुद को एक निर्णायक शक्ति के रूप में स्थापित किया है।दोनों नेताओं में तीन महत्वपूर्ण समानताएँदिखाई देती हैं(1)राष्ट्र प्रथम का सिद्धांत (2) आक्रामक कूटनीति(3)बड़े आर्थिक और रक्षा सौदों पर जोर

साथियों बात अगर हम ट्रंप-एमबीएस व्हाइट हाउस बैठकः भू-राजनीतिक हलचल का केंद्र इसको समझने की करें तो, 2018 के बाद पहली बार एमबीएस का अमेरिका आगमन और व्हाइट हाउस में ट्रंप द्वारा किया गया ऐतिहासिक स्वागत वैश्विक मीडिया का केंद्र बन गया यह केवल एक कूटनीतिक मुलाकात नहीं थी, बल्कि वैश्विक शक्ति समीकरणों को पुनर्परिभाषित करने वाला क्षण था।इस मुलाकात के कई अर्थ थे- (1)सऊदी अरब और अमेरिका के रिश्तों में आई ठंडक अब समाप्त हो रही है।(2) बाइडेन प्रशासन के तहत मौजूद तनाव और अविश्वास अब इतिहास बनता दिख रहा है।(3) मध्य-पूर्व में अमेरिका अपनी प्रासंगिकता पुनः स्थापित करने की कोशिश कर रहा है।(4)एमबीएस की अंतरराष्ट्रीय छवि, जो खशोगी प्रकरण से धूमिल हुई थी, ट्रंप ने उसे पुनः वैधता प्रदान कर दी।ट्रंप के इस कदम को विश्लेषक व्यवहारिक कूटनीति कहते हैं, जहाँ मानवीय अधिकारों का मुद्दा पीछे छूट जाता है और व्यापार, हथियार सौदे तथा रणनीतिक प्रभाव प्राथमिकता बन जाते हैं।

साथियों बातें कर हम सऊदी को मेजर नॉन-नाटो एली का दर्जा और अभूतपूर्व रक्षा सौदे इसको समझने की करें तो इस बैठक का सबसे बड़ा और ऐतिहासिक निर्णय था सऊदी अरब को मेजर नॉन-नाटो एली का दर्जा देना।यह दर्जा सामान्यतः उन देशों को मिलता है जो अमेरिका के दीर्घकालिक रक्षा-सहयोगी होते हैं। इससे सऊदी को अमेरिकी तकनीक, हथियार, रक्षा सहयोग, खुफिया सूचना और सुरक्षा साझेदारी के विशेष अधिकार प्राप्त होंगे।यह कदम मध्य-पूर्व में शक्ति संतुलन को पूरी तरह बदल देगा।इसके साथ ही दो बड़े रक्षा समझौते घोषित हुए(1) 48 एफ़-35 स्टील्थ फाइटर जेट की बिक्री-एफ़ -35 दुनिया का सबसे खतरनाक और अत्याधुनिक स्टील्थ विमान है।सऊदी के लिए यह एक ₹गेम-चेंजर₹ सिद्ध होगा।यह इज़रायल, ईरान और तुर्किये जैसे देशों के सैन्य समीकरणों पर गहरा असर डालेगा।(2) 300 अब्रामस टैंक की बिक्री-अब्रामस एम 1ए 2 टैंक दुनिया की सबसे उन्नत स्थलीय युद्ध मशीनों में गिना जाता है।इससे सऊदी की थलसेना का सामरिक शक्ति-संतुलन कई गुना बढ़ जाएगा।इन दोनों सौदों के पीछे ट्रंप का साफ संदेश है-बिजनेस इज़ बिजनेस, और अमेरिका का हित सर्वोपरि है।

साथियों बात अगर हम सऊदी का अमेरिका में ऐतिहासिक निवेश,एक ट्रिलियन डॉलर का लक्ष्य इसको समझने की करें तो,एमबीएस ने अमेरिका में सऊदी अरब के निवेश को बढ़ाकर 1 ट्रिलियन डॉलर करने की घोषणा करके वैश्विकआर्थिक जगत में हलचल मचा दी। यह रकम पहले से घोषित 600 अरब डॉलर के निवेश से कहीं अधिक है। उन्होंने अमेरिका को दुनिया का सबसे आकर्षक निवेश गंतव्य बताया, जो स्पष्ट करता है कि सऊदी आर्थिक रूप से अमेरिका पर भरोसा बढ़ा रहा है। यह निवेश केवल आर्थिक नहीं, बल्कि 3 बड़े रणनीतिक उद्देश्यों को साधता है (1) अमेरिकी अर्थव्यवस्था में सऊदी की निर्णायक भागीदारी(2)द्विपक्षीय संबंधों को वित्तीय आधार पर मजबूती (3) ट्रंप प्रशासन को समर्थन और सुरक्षा गारंटी प्राप्त करना,एफ़-35 और 300 अब्रामस टैंकों के अतिरिक्त सऊदी द्वारा 88 लाख करोड़ (अरबों डॉलर) की डील अमेरिकी उद्योग के लिए बड़ी आर्थिक संजीवनी है।ट्रंप के लिए यह बैठक केवल एक कूटनीतिक सफलता नहीं, बल्कि आर्थिक उपलब्धि भी थी,जो एनपीएस (नेशनल परोसपेरिटी सम्मिट) और आगामी चुनावों में उनकी छवि मजबूत करेगी।

साथियों बात अगर हम जमाल खशोगी हत्या मामलाः ट्रंप की 'क्लीन चिट' और विश्व राजनीति में नैतिकता बनाम हितों का संघर्ष इसको समझने की करें तो,2018 में तुर्किये में पत्रकार जमाल खशोगी की हत्या ने विश्व समुदाय में सऊदी अरब की छवि को गंभीर क्षति पहुंचाई थी। सीआईए ने अपने निष्कर्षों में स्पष्ट रूप से कहा था कि इस हत्या के पीछे सऊदी शासन और एमबीएस की मंजूरी का संदेह है।बाइडेन प्रशासन इसी आधार पर एमबीएस से दूरी बनाए हुए था।परन्तु ट्रंप ने इस बैठक में एमबीएस को क्लीन चिट प्रदान करते हुए कहा कि उन्हें इस मामले में कोई जानकारी नहीं है।यह बयानरणनीतिक और आर्थिक हितों के अनुसार था, राजनीतिक नैतिकता के नहीं।यह कदम यह सिद्ध करता है कि (1) राजनीति में मानवीय अधिकारों से बड़ा राष्ट्रीय हित होता है (2) हथियार, निवेश और भू- रणनीतिक सहयोग नैतिकता से अधिक शक्तिशाली हैं (3) अमेरिका - सऊदी संबंध व्यवहारिकता पर आधारित हैं, न कि आदर्शवाद पर ट्रंप का यह निर्णय आलोचकों की दृष्टि में विवादास्पद है, परन्तु समर्थकों के अनुसार यह ₹राष्ट्रहित आधारित वास्तविक कूटनीति₹ है।

साथियों बात अगर हम इसके अंतरराष्ट्रीय प्रभावः-यहसाझेदारी वैश्विक भू-राजनीति को कैसे बदलेगी? इसको समझने की करें तो ट्रंप,एमबीएस बैठक का वैश्विक परिदृश्य पर प्रभाव अत्यन्त व्यापक है,(1)मध्य-पूर्व का शक्ति-संतुलन बदल जाएगा-एफ़ -35 और अब्रामस टैंक सऊदी को क्षेत्रीय सुपर-पावर बना देंगे।ईरान के लिए यह गंभीर चुनौती होगी।(2)चीन और रूस पर अप्रत्यक्ष दबाव बढ़ेगा-सऊदी का अमेरिका की ओर झुकाव ऊर्जा और निवेश उद्योग में दोनों देशों के लिए झटका है (3) इज़रायल -सऊदी संबंधों में नई संभावनाएँ-अमेरिका की मध्यस्थता से अब्राहम समझौते 2.0' की राह खुल सकती है।(4)भारत सहित एशिया में कच्चे तेल की राजनीति प्रभावित होगी-सऊदी, अमेरिका गठजोड़ तेल मूल्यों और ऊर्जा आपूर्ति पर असर डालेगा।(5) अमेरिका मध्य-पूर्व में अपनी सैन्यमौजूदगी दोबारा मजबूत करेगा,यह चीन की बेल्ट एंड रोड रणनीति पर भी प्रभाव डालेगा।

अतः अगर हम उपयोग पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि स्वार्थ, रणनीति और शक्ति,21वीं सदी की नई कूटनीति,ट्रंप और मोहम्मद बिन सलमान की मुलाकात केवल एक राजनयिक घटना नहीं थी, बल्कि 21वीं सदी की नई भू-राजनीति का स्पष्ट संदेश थी,राष्ट्रहित सर्वोपरि है।इस साझेदारी में अर्थव्यवस्था है,हथियार हैं,निवेश है,रणनीतिक दबाव है,क्षेत्रीय वर्चस्व है,और सबसे महत्वपूर्ण,एक ऐसा गठबंधन है जो आने वाले दशक में विश्व की शक्ति-संरचना को नया स्वरूप दे सकता है।नैतिकता मानवाधिकार, लोकतंत्र जैसे आदर्शों का स्थान यथार्थवादी शक्ति- राजनीति ने फिर से ले लिया है। स्वार्थ-प्रधान राजनीति आज भी वही है,केवल उसके स्वरूप और साधन बदल गए हैं।डोनाल्ड ट्रंप और एमबीएस इस नई विश्व-व्यवस्था के प्रतिनिधि हैं, जहाँ कूटनीति अब केवल संवाद नहीं, बल्कि शक्ति, धन और राष्ट्रीय हितों की प्रतिस्पर्धा है।

21 नवंबर: विश्व टेलीविज़न दिवस

टेलीविज़न: जो जोड़ता, दिखाता और दिशा देता रहा

कुछ आविष्कार बदले नहीं जाते, वे हमें बदल देते हैं। टेलीविज़न ऐसा ही एक आविष्कार है। उसने कभी दरवाज़े पर खड़े होकर नहीं पूछा कि आप अमीर हैं या गरीब, कस्बे में रहते हैं या महानगर में; बस एक तार खींचा और पूरी दुनिया को घर के आँगन में खोल दिया। हर सुबह आँख खुलते ही आपकी नज़र सबसे पहले किसे खोजती है? उसी छोटे-से काले रिमोट को, जो एक बटन में समूची दुनिया को आपके कमरे में बुला लेता है। आज हम उस जादुई खिड़की को सलाम कर रहे हैं जिसने इंसान की कल्पना को हक़ीक़त में ढाल दिया—टेलीविज़न को। यह महज़ मशीन नहीं, एक क्रांति है। एक तिलिस्म है। एक ऐसा दर्पण, जिसमें हम अपने आप को देखते हैं—हँसते हुए, डरते हुए, रोते हुए और हर बार थोड़ा बदलते हुए।

सोचिए ज़रा। 1920 के दशक में जब जॉन लोगी बेयर्ड ने पहली बार चलती तस्वीरें प्रसारित की थीं, तब किसी ने कल्पना भी न की थी कि एक दिन यही डिब्बा दुनिया को अपने आगे झुका लेगा। 1947 में भारत आज़ाद हुआ, और 1959 में दिल्ली के आकाश में पहला टेलीविज़न टावर खड़ा हुआ। उस दिन दूरदर्शन ने सिर्फ़ तरंगें नहीं भेजीं—एक साझा सपना भेजा। गाँव की चौपाल से लेकर मेट्रो के कोच तक, हर जगह एक ही आवाज़ गूँजने लगी। हम अलग-अलग थे, पर एक साथ सुबके जब 'महाभारत' में भीष्म शर-शय्या पर लेटे; हम साथ गूँजे जब कपिल देव ने लॉर्ड्स की बालकनी में विश्व कप उठाया। टेलीविज़न ने हमें सिर्फ़ जोड़ा नहीं—हमें एक राष्ट्र होने का एहसास दिया।

रंग आया और जैसे किसी ने समय की नसों में नया खून दौड़ा दिया। 1982 का एशियाड सिर्फ़ खेल नहीं था; वही वह पल था जब भारत ने पहली बार टेलीविज़न की आँखों से खुद को रंगों में देखा। दुकानों पर सजे नए टीवी ऐसे लगते थे मानो शहर अपनी ही परछाईं को चकित होकर निहार रहा हो। सीता-हरण का दृश्य देखकर माँओं ने आँचल से आँसू पोंछे, और बच्चों ने पहली बार नीला आकाश सचमुच के नीले में चमकता देखा। टेलीविज़न सिर्फ़ दिखाता नहीं था—वो हमें जीना सिखाता था। 'हम लोग' ने हमें बताया कि साधारण इंसान भी असाधारण संघर्ष कर सकता है। 'बुनियाद' ने बँटवारे के घावों को फिर से कुरेदा, ताकि हम भूल न जाएँ कि नफ़रत की कीमत कितनी भारी होती है।

और फिर आया 90 का दशक। स्टार, ज़ी, सोनी। एक चैनल से सैकड़ों चैनल, सैकड़ों आवाज़ें। दूरदर्शन का एकाधिकार टूटा और सपनों की खुली मंडी लग गई। 'शांति' ने बताया कि औरत भी बोल सकती है। 'तारा', 'हिप हिप हुर्रे' ने दिखाया कि बच्चे भी इंसान होते हैं। केबल वाला भैया जब छत पर एंटीना घुमाता था, तो हम सैटेलाइट के ज़रिए पूरी दुनिया को अपने ड्रॉइंग रूम में बुला लेते थे। सीएनएन पर गल्फ वॉर लाइव देखा, एमटीवी पर माइकल जैक्सन को मूनवॉक करते देखा। टेलीविज़न अब सिर्फ़ भारतीय नहीं रहा, वो ग्लोबल हो गया।

फिर आया रियलिटी टीवी का दौर—जहाँ स्क्रीन सिर्फ़ कहानी नहीं, किस्मत लिखने लगी। 'कौन बनेगा करोड़पति' ने साबित किया कि आम आदमी भी करोड़पति बन सकता है। एक सवाल, एक जवाब, और पूरी ज़िंदगी बदल जाती है। 'इंडियन आइडल' ने गलियों के गवैयों को स्टार बनाया। 'बिग बॉस' ने हमें दिखाया कि इंसान कितना नीचे गिर सकता है जब कैमरा 24 घंटे उस पर लगा हो। टेलीविज़न अब महज़ मनोरंजन नहीं रहा, वो समाज का असली आईना बन गया; कभी हँसाता, कभी रुलाता, कभी उबाल देता, और कभी अपनी ही परछाईं से शर्मिंदा कर जाता।

आज जब हम नेटफ्लिक्स, प्राइम, हॉटस्टार पर बिंज करते हैं, तब भी टेलीविज़न ज़िंदा है। वो अब सिर्फ़ डिब्बा नहीं—वो हमारी जेब में है, हमारी उँगलियों पर है। पर उसकी असली ताकत अब भी वही है—लोगों को एक साथ बाँधने की। 2020 का लॉकडाउन याद है? जब 'रामायण' और 'महाभारत' फिर से चले थे, तो पूरा देश एक ही समय, एक ही सांस में कहानी देख रहा था। करोड़ों स्क्रीन पर एक ही दृश्य। एक ही संवाद। एक ही भाव। टेलीविज़न ने फिर साबित किया—वो सिर्फ़ तकनीक नहीं, वो भावना है। वो संस्कृति है। वो स्मृति है।

विश्व टेलीविज़न दिवस हमें ठहरकर यह सोचने पर मजबूर करता है कि हम इस स्क्रीन को आखिर कैसे देख रहे हैं—सिर्फ़ मनोरंजन उगलती मशीन के रूप में, या दुनिया को नया अर्थ देने वाली एक अतिरिक्त आँख के रूप में? टीवी केवल देखने की क्रिया नहीं, जागने का अनुभव भी बन सकता है। यह बताता है कि कहानियों की शक्ति असीम है, कि कभी-कभी एक अकेला दृश्य हज़ार शब्दों से भी गहरी चोट या गहरा सुकून दे सकता है। यही वह ताकत है जिसने हमें स्थानीय चौखट से उठाकर वैश्विक नागरिक बनाया—दृष्टि को सीमाओं की दीवारों के पार ले जाकर। और यही याद दिलाता है कि इंसान की कहानी चाहे कहीं भी जन्म ले, उसकी गूँज दुनिया के हर कोने में सुनाई दे सकती है।

इस दिन यह स्वीकार करना जरूरी है कि टेलीविज़न ने न सिर्फ हमारी आदतें, बल्कि हमारी संवेदनाएँ भी बदल दी हैं। उसने हमें वह दुनिया दिखा दी, जिसके दरवाज़े शायद हमारे लिए कभी खुल ही नहीं पाते। यह वह प्रकाश है जो समय के अंधेरे कोनों को चीरकर हमारे पास आता है—कभी चेतावनी बनकर, कभी उम्मीद बनकर। और शायद यही उसकी सबसे बड़ी खासियत है: टेलीविज़न ऐसा माध्यम है जो सिर्फ बताता नहीं, बल्कि जोड़ता है; सिर्फ दिखाता नहीं, बल्कि दिशा देता है; और सिर्फ मनोरंजन नहीं करता, बल्कि मानवता के साझा भविष्य पर अपनी तेज़, गहरी स्याही से खिंचती हुई एक अमिट रेखा है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी

बिहार में सम्राट चौधरी की बढ़ती सियासी प्रासंगिकता के गहरे निहितार्थ

कमलेश पांडेय

बिहार भाजपा विधायक दल ने अपने उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी को पुनः विधायक दल का नेता चुन लिया है जबकि दूसरे उपमुख्यमंत्री रहे विजय सिन्हा को भी उपनेता चुना गया है। इससे स्पष्ट है कि बिहार भाजपा में गुजरात के पूर्व राज्यपाल कैलाशपति मिश्रा, और पूर्व उपमुख्यमंत्री सुशील मोदी के बाद सम्राट चौधरी बिहार भाजपा के तीसरे बड़े नेता के रूप में स्थापित हो चुके हैं लेकिन अपनी सियासी सूझबूझ और कुशल रणनीति से भाजपा की राजनीति में वो लम्बे रेस के घोड़े साबित होंगे, यह बात मैं अपने पेशेवर अनुभव से कह सकता हूँ।

दरअसल, सम्राट चौधरी बिना लाग-लपेट के अपनी बातें कहने और खुद से जुड़े लोगों का सदैव ख्याल रखने वाले नेता हैं। ऐसा इसलिए कि तारापुर से विधायक बनने से पहले वह परबत्ता के विधायक और मंत्री रह चुके हैं। वहीं, जब वह एमएलसी बने तो न केवल परबत्ता बल्कि तारापुर के लोगों से भी जुड़े रहे। यह कोई मामूली बात नहीं है। उन्हें बिहार भाजपा की मूल राजनीतिक समझ है और इसी के अनुरूप उन्होंने अपना सियासी गोल भी फिक्स कर रखा है जो बात समय के साथ आपको पता चलती जाएगी। जानकार बताते हैं कि भाजपा में सम्राट चौधरी की सफलता की मूल वजहें उनके विविधता भरे राजनीतिक अनुभव, सियासी रूप से प्रासंगिक जातिगत समीकरण, राजनीतिक व सामाजिक संगठन कौशल और भाजपा की मौजूदा रणनीतिक जरूरतों से जुड़ी हैं जिसका संकेत मैं अपने आलेख व सोशल मीडिया पोस्ट में पिछले दशक में ही दे चुका हूं। यही मेरा पेशेवर दायित्व भी था ताकि भाजपा मजबूत बने।

पहला, विविधता भरा राजनीतिक अनुभव और इंद्रधनुषी रणनीति:
सम्राट चौधरी 25 वर्षों से विभिन्न दलों (RJD, JDU और भाजपा) में सक्रिय रहे हैं और कई बार विधायक तथा मंत्री बन चुके हैं। उनका अनुभव उन्हें राज्य के नेताओं और कार्यकर्ताओं के बीच विश्वसनीय बनाता है।

दूसरा, ओबीसी और सामाजिक समीकरण:
सम्राट चौधरी कोइरी (कुशवाहा) समुदाय से आते हैं, जिसकी बिहार के ओबीसी मतदाताओं में अहम भूमिका है। भाजपा ने उन्हें इस समुदाय की मजबूत पकड़ और ₹लव-कुश₹ समीकरण को भुनाने के लिए आगे रखा है ताकि ओबीसी वोटों को पार्टी के पक्ष में मजबूत किया जा सके।

तीसरा, संगठनात्मक और विचारधारा से सामंजस्य:
हालांकि पार्टी का कोर वोटर वैचारिक पृष्ठभूमि और अनुशासन पसंद करता है, सम्राट चौधरी ने सेवा, संगठन, और संकल्प जैसे भाजपा के तीन स्तंभों को अपनाकर संगठन के भीतर अपनी पकड़ बनाई है।

चतुर्थ, आक्रामक नेतृत्व और संचार कौशल:
सम्राट चौधरी के भाषण देने की क्षमता और आक्रामक राजनीतिक शैली ने उन्हें नेतृत्वकर्ता के रूप में चर्चित किया है। वे हर मंच पर भाजपा की राष्ट्रवादी विचारधारा और विकास की प्रतिबद्धता स्पष्ट करते हैं।

पंचम, भाजपा की रणनीतिक जरूरत:
जब नीतीश कुमार विपक्ष के साथ चले गए, भाजपा को ओबीसी समाज में नेतृत्व की तलाश थी। सम्राट चौधरी के आने से भाजपा को कुशवाहा समाज और लव-कुश समीकरण में सेंध लगाने का साधन मिला।

छठा, व्यक्तिगत चुनौतियाँ और सार्वजनिक विवादः वैसे तो उनकी राजनीति पर जातिवाद और अवसरवाद के आरोप भी लगे हैं और कुछ वर्ग उन्हें भाजपा की वैचारिक मुख्यधारा में बाहरी मानते हैं। लेकिन उनके लोकप्रिय व्यवहार के सामने ये बातें बेहद ओछी प्रतीत होती हैं।

सम्राट चौधरी की सुलझी हुई राजनीतिक रणनीतियाँ
सम्राट चौधरी की सियासी सफलता के पीछे उनका लंबा राजनीतिक अनुभव, ओबीसी समाज में गहरी पकड़, अद्भुत संगठनात्मक क्षमता, और भाजपा की समसामयिक रणनीतिक जरूरतें प्रमुख हैं। खास बात यह कि सम्राट चौधरी की राजनीतिक रणनीतियाँ और संगठन कौशल मुख्य रूप से उनकी जातीय राजनीति, संगठनात्मक नेतृत्व और भाजपा के भीतर सामंजस्य बनाने की क्षमता पर केंद्रित हैं।

पहला, सम्राट चौधरी की राजनीतिक रणनीतियाँ:
सम्राट चौधरी ने बिहार की जातीय राजनीति को समझते हुए ओबीसी, विशेषकर कुशवाहा (कोइरी) समुदाय को भाजपा की ओर आकर्षित किया है। यह एक संगठित जातीय वोट बैंक बनाने की रणनीति है। यही नहीं, उन्होंने ₹लव-कुश₹ समीकरण को भाजपा के लिए मजबूत करने में अहम भूमिका निभाई है, जो कुर्मी-कोइरी समुदायों का गठजोड़ है। वे भाजपा की राष्ट्रवादी विचारधारा को स्थानीय जनता तक पहुंचाने तथा विकास और संगठन को सबल बनाने पर जोर देते हैं। आक्रामक राजनीतिक बोलचाल और चुनावी माहौल में सतत सक्रियता उनकी प्रमुख रणनीतियों में शामिल है।

दूसरा, व्यक्तिगत संगठन कौशल:
उन्होंने पार्टी संगठन को पटरी पर लाने और स्थानीय नेतृत्वों को जोड़ने में अपनी कुशलता दिखाई है। संवाद क्षमता, टीम समन्वय और स्थानीय पार्टी कार्यकर्ताओं से मजबूत संपर्क उनकी संगठनात्मक ताकत हैं। पार्टी के विभिन्न घटक दलों के बीच तालमेल और गठबंधन में उनका महत्वपूर्ण योगदान है। संगठनात्मक राजनीति में वे सौदेबाजी, गठबंधन और स्थिति निर्माण के माहिर हैं जो पार्टी को राज्य स्तर पर मजबूती प्रदान करता है।

तीसरा, सम्राट चौधरी का जातीय समीकरण:
सम्राट चौधरी का जातीय समीकरण उनकी पार्टी की विचारधारा को जोड़ने वाली है, जबकि संगठन कौशल कई स्तरों पर पार्टी को सामंजस्य और मजबूती देने वाला है। उनकी ये क्षमताएं उन्हें बिहार और भाजपा की राजनीति में एक प्रभावशाली नेतृत्व चेहरा बनाती हैं।

चतुर्थ, जातीय समीकरण का निर्माण और मजबूत करना:
उन्होंने विशेष रूप से कुशवाहा (कोइरी) ओबीसी समुदाय को भाजपा की ओर आकर्षित करने पर फोकस किया है।उदाहरणः ₹लव-कुश₹ समीकरण को भाजपा की चुनावी रणनीति में शामिल करना, जो कुर्मी और कोइरी जातियों के वोट बैंक को जोड़ता है, जिससे पार्टी को बिहार में ओबीसी मतदाताओं का समर्थन मिलता है।

पंचम, संगठन को मजबूती देना:
पार्टी स्थानीय स्तर पर मजबूत संगठन बनाना और कार्यकर्ताओं से सीधे जुड़ना उनकी रणनीतियों का हिस्सा है। उदाहरणः बिहार विधानसभा चुनाव 2025 में भाजपा की क्षेत्रों में संगठन मजबूत कर कई सीटों पर सफलता पाना।

छठा, आक्रामक और प्रभावी संचार:
वे अपने भाषणों और मीडिया में अपने विचारों को स्पष्ट और जोरदार तरीके से प्रस्तुत करते हैं, जिससे उनकी लोकप्रियता बढ़ती है।उदाहरणः विपक्ष पर सीधे आक्रमण करते हुए पार्टी की विचारधारा को जन-जन तक पहुँचाना।

सातवां, गठबंधन और दलगत समन्वय:
भाजपा और उसके सहयोगी दलों के बीच तालमेल बनाए रखने एवं गठबंधन को सशक्त करने में भूमिका निभाना। उदाहरणः एनडीए गठबंधन में ओबीसी वर्ग के प्रत्याशियों को उचित प्रतिनिधित्व दिलाना और गठबंधन मजबूत करना।

आठवां, क्षेत्रीय विकास और लोकसंपर्क:
अपने निर्वाचन क्षेत्र में विकास कार्यों को प्राथमिकता देना और जनता के साथ संवाद बनाए रखना। उदाहरणः तारापुर, मुँगेर विधानसभा क्षेत्र में विकास कार्यों पर फोकस करके वोटरों का विश्वास जीतना।

निःसन्देह, सम्राट चौधरी की रणनीतियाँ जातीय समीकरण मजबूत करने, संगठनात्मक सुदृढ़ता, आक्रामक संचार, गठबंधन निर्माण और क्षेत्रीय विकास पर आधारित हैं। इन कदमों के उदाहरण बिहार विधानसभा चुनाव 2025 में भाजपा की जीत और उनकी व्यक्तिगत सफलता में स्पष्ट नजर आते हैं। जहां तक सम्राट चौधरी की ओबीसी आधारित वोट बैंक की विश्लेषण की बात है तो यह बिहार की जातीय राजनीति की संदर्भ में बहुत ही महत्वपूर्ण है।

वैसे तो वे कुशवाहा (कोइरी) समुदाय से हैं, जो बिहार में ओबीसी समुदाय का एक प्रभावशाली हिस्सा है। ओबीसी वोट बैंक की जनसांख्यिकी भी इस नजरिए से अहम है। क्योंकि कुशवाहा समाज बिहार की कुल आबादी का लगभग 6-7 प्रतिशत है, जो यादवों के बाद दूसरा सबसे बड़ा ओबीसी वोटर समूह माना जाता है। यह समुदाय पारंपरिक रूप से जनता दल यूनाइटेड (जदयू) से जुड़ा रहा है, लेकिन पिछले चुनावों में इस वोट बैंक का झुकाव भाजपा सहित अन्य पार्टियों की ओर भी देखा गया है।

कुशवाहा समाज पर सम्राट चौधरी का प्रभाव और प्रासंगिक भूमिका
वास्तव में, सम्राट चौधरी को भाजपा के ओबीसी चेहरों में एक मजबूत नेता माना जाता है जिनका प्रभाव कुशवाहा समाज के साथ-साथ कुछ अन्य ओबीसी समूहों में भी है। उन्होंने अपनी रणनीतिक कार्यकुशलता से कभी कुशवाहा समाज के एकछत्र नेता रहे उपेंद्र कुशवाहा को मात दी है, जो उनके गठबंधन सहयोगी भी हैं। मसलन, जब उपेंद्र कुशवाहा ने भाजपा को भाव न दी तो भाजपा ने कुशवाहा और अन्य ओबीसी वोटों को साधने के लिए सम्राट चौधरी को प्रमुखता दी है, ताकि ₹लव-कुश₹ समीकरण (लोस कुर्मी और कुशवाहा समुदाय) को पार्टी समर्थक बनाया जा सके।

इस प्रकार भाजपा ने सम्राट चौधरी के नेतृत्व में ओबीसी समुदाय में पकड़ मजबूत करने के लिए 23 सीटों पर कोईरी उम्मीदवार खड़े किए हैं, जिनमें से अधिकांश ने जीत दर्ज की है। वहीं, महागठबंधन ने भी इसी समुदाय के लिए 13 कोईरी उम्मीदवार मैदान में उतारे हैं, जिससे ओबीसी वोट बैंक के लिए दोनों गठबंधनों के बीच कड़ी टक्कर देखने को मिली है। लेकिन इस रेस में सम्राट चौधरी ने बाजी मारी है, क्योंकि उनकी पार्टी के कोर मध्यवर्गीय समर्थकों से भिन्न व्यक्तिगत शैली और जाति-आधारित राजनीति ने उन्हें ओबीसी वोट बैंक के लिए उपयोगी बनाया है, हालांकि पार्टी के कुछ पारंपरिक समर्थक उन्हें पूरी तरह स्वीकार नहीं करते।

वहीं, चुनाव परिणाम और हालिया रुझान से भी इसी बात की तस्दीक हुई। क्योंकि हाल के विधानसभा चुनावों में सम्राट चौधरी ने अपने क्षेत्र में बड़ी जीत दर्ज की है, जिससे यह साबित होता है कि उनके ओबीसी वोट बैंक में अच्छी पकड़ है। हालांकि कुशवाहा वोट अब पूरी तरह किसी एक दल के साथ नहीं है और दो प्रमुख गठबंधनों के बीच बँटा हुआ है। इस प्रकार, सम्राट चौधरी की ओबीसी वोट बैंक में सफलता उनके कुशवाहा जातीय आधार, संगठनात्मक भूमिका, और भाजपा की रणनीतिक फोकस का प्रतिफल है, जो बिहार की जातीय राजनीति में एक निर्णायक कारक है।

भाजपा के भीतर सम्राट चौधरी का बढ़ता असर
यह ठीक है कि सम्राट चौधरी का भाजपा के भीतर वर्तमान में मध्यम स्तर का असर है, लेकिन अब उन्होंने इसमें भी इजाफा कर लिया है। विधानसभा में भाजपा विधायक दल द्वारा उन्हें पुनः नेता चुना जाना इसी बात का द्योतक है।उनकी भविष्य की राजनीतिक संभावनाएं अच्छे संगठनात्मक कौशल, ओबीसी वोट बैंक से जुड़ी पकड़ और भाजपा की रणनीतिक आवश्यकताओं के आधार पर महत्वपूर्ण हैं। सम्राट चौधरी पार्टी के ओबीसी वर्ग का प्रमुख चेहरा हैं, विशेषकर कुशवाहा (कोइरी) समुदाय में उनकी पकड़ मजबूत है, जो बिहार में भाजपा का एक महत्वपूर्ण वोट बैंक है। हालांकि वे पार्टी के मुख्य संगठनिक नेतृत्व या शीर्ष पदों पर नहीं हैं, फिर भी उनकी भूमिका पार्टी के जातीय समीकरण संवारने में केंद्रीय है। उनकी आक्रामक राजनीतिक शैली और संगठनात्मक क्षमता ने पार्टी में उनकी स्थिति मजबूत करने में मदद की है, लेकिन पार्टी के सघन विचारधारा और संघ से जुड़ी मुख्य धारा में उनकी सीमित स्वीकार्यता भी है।

सम्राट चौधरी में छिपीं भविष्य की राजनीतिक संभावनाएँ
भाजपा के लिए सम्राट चौधरी की राजनीतिक संभावनाएं बेहतर हैं क्योंकि बिहार की जातीय राजनीति में ओबीसी वोट बैंक बढ़ाने के लिए उनकी भूमिका अहम है। भाजपा की रणनीति में ₹लव-कुश₹ समीकरण को मजबूत करने के लिए उनकी मौजूदगी जरूरी है। गठबंधन राजनीति में उनका प्रभाव सहयोगी दलों के बीच भाजपा को सामंजस्यित करने में उपयोगी हो सकता है। मोदी-शाह के नेतृत्व वाली भाजपा में जीतने की क्षमता और ओबीसी प्रतिनिधित्व के कारण उन्हें आगे के बड़े नेतृत्व पदों के लिए मौका मिल सकता है। हाल के विधानसभा चुनावों में उनकी जीत ने पार्टी के लिए उनकी उपयोगिता सिद्ध की है।

सम्राट चौधरी की संभावित सियासी चुनौतियाँ
जातीय एवं वैचारिक आधार पर पार्टी के अन्य सदस्यों से संघर्ष और स्वीकार्यता की कुछ कमी है, जिसे पूरा करने के लिए वे ततपर हैं। वहीं, भाजपा की केंद्रीय संगठनात्मक प्राथमिकता में बदलाव और नए चेहरों के उदय से उनके ऊपर भी चौतरफा दबाव बना रहेगा। लिहाजा, बिहार में गठबंधन समीकरण और राजनीतिक परिवर्तनों में अप्रत्याशित बदलाव भविष्य में उनके प्रभाव को सीमित कर सकते हैं। बावजूद इसके, सम्राट चौधरी भाजपा के भीतर एक महत्वपूर्ण ओबीसी चेहरे के रूप में उभर रहे हैं, जिनकी भविष्य की संभावनाएं उनके समुदाय के समर्थन, संगठनात्मक भूमिका और पार्टी की रणनीतिक जरूरतों पर निर्भर हैं। यदि वे अपने संगठनिक प्रभाव को और मजबूत करते हैं, तो वे बिहार में पार्टी के अगले स्तर के नेतृत्व में स्थान पा सकते हैं।

वरिष्ठ पत्रकार व राजनीतिक विश्लेषक

उठना प्रधानमंत्री से विश्वास : विष्णु नागर प्रधानमंत्री के 'असाधारण नेतृत्व' में सुभाष ने सुबह नौ बजकर बत्तीस मिनट पर बिस्तर छोड़ा....

उठना प्रधानमंत्री से विश्वास : विष्णु नागरप्रधानमंत्री के 'असाधारण नेतृत्व' में सुभाष ने सुबह नौ बजकर बत्तीस मिनट पर बिस्तर छोड़ा, जबकि नरसों, परसों और कल रात भी उसने यह दृढ़ संकल्प किया था कि चाहे सूरज पश्चिम से निकलने लगे, मगर वह सात बजे जागकर दुनिया को चकित कर देगा। मगर उसे पता चला कि दुनिया चकित होने के लिए तैयार नहीं है, तो वह सोता रहा।पिछले तीन दिनों देर से जागने का उसे अफसोस-सा था, मगर तभी उसे याद आया कि प्रधानमंत्री की तो सबसे बड़ी खूबी यह है कि उन्हें किसी बात का अफसोस नहीं होता। प्रधानमंत्री के सबल नेतृत्व के प्रभाव से उसने भी निश्चय किया कि वह भी किसी बात का अफसोस नहीं करेगा । उसके शब्दकोश से 'अफसोस' शब्द पलायन कर गया, जिसका उसे कोई अफसोस नहीं था !प्रधानमंत्री के नेतृत्व में पूर्ण आस्था रखते हुए उसने बिस्तर से उठने के प्रयास किया, मगर उसे सफलता नहीं मिली। वह काफी देर तक यूं ही पड़ा रहा, लेकिन उसकी नींद उड़ चुकी थी, तो मन मारकर पंद्रह मिनट 26 सेकंड बाद उसे उठना पड़ा। प्रधानमंत्री के संपूर्ण स्वदेशी के आह्वान का सम्मान करते हुए उसने विको वज्रदंती टूथपेस्ट से ब्रश किया। उसने सोचा कि स्वदेशी प्रेम जिन प्रधानमंत्री जी में कभी सोता, कभी ऊंघता और कभी जागता रहता है, क्या वह भी इसी टूथपेस्ट से ब्रश करते होंगे? फिर उसे अपनी बुद्धि पर हंसी आई कि वे प्रधानमंत्री हैं, साधारण लोगों के इस देसी टूथपेस्ट का इस्तेमाल करना उनकी आन- बान और शान के खिलाफ है। पद की गरिमा के विरुद्ध है, जिसे साधारण ब्रश और साधारण टूथपेस्ट का प्रयोग कर खंडित नहीं होने दिया जा सकता ! अवश्य वह किसी विदेशी टूथपेस्ट और टूथब्रश से ही दांत साफ करते होंगे !प्रधानमंत्री के सशक्त नेतृत्व में उसने चाय बनाई, मगर वह इतनी अधिक सशक्त बन गई कि बेस्वाद हो गई।उसके मन में एक क्षण के लिए यह खयाल आया कि कहीं इसका कारण प्रधानमंत्री के नेतृत्व का कमजोर होना तो नहीं है, जिसकी खबरें इधर तेजी से उड़ लगी हैं ! इस आशंका को निर्मूल करने के लिए उसने ग्लूकोज के दो बिस्कुट लिये और चाय पी, तो स्वादहीनता में भी स्वाद आया। उसे यह खयाल आने लगा कि प्रधानमंत्री तो एक भी दिन बेस्वाद चाय नहीं पीते होंगे और किसी दिन ऐसी चाय उनके सामने आती होगी, तो कप समेत वह फेंक देते होंगे, क्योंकि वह मजबूत प्रधानमंत्री हैं और वह जानते हैं कि इस कप और इस चाय पर उनकी जेब का एक पैसा भी नहीं लगा है, जबकि वह ऐसा नहीं कर सकता। चाय की पत्ती भी उसकी, दूध भी उसका, गैस भी उसकी और बनानेवाला भी वह !फिर उसे यह भी ख्याल आया कि वह पता नहीं किस ब्रांड की चाय पीते होंगे और कौन कौन-से मसाले उसमें डलवाते होंगे? उसने एक क्षण के लिए यह भी सोचा कि चायवाले के रूप में मशहूर प्रधानमंत्री क्या सचमुच अपनी चाय खुद बनाकर पीते होंगे? फिर उसने इतने निम्न कोटि के विचार आने पर अपने कान पकड़े और मन ही मन प्रधानमंत्री से क्षमा मांगी। फिर उसे लगा कि इससे उसके पापों का प्रक्षालन नहीं होगा, इसलिए उसने अयोध्या के राममंदिर में अवस्थित भगवान श्री राम का स्मरण किया और पापं शांतम कहा !वह बेरोजगार था और अपने पूजनीय माता-पिता से खर्चे-पानी के पैसे मंगवाता रहता था। उन्होंने भी अपने एकमात्र लाड़ले सुपुत्र की इस

सेवा में कोई कमी नहीं आने दी थी, चाहे इसके लिए उन्हें उधार लेना पड़ा हो ! घर का सामान बेचना पड़ा हो ! !चाय पीकर फिर से उसका मन लेटने का हुआ, क्योंकि आज भी कुछ नया होने की उम्मीद नहीं थी। फिर इस बात का स्मरण करते हुए कि प्रधानमंत्री 18-18 घंटे काम करते हैं, उसने तत्काल पोटी जाने का काम राष्ट्रीय कर्तव्य समझकर किया। सुखद संयोग कि मई, 2014 के बाद आज पहली बार उसका पेट पूरी तरह साफ हुआ था।उसने याद करने की कोशिश की कि कल उसने ऐसा क्या खाया था कि यह चमत्कार संभव हुआ, तो याद आया कि उसने लंच और डिनर दोनों में समोसे और कचौड़ी ठूंस- ठूंस कर खाई थी। पर यह आज उसका पेट पूरी तरह साफ होने का विश्वसनीय कारण नहीं हो सकता, बल्कि इस वजह से तो पेट और ख़राब होना चाहिए था। गहन आत्मपरीक्षण के बाद उसने पाया कि इसका कोई और कारण नहीं हो सकता, सिवाय इसके कि प्रधानमंत्री ने बताया है कि भारत दुनिया की तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था बन चुका है ओर तेजी से दूसरी बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की ओर अग्रसर है।अब चूंकि अत्यंत सफलतापूर्वक जीवन का यह महत्वपूर्ण प्रातः कालीन चरण पूर्णता को प्राप्त हो चुका था, तो उसके पेट में चूहे दौड़ने लगे। थोड़ी देर में उसे लगा कि नहीं, ये चूहे नहीं, बिल्लियां हैं। इससे पहले उसे इस तरह की अनुभूति कभी नहीं हुई थी। इसका कारण उसे यह समझ में आया कि विकास की जो आंधी देश में बह रही है, उसका यह असर है कि पेट में चूहों की जगह बिल्लियों दौड़ने लगी हैं और भविष्य में इनकी जगह कुत्ते भी ले सकते हैं। वह तेजी से कदम बढ़ाते हुए पास के एक रेस्तरां में पहुंचा। पता चला कि रेस्तरां मालिक के पिता श्री का आज सुबह ही इंतकाल हुआ है। उसे क्रोध आया कि आज ही उसका पेट ऐतिहासिक रूप से साफ हुआ है और आज ही यह संकट सामने आ गया। फिर उसने प्रधानमंत्री चालीसा का पाठ किया और अगले रेस्तरां की तरफ बढ़ा। संयोग से वहां नाश्ता बढ़िया था। पता लगा कि उसका मालिक संघ का अनुशासित सिपाही है। सुभाष इससे प्रभावित हुआ और उसने पैसे देने से पहले उस अनुशासित सिपाही से बात करने की कोशिश की, मगर वह दुकानदारी में इतना व्यस्त था कि सुभाष को इसमें असफलता मिली। मौके का लाभ उठाकर वह बिना पैसे दिए नीचे उतर गया, मगर संघ का अनुशासित सिपाही होने के कारण दुकानदार, फोकटिया ग्राहकों के प्रति बहुत निर्मम था। उसने अपने एक कर्मचारी को उसके पीछे भेजा। सुभाष आने में आनाकानी करने लगा, तो वह कालर पकड़कर ले आया। मालिक की दिली इच्छा तो सुभाष को पीटने की थी, मगर व्यस्तता के चलते उसने चार मोटी गालियां दीं। पैसा वसूल किया और कहा कि अब कभी इस दुकान की सीढ़ियों पर पैर भी मत रखना, वरना साले की हड्डियां तोड़ दूंगा !इसके बाद लोग कहते हैं कि उसका प्रधानमंत्री के नेतृत्व पर से विश्वास उठ गया है।(कई पुरस्कारों से सम्मानित विष्णु नागर साहित्यकार और स्वतंत्र

विजय गर्ग

प्रदूषण से कम हो रही है धूप

प्रकाश को रोकना: ये कण सूर्य के प्रकाश को पृथ्वी की सतह तक पहुँचने से पहले ही अवशोषित कर लेते हैं या प्रतिबिंबित करके वापस अंतरिक्ष में भेज देते हैं। बादलों का निर्माण: कुछ एरोसोल कण जलवाष्प के लिए 'बीज' का काम करते हैं, जिससे बादल के छोटे-छोटे बूंदें बनती हैं। प्रदूषण के कारण ये बादल अधिक सघन और लंबे समय तक आसमान में टिके रहते हैं, जिससे आकाश लंबे समय तक ढका रहता है और धूप कम मिलती है।

धूप हमारे जीवन का आधार है—यह पौधों में प्रकाश संश्लेषण से लेकर हमारे शरीर में विटामिन-डी के निर्माण तक, हर प्राकृतिक प्रक्रिया का मूल ऊर्जा स्रोत है। लेकिन आधुनिक जीवनशैली, औद्योगीकरण और तेजी से बढ़ते प्रदूषण ने धरती तक पहुँचने वाली धूप की मात्रा को कम करना शुरू कर दिया है। वैज्ञानिक इस fenómeno को 'ग्लोबल डिमिंग' कहते हैं—यानी वातावरण में मौजूद प्रदूषक कण सूर्य की किरणों को धरती तक पहुँचने से रोक रहे हैं। यह परिवर्तन चिंताजनक है, क्योंकि धूप केवल रोशनी ही नहीं, बल्कि जलवायु, स्वास्थ्य और पारिस्थितिकी का महत्वपूर्ण घटक है।

सूर्य की रोशनी क्यों घट रही है?

सूर्य की रोशनी में कमी आने के पीछे मुख्य रूप से वायुमंडल में मौजूद एरोसोल नामक सूक्ष्म कण जिम्मेदार हैं।

एरोसोल की भूमिका: एरोसोल हवा में तैरते हुए छोटे कण होते हैं, जो फैक्ट्रियों के धुएं, जलते बायोमास (लकड़ी-कोयला) और वाहनों के प्रदूषण से उत्पन्न होते हैं।

प्रकाश को रोकना: ये कण सूर्य के प्रकाश को पृथ्वी की सतह तक पहुँचने से पहले ही अवशोषित कर लेते हैं या प्रतिबिंबित करके वापस अंतरिक्ष में भेज देते हैं।

बादलों का निर्माण: कुछ एरोसोल कण जलवाष्प के लिए 'बीज' का काम करते हैं, जिससे बादल के छोटे-छोटे बूंदें बनती हैं। प्रदूषण के कारण ये बादल अधिक सघन और लंबे समय तक आसमान में टिके रहते हैं, जिससे आकाश लंबे समय तक ढका रहता है और धूप कम मिलती है।

'स्मॉग' (धुंध) की परत: विशेष रूप से सर्दियों के मौसम में, शांत हवाओं और कम तापमान के कारण प्रदूषण के कण वायुमंडल की निचली परत में जमा हो जाते हैं, जिससे धुंध की एक मोटी चादर बन जाती है। यह चादर सूर्य की किरणों को जमीन तक पहुँचने से रोकती है।

वैज्ञानिक अध्ययनों से पता चला है कि भारत के अधिकांश क्षेत्रों में, खासकर उत्तर भारत के मैदानी इलाकों में, धूप के घंटों में सबसे अधिक गिरावट दर्ज की गई है।

सोलर डिमिंग के गंभीर परिणाम

धूप की कमी मानव स्वास्थ्य और पर्यावरण दोनों के लिए खतरनाक है:

स्वास्थ्य पर असर (विटामिन डी की कमी): धूप, विटामिन डी का सबसे महत्वपूर्ण प्राकृतिक स्रोत है। धूप की कमी से लोगों में विटामिन डी की कमी होने लगी है, जिससे हड्डियां कमजोर होती हैं और प्रतिरोधक क्षमता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

मानसिक स्वास्थ्य: कम धूप से नींद संबंधी विकार और मनोवैज्ञानिक समस्याएं बढ़ सकती हैं।

कृषि और जलवायु: सूर्य के प्रकाश में कमी आने से पौधों द्वारा किए जाने वाले प्रकाश संश्लेषण की प्रक्रिया प्रभावित होती है, जिससे फसलों की पैदावार पर असर पड़ सकता है। इसके अलावा, सोलर डिमिंग क्षेत्रीय जलवायु पैटर्न को भी प्रभावित कर सकता है।

ऊर्जा पर प्रभाव: सौर ऊर्जा उत्पादन पर भी इसका सीधा असर पड़ता है, क्योंकि कम धूप का मतलब है कम बिजली उत्पादन।

समाधान की आवश्यकता

इस चिंताजनक समस्या से निपटने के लिए, वायु प्रदूषण के स्रोतों पर नियंत्रण रखना अत्यंत आवश्यक है:

जीवाश्म ईंधन का कम उपयोग: औद्योगिक उत्सर्जन और वाहनों से निकलने वाले धुएं को नियंत्रित करने के लिए सख्त नियमों का पालन करना और स्वच्छ ऊर्जा स्रोतों (जैसे सौर और पवन ऊर्जा) की ओर बढ़ना।

बायोमास दहन पर रोक: पराली जलाने जैसी गतिविधियों पर प्रभावी ढंग से रोक लगाना।

सार्वजनिक परिवहन का उपयोग: निजी वाहनों का उपयोग कम करके सार्वजनिक परिवहन और इलेक्ट्रिक वाहनों को बढ़ावा देना।

जन-जागरूकता: लोगों को प्रदूषण के खतरों और धूप के महत्व के बारे में जागरूक करना।

धूप का कम होना हमें यह याद दिलाता है कि वायु प्रदूषण का प्रभाव केवल श्वसन तंत्र तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह हमारे पूरे पर्यावरण और स्वास्थ्य चक्र को प्रभावित कर रहा है। स्वस्थ जीवन और उज्जवल भविष्य के लिए हमें तुरंत कदम उठाने की आवश्यकता है।

1. धूप कम होने के पीछे असली कारण

धूप के धरती तक पहुँचने में कमी के मुख्य कारण वातावरण में बढ़ते हुए प्रदूषक तत्व हैं:

(क) एरोसोल कण

वाहनों, फैक्ट्रियों, जलते कूड़े-कचरे, डीज़ल इंजन और पॉवर प्लांट से निकलने वाले सूक्ष्म कण—पीएम2.5 और पीएम10—सूर्य की किरणों को छितरा देते हैं।

जितने अधिक कण हवा में होंगे, उतनी ही कम प्रत्यक्ष धूप ज़मीन तक पहुँचेगी।

(ख) सल्फेट और कार्बन कण

सल्फर डाइऑक्साइड, नाइट्रोजन ऑक्साइड और ब्लैक कार्बन सूर्य की ऊर्जा को अवशोषित करके वातावरण को गर्म करते हैं, लेकिन धरती तक धूप की मात्रा कम कर देते हैं। यह दोहरा खतरा है।

(ग) धुंध और स्मॉग

सर्दियों में बनने वाला स्मॉग सूर्य की रोशनी को परावर्तित कर देता है। इससे दिन में भी आसमान धुँधला दिखाई देता है और धूप कम मिलती है।

2. धूप कम होने के व्यापक प्रभाव

(1) मानव स्वास्थ्य पर असर

विटामिन डी की कमी: कम धूप के कारण बच्चों, गर्भवती महिलाओं और बुजुर्गों में इसकी कमी बढ़ रही है।

थकान और अवसाद: पर्याप्त सूर्य प्रकाश न मिलने से शरीर की जैव-घड़ी प्रभावित होती है।

प्रतिरोधक क्षमता कमजोर: धूप रोग प्रतिरोधक कोशिकाओं को सक्रिय करती है।

(2) कृषि पर दुष्प्रभाव

धूप कम होने से फसलों की उत्पादकता घटती है।

प्रकाश संश्लेषण कमजोर पड़ जाने से गेहूं, चावल और सब्जियों की वृद्धि प्रभावित होती है।

फलों में मिठास और पोषक मूल्य भी कम हो सकता है।

(3) जलवायु परिवर्तन की गति बढ़ रही है

कम धूप धरती को तो ठंडा करती है, लेकिन वातावरण में प्रदूषक गर्मी फँसाकर ग्लोबल वार्मिंग को बढ़ाते हैं।

यह असंतुलन मौसम पैटर्न, बारिश और तापमान में बदलाव पैदा करता है।

(4) सौर ऊर्जा पर असर

धूप में कमी से

सोलर पैनलों की क्षमता घटती है

ऊर्जा उत्पादन कम होता है

साफ ऊर्जा पर आधारित योजनाएँ प्रभावित होती हैं

3. शहरों में धूप क्यों सबसे ज्यादा कम हो रही है?

बहुमंज़िला इमारतें

बढ़ता ट्रैफिक

औद्योगिक उत्सर्जन

खेतों की जगह कंक्रीट

कचरा जलाने की समस्या

यह सभी कारण मिलकर शहरी क्षेत्रों में धूप की मात्रा को लगातार कम कर रहे हैं।

4. समाधान: धूप वापस लाने के रास्ते

(1) वायु गुणवत्ता में सुधार

शहरों में प्रदूषक उत्सर्जन कम करने के सख्त नियम

बसों और वाहनों में इलेक्ट्रिक विकल्प

औद्योगिक प्रदूषण पर निगरानी

(2) धूल-धुएँ को कम करने के लिए प्रबंधन

कचरा जलाने पर रोक

निर्माण स्थलों पर धूल नियंत्रण

हरित कवर बढ़ाना

(3) शहरी नियोजन में सुधार

खुले स्थान, पार्क और हरित पट्टियाँ

इमारतों की ऊँचाई का संतुलन

सौर ऊर्जा वाले शहरों की योजना

(4) व्यक्तिगत स्तर पर योगदान

वाहन कम से कम चलाना

पौधे लगाना

कचरा न जलाना

घरों में सोलर पैनल अपनाना

5. निष्कर्ष

धूप कम होना केवल आकाश का धुँधला होना नहीं है; यह प्रकृति का चेतावनी संकेत है कि मानव गतिविधियाँ संतुलन बिगाड़ रही हैं। धूप जितनी घटेगी, हमारा स्वास्थ्य, कृषि, ऊर्जा और पर्यावरण उतना ही प्रभावित होगा।

प्रदूषण को नियंत्रण करना सिर्फ विकल्प नहीं, बल्कि भविष्य की पीढ़ियों के लिए अनिवार्य जिम्मेदारी है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

पत्रिका में बचपन के लिए जगह क्यों नहीं है? - डॉ. विजय गर्ग

आजकल की पत्रिकाएँ पढ़ते हुए ऐसा लगता है मानो बचपन कहीं पीछे छूट गया हो। हर पन्ना, हर कॉलम, हर विषय—सब कुछ बड़ों की दुनिया में खो गया है। फ़ैशन, फ़िटनेस, करियर, गैजेट्स, राजनीति, रिश्ते—बचपन से जुड़े मुद्दे भीड़ में दब गए हैं। सवाल यह है कि पत्रिकाओं में बचपन के लिए जगह कम क्यों है?

विपणन पर व्यावसायिक दबाव

पत्रिकाओं का मुख्य लक्षित पाठक वयस्क होते हैं क्योंकि वे इन्हें खरीद सकते हैं। विज्ञापन के मामले में भी, बच्चों के मुद्दों को कम प्राथमिकता दी जाती है। नतीजतन, बचपन की ज़रूरतों, मुश्किलों या खुशियों पर आधारित कहानियाँ जगह नहीं बना पातीं।

तेज रफ्तार दुनिया में बचपन 'ट्रेंड से बाहर'

आज की सामाजिक मानसिकता तेज़, प्रखर और प्रतिस्पर्धी है। पत्रिकाएँ भी इसी दौड़ को दर्शाती हैं। बचपन की मासूमियत, खेल, कहानियाँ, अनुभव सब कुछ 'धीमी सामग्री' कहकर नज़रअंदाज़ कर दिया जाता है।

वयस्क चिंताओं की अधिकता

पत्रिकाएँ आजकल के वयस्कों की चिंताओं से भरी पड़ी हैं—तनाव, करियर का दबाव, रिश्ते, स्वास्थ्य, वैश्विक मुद्दे। इस बोझ तले बचपन की खुशबू खो जाती है। मानो बचपन की कहानियाँ कोई मायने ही नहीं रखतीं।

डिजिटल ने बच्चों की दुनिया पर कब्ज़ा कर लिया है।

बच्चों के लिए सामग्री अब यूट्यूब, ऐप्स या एनिमेटेड प्लेटफ़ॉर्म पर आ गई है। पत्रिकाओं ने मान लिया है कि बच्चों की यह पीढ़ी अख़बार के पन्ने नहीं खोलती। इसी ग़लतफ़हमी के चलते उन्होंने बच्चों के लिए सामग्री कम कर दी है।

बचपन के विषयों को 'गंभीर' नहीं माना जाता

पत्रिकाओं में यह भ्रम फैलाया जाता है कि बच्चों से जुड़े विभिन्न विषय—जैसे मनोविज्ञान, बाल सुरक्षा, रचनात्मकता, खेल और कहानियाँ—गंभीर नहीं हैं। लेकिन हकीकत में, यही वे विषय हैं जो समाज के भविष्य को आकार देते हैं।

लेकिन बचपन की अनुपस्थिति एक मौन खतरा है।

जब पत्रिकाओं से बचपन गायब हो जाता है, तो हम उस पीढ़ी के सवालों को भूल जाते हैं जो कल के समाज का निर्माण करेगी। उनकी मनोवैज्ञानिक ज़रूरतें, सुरक्षा, रचनात्मकता, सीखने की क्षमता - ये सब मीडिया के उपभोग में गायब होने लगते हैं।

क्या परिवर्तन की जरूरत है?

✓ पत्रिकाएँ बचपन से फिर से जुड़ेंगी

बच्चों की कहानियों, विज्ञान कोना, मनोविज्ञान और पालन-पोषण को भी प्राथमिकता दी गई।

✓ मासूमियत और रचनात्मकता को महत्व दें

बचपन सिर्फ़ चॉकलेट, कार्टून और खिलौनों तक सीमित नहीं है। यह एक रस्म है, भविष्य की एक तस्वीर है।

✓ बचपन को एक 'महत्वपूर्ण' विषय माना जाना चाहिए

मीडिया की यह जिम्मेदारी है कि वह समाज की सबसे युवा आवाज को भी स्वीकार करे।

अंत में...

पत्रिकाओं में बचपन के लिए जगह की कमी सिर्फ़ एक संपादकीय फ़ैसला नहीं है—यह एक सामाजिक चलन का संकेत है। जहाँ हम अपनी ही चिंताओं में उलझे रहते हैं, और भविष्य की चमक को पीछे छोड़ देते हैं। अगर मीडिया बचपन की बात नहीं करेगा, तो समाज उस मासूम उम्र की अहमियत कब समझेगा?

सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य शैक्षिक स्तंभकार मलोट पंजाब

संसाधनों की सीमा

डॉ. विजय गर्ग

विकास की बेलगाम दौड़ में आज मनुष्य एक ऐसी स्थिति में आ खड़ा हुआ है, जहां आने वाले समय में उसके सामने खत्म होते प्राकृतिक संसाधनों का भीषण संकट उत्पन्न होने वाला है। यह संसाधनों के अति दोहन का ही परिणाम है कि हम आने वाली पीढ़ियों के लिए एक ऐसी अभावग्रस्त और संकटपूर्ण दुनिया सौंपने की कगार पर हैं, जिसमें कहीं जल संकट होगा तो कहीं प्राकृतिक संसाधनों के अति दोहन से उपजी प्रकृति प्रदत समस्याएं, जैसे वनों के अतिदोहन से हुई पेड़ों की कमी और उसके परिणामस्वरूप मौसम और मानसून चक्र में परिवर्तन, नदियों का सूखना एवं दूषित होना, भूमि के दोहन से उपजी भूमि की उर्वरहीनता आदि।

इन सारी समस्याओं की जड़ में प्रमुख है, आवश्यकता से अधिक चीजों का उपयोग करना। यानी हम अपनी आवश्यकता को बिना सोचे-समझे ही अपने घर और जीवन में चीजों का अंबार लगाते जा रहे हैं। नतीजतन, संसाधनों पर दबाव बढ़ता ही जा रहा है। कभी हमारे पास कुछ सीमित संख्या में कपड़े, बर्तन, फर्नीचर, इलेक्ट्रोनिक उपकरण आदि होते थे, आज हमारी आलमारियां, रसोई, कमरे सब भरे पड़े रहते हैं। फिर भी हमें जरूरत न होने पर भी चीजों को खरीदने में कोई हिचक नहीं होती। कभी रियायती प्रस्ताव वाले 'सेल' लगे होते हैं, कभी 'कैश बैक' के लालच में पड़कर और कभी दूसरों के पास किसी चीज को देखकर हम बस खरीदते ही रहते हैं। इस प्रकार, घर सामानों और कपड़ों से भर जाता है। प्रति व्यक्ति खपत न केवल संसाधनों पर दबाव बढ़ाता है, बल्कि उससे ग्रीनहाउस गैसों में भी वृद्धि होती है और अन्य पर्यावरणीय कारक भी बुरी तरह प्रभावित होते हैं।

जब तक हम अपनी आवश्यकताओं को नहीं समझेंगे और बिना सोचे-समझे केवल लोगों को देखकर या आकर्षक प्रस्ताव के लालच में पड़कर चीजें 'बटोरते रहेंगे, तब तक संसाधनों का उचित उपयोग संभव नहीं हो पाएगा। हर व्यक्ति की नैतिक जिम्मेदारी होती है कि वह इस भावना से काम करे कि 'विश्व का कल्याण हो'। हम इस विश्व के एक अंश के समान हैं और हमें अपने अंश के कर्तव्यों को समझना होगा। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि हमारा इस पृथ्वी के लिए जो कर्तव्य है, वह उचित तरीके से निर्वहन हो। हम अपनी आवश्यकताओं को सीमित कर सकते हैं। उसके लिए हमें मानसिक रूप से दृढ़ होना होगा। क्या आवश्यक है और क्या आवश्यक नहीं है, उसमे भेद करके स्वयं को प्रशिक्षित करना होगा। आज के दौर में एक क्लिक पर सारी चीजें उपलब्ध हैं। यह आसानी से उपलब्ध होना ही कहीं हमें अतिभौतिकवादी तो नहीं बनाती जा रही है, इस पर भी गौर करने की आवश्यकता है। खुद को रोकना होगा, ताकि हम अपनी आने वाली पीढ़ियों के लिए कहीं एक अभावग्रस्त दुनिया छोड़ कर न जाएं। हमें यह भी धारण करना होगा कि हम अपने हिस्से के दायित्वों का अच्छी तरह से निवर्हन करें। कभी यह न सोचें कि एक मेरे ही जागरूक होने से क्या ही बदल जाएगा।

हमें जीवन के उन मूल्यों को भी समझना होगा, जिसमें चीजों के सीमित उपयोग को बढ़ावा दिया जाता है। इस भाव को अपनाकर हम कम से कम में जीवन जीने की कला सीख सकते हैं। हम इस भाव से भी मुक्त हो जाएंगे कि चीजों को बटोरने मात्र से ही जीवन सुखमय हो सकता है। आज मनुष्य एकाकी होता जा रहा है और चीजें उसका सहारा बनती जा रही हैं। इस तकनीकी युग में भौतिकवाद पहले से कहीं अधिक प्रबल है। समाज में दिखावे की भी प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। इस दिखावे की प्रवृत्ति ही कहीं न कहीं चीजों को बटोरने की प्रवृत्ति का विकास कर रही है। पहले घरों में एक टेलीविजन होता था और पूरा परिवार साथ मिलकर देखता था, लेकिन आज हर घर में एक से अधिक टेलीविजन, हर हाथ में टीवी का काम करने वाले स्मार्टफोन, रेफ्रीजरेटर, कार आदि उपलब्ध हैं। इससे प्रति व्यक्ति खपत में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है, जिससे संसाधनो पर दबाव बढ़ रहा है। बाजारीकरण के इस दौर में लोक- लुभावन प्रचार हमारी खरीदने की प्रवृत्ति में आग में घी का काम कर रहे। कंपनियां अपने उत्पाद को बेचने के लिए अनेक हथकंडे भी अपनाती हैं, जिसमें एक के साथ एक मुफ्त, 'कैश बैक', कीमतों में कमी आदि। इस तरह के विज्ञापनों को देखकर हम आकर्षित होकर आवश्यकता न होने पर भी खरीदना शुरू कर देते हैं। इस तरह न केवल हमारा बजट बिगड़ता है, बल्कि अनावश्यक चीजों से घर भी भर जाता है। उपयोगिता भूलकर हम विज्ञापनों के झांसे में आकर लगातार बाजारीकरण और विज्ञापनों का शिकार होते रहते हैं। आज आवश्यकता है कि हर एक इंसान संसाधनों के दोहन के प्रति जागरूक हो। जब हम अपने कर्तव्यों को समझेंगे, तभी हम एक स्वच्छ और टिकाऊ विश्व की अवधारणा को साकार होते देख सकने के साक्षी होंगे। इसके साथ ही हम अपनी आने वाली पीढ़ियों के लिए एक ऐसी दुनिया छोड़ सकेंगे, जहां उनके सामने प्राकृतिक संसाधनों की कमी नहीं होगी। भावी पीढ़ियां भी सबक लेकर प्रकृति के प्रति अपने संबंधों एवं कर्तव्यों के प्रति जागरूक रहेंगी। इस प्रकार तेजी से क्षय होते प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग लंबे समय तक मानव समाज स्वयं के लिए कर सकने में सक्षम होगा। संसाधनों की पर्याप्त उपलब्धता बने रहने से उसके दाम में भी स्थिरता बनी रहेगी और यह समाज के निचले और कम आय वाले तबके के लिए भी उपलब्ध रहेगा।

"गाँव से ग्लोबल तक: डॉ. सत्यवान सौरभ की कलम की उड़ान"

(संघर्ष, साहित्य और संवेदना, हरियाणा की माटी से निकला साहित्य का सितारा, शब्दों से समाज तक, युवा साहित्य का उगता सूरज, पंद्रह पुस्तकों का लेखन)

भारत की मिट्टी ने सदैव ऐसे रचनाकारों को जन्म दिया है जिन्होंने समाज, संस्कृति और विचारों को नई दिशा दी है। इन्हीं में एक विशिष्ट नाम है डॉ. सत्यवान सौरभ, जो अपनी लेखनी के माध्यम से हिंदी साहित्य और सामाजिक चिंतन को समृद्ध करने वाले एक प्रतिभाशाली, परिश्रमी और संवेदनशील साहित्यकार हैं। हरियाणा जैसे ग्रामीण पृष्ठभूमि से निकलकर राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाना आसान नहीं होता, लेकिन डॉ. सौरभ ने इसे अपने अदम्य आत्मबल, लगन और साहित्यिक समर्पण से संभव कर दिखाया है।

प्रारंभिक जीवन और शिक्षा

डॉ. सत्यवान सौरभ का जन्म 3 मार्च 1989 को हरियाणा राज्य के भिवानी जिले के बड़वा गाँव में हुआ। एक सामान्य ग्रामीण परिवार में जन्म लेने वाले सत्यवान सौरभ का बचपन संघर्षों से भरा रहा, लेकिन उन्होंने कभी हार नहीं मानी। बचपन से ही लेखन की ओर उनका झुकाव रहा। उन्होंने बहुत कम उम्र में अपनी साहित्यिक प्रतिभा का प्रदर्शन करना शुरू कर दिया। मात्र 16 वर्ष की आयु में जब वे कक्षा 11वीं में पढ़ रहे थे, तब उन्होंने अपना पहला काव्य संग्रह 'यादें' लिखा। यह संग्रह न केवल उनकी लेखनी की परिपक्वता को दर्शाता है, बल्कि यह भी प्रमाणित करता है कि वे प्रारंभ से ही विचारशील और रचनात्मक रहे हैं। अपनी पढ़ाई के दौरान उन्होंने कड़ी मेहनत करते हुए सरकारी सेवा में स्थान प्राप्त किया और नौकरी के साथ-साथ अपनी शिक्षा को भी जारी रखा। उन्होंने राजनीति विज्ञान में स्नातकोत्तर डिग्री प्राप्त की और बाद में पीएच.डी. के लिए पंजीकरण करवाया। यह सब उन्होंने पूर्णकालिक कार्य करते हुए और पारिवारिक जिम्मेदारियों को निभाते हुए किया, जो किसी भी साधारण व्यक्ति के लिए असाधारण बात है।

साहित्यिक रचनाएँ और शैली

डॉ. सत्यवान सौरभ की साहित्यिक रचनाएँ अत्यंत विविध और गहन हैं। उनकी रचनाएँ सामाजिक सरोकार, मानवीय संवेदनाएं, प्रकृति, बाल साहित्य, समकालीन राजनीति और संस्कृति जैसे विषयों को समेटे हुए हैं। डॉ. सत्यवान सौरभ की लेखनी संवेदना, समाज और सृजन का ऐसा अद्वितीय संगम है, जहाँ शब्द केवल अपनी उपस्थिति भर नहीं दर्ज कराते, बल्कि मन की गहराइयों को छूते हुए आत्मा तक पहुँचते हैं। वर्षों की साहित्यिक यात्रा में मेरी रचनाओं ने किसानों की पीड़ा, नारी की मौन वेदना, बच्चों की खिलखिलाहट और समाज की बदलती परछाइयों को शब्द देने का प्रयास किया है। मेरी प्रकाशित कृतियों में यादें जैसे भावनात्मक काव्य-संग्रह से लेकर तितली है ख़ामोश, कहता है कुरुक्षेत्र, दरपण में दरार और चुप्पियों की महक जैसी विविध छंद-रचनाएँ शामिल हैं, जो समाज के अंतर्मन को स्पर्श करती हैं।

बच्चों की कल्पना, नैतिकता और संवेदनशीलता को समर्पित काग़ज़ की नाव, प्रज्ञान, बाल प्रज्ञान, चलो कहानी सुनें और आधुनिक बाल पहेलियाँ जैसे बाल साहित्य ने नई पीढ़ी के निर्माण में अपनी भूमिका निभाई है। पर्यावरण और कृषि-समस्या पर केंद्रित कुदरत की पीर और खेड़ी-बाड़ी और किसानी जैसे हिंदी निबंध तथा समकालीन मुद्दों पर आधारित अंग्रेज़ी निबंध Issues and Pains मेरी वैचारिक अभिव्यक्ति को एक व्यापक आयाम देते हैं। वहीं लघुकथा संग्रह फैसला और हरियाणवी काव्य बोल म्हारी माटी मेरी मिट्टी, समाज और जीवन की विविध अनुभूतियों को शब्दों में पिरोते हैं। इन रचनाओं में भाषा की सहजता और भावों की गहराई देखते ही बनती है। दोहों के माध्यम से उन्होंने पारंपरिक हिंदी कविता की विरासत को न केवल आगे बढ़ाया बल्कि उसमें समकालीनता का रंग भी भरा।

संपादकीय लेखन और विचारधारा

सिर्फ रचनात्मक साहित्य ही नहीं, डॉ. सत्यवान सौरभ संपादकीय लेखन में भी उतने ही सक्रिय और प्रभावशाली हैं। उन्होंने समाज और राजनीति से जुड़े ज्वलंत मुद्दों पर बेबाक लेख लिखे हैं। उनके लेखों में स्पष्टता, संतुलन और विचारों की गहराई स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। उनकी कलम सिर्फ कल्पनाओं में नहीं भटकती, बल्कि ज़मीनी हकीकत से गहरे सरोकार रखती है। 'जय विजय', 'रवि वार', और 'उगता भारत' जैसी प्रतिष्ठित पत्रिकाओं और समाचार माध्यमों में उनके लेख प्रकाशित होते रहे हैं। उन्होंने बाल साहित्य के क्षेत्र में भी बेहतरीन योगदान दिया है। उनकी बाल कविताओं का राजस्थानी भाषा में अनुवाद किया गया, जो 'बाल बत्तीसी' नामक संग्रह में संकलित हैं। यह कार्य उनकी रचनाओं की भाषायी और सांस्कृतिक पहुंच को दर्शाता है।

सम्मान और पहचान

डॉ. सत्यवान सौरभ को उनके साहित्यिक योगदान के लिए कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सम्मानों से सम्मानित किया गया है। उनमें से कुछ प्रमुख सम्मान इस प्रकार हैं: पं. प्रताप नारायण मिश्र राष्ट्रीय युवा साहित्यकार सम्मान (2023) – यह सम्मान उन्हें भाऊराव देवरस सेवा न्यास, लखनऊ द्वारा उनके दोहा संग्रह 'तितली है खामोश' के लिए प्रदान किया गया। राष्ट्रीय लघुकथा संग्रह 'दमकते लम्हे' में उनकी लघुकथा 'फैसला' को देश-विदेश के 125 श्रेष्ठ लघुकथाकारों में स्थान मिला। महात्मा गांधी पुरस्कार – यह सम्मान उन्हें और उनकी पत्नी प्रियंका सौरभ को संयुक्त रूप से स्वतंत्र पत्रकारिता और साहित्य लेखन के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रदान किया गया। इन सम्मानों से यह स्पष्ट होता है कि डॉ. सौरभ की लेखनी सिर्फ साहित्यिक नहीं, बल्कि सामाजिक और राष्ट्रीय महत्व की भी है।

प्रेरणादायक संघर्ष

डॉ. सत्यवान सौरभ की जीवन यात्रा सिर्फ एक साहित्यकार की नहीं, बल्कि एक संघर्षशील युवा की प्रेरणादायक गाथा है। ग्रामीण परिवेश, सीमित संसाधन और आर्थिक संघर्षों के बावजूद उन्होंने न केवल शिक्षा प्राप्त की, बल्कि साहित्य और सेवा के क्षेत्र में अपनी सशक्त पहचान बनाई। वे न केवल खुद के लिए, बल्कि आने वाली युवा पीढ़ी के लिए एक आदर्श बनकर उभरे हैं। उनका जीवन संदेश देता है कि अगर मन में जिज्ञासा, आत्मबल और संकल्प हो तो कोई भी लक्ष्य असंभव नहीं होता।

व्यक्तित्व और दृष्टिकोण

डॉ. सौरभ का व्यक्तित्व शांत, विनम्र और विचारशील है। वे सदैव समाज में सकारात्मक परिवर्तन की बात करते हैं। उनका लेखन मानवतावाद, सहिष्णुता और सामाजिक सुधार की भावना से ओतप्रोत होता है। वे मानते हैं कि लेखक सिर्फ शब्दों का जादूगर नहीं होता, बल्कि वह समाज का मार्गदर्शक भी होता है। इसीलिए उनकी रचनाएँ सिर्फ मनोरंजन नहीं करतीं, बल्कि पाठकों को सोचने, आत्ममंथन करने और जागरूक होने के लिए प्रेरित भी करती हैं।

नवीन परियोजनाएँ और भविष्य की योजनाएँ

डॉ. सौरभ वर्तमान में कई नई साहित्यिक परियोजनाओं पर कार्य कर रहे हैं। वे बाल साहित्य को और अधिक लोकप्रिय बनाने के लिए समर्पित हैं और युवाओं में लेखन की रुचि जगाने हेतु कार्यशालाएँ और प्रेरणात्मक सत्र आयोजित करने की योजना बना रहे हैं। इसके साथ ही वे डिजिटल माध्यमों के ज़रिए साहित्य को गाँव-गाँव तक पहुँचाने के प्रयास में भी लगे हुए हैं।

निजी जीवन

डॉ. सत्यवान सौरभ का पारिवारिक जीवन भी सादगी और प्रेरणा से भरा है। उनकी पत्नी प्रियंका सौरभ स्वयं भी लेखिका और पत्रकारिता के क्षेत्र में सक्रिय हैं। दोनों मिलकर सामाजिक जागरूकता और महिला सशक्तिकरण के लिए कार्य करते हैं।

युवा साहित्य का उगता सूरज

डॉ. सत्यवान सौरभ का जीवन और साहित्यिक योगदान आज के समय में युवा पीढ़ी के लिए एक प्रेरणास्त्रोत है। उन्होंने यह सिद्ध किया है कि परिस्थितियाँ कैसी भी हों, अगर इरादे मजबूत हों और कर्म सच्चे हों, तो सफलता अवश्य मिलती है। उनकी लेखनी में समाज का दर्पण है, विचारों की गहराई है, और आने वाले कल का सपना भी। हिंदी साहित्य को एक नई ऊर्जा देने वाले इस युवा साहित्यकार का योगदान आने वाले समय में और भी महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।

आतंकवाद का नया चेहरा बेहद घातक है

राजेश कुमार पासी

10 नवंबर को दिल्ली में हुए बम विस्फोट ने पूरे देश को आतंकित किया है क्योंकि ये देश आतंकवादी हमलों को लगभग भुला चुका था । जम्मू-कश्मीर के बाहर आतंकवादी पूरी कोशिश के बाद भी हमले करने में असफल हो रहे थे लेकिन 11 साल बाद आतंकवादियों को देश की राजधानी दिल्ली में आतंकवादी हमला करने में सफलता मिल गयी । 2014 से पहले भारतीयों को आतंकवादी हमलों का डर सताता रहता था लेकिन मोदी सरकार इन हमलों पर लगाम लगाने में सफल रही है । देश यह मानने लगा था कि अब आतंकवादी हमले सिर्फ जम्मू-कश्मीर में ही होते हैं । यही कारण है कि जब सुरक्षा एजेंसियों ने फरीदाबाद से विस्फोटक बरामद किए तो कहा गया कि ये तो खाद बनाने में इस्तेमाल होने वाला पदार्थ है । मोदी विरोधी लोगों ने यह भी विमर्श चलाने की कोशिश की कि यह मुस्लिमों को सताने का एक नया तरीका है । इस आतंकवादी मॉड्यूल में डॉक्टर पकड़े गए थे, इसलिए भी सरकार को निशाना बनाया जा रहा था । जब दिल्ली में इसी मॉड्यूल ने आतंकवादी हमला कर दिया तो देश को पता चला कि विस्फोटक खाद बनाने के लिए नहीं थे । ये भी अजीब बात है कि डॉक्टर खाद बनाने में इस्तेमाल होने वाले पदार्थों का क्यों संग्रह कर रहे थे, इसका भी विचार नहीं किया जा रहा था ।

आतंकवादी हमले को लेकर सुरक्षा एजेंसियों पर सवाल खड़े किए जा रहे हैं, लेकिन कोई यह सोचने को तैयार नहीं है कि उनकी सतर्कता के कारण ही हजारों लोगों की जान बच गई है । आतंकवादियों की तैयारी तो हजारों लोगों की जान लेने की थी लेकिन समय रहते सुरक्षा एजेंसियों ने साजिश का खुलासा कर दिया । गुजरात में राईसिन के जहर से लाखों लोगों को मारने की साजिश की जा रही थी, उसे भी हमारी गुप्तचर एजेंसियां नाकामयाब करने में सफल रही हैं । बेहद घातक इस जहर को अगर सार्वजनिक जल सप्लाई में मिला दिया जाता तो हजारों लोगों की जान जाने के बाद साजिश का पता चलता । फरीदाबाद में पकड़े गए विस्फोटकों से 50 से ज्यादा बड़े बम धमाके किए जा सकते थे । देखा जाए तो सुरक्षा एजेंसियों ने देशहित में बड़ा काम किया है लेकिन उनकी आलोचना हो रही है क्योंकि आतंकवादी एक हमला करने में सफल हो गए हैं । यही सुरक्षा एजेंसियों की सबसे बड़ी समस्या है कि उन्हें हर बार सफल होना पड़ता है लेकिन आतंकवादियों को सिर्फ एक मौका चाहिए होता है । ये मौका उन्हें दिल्ली में मिल गया लेकिन एक सच यह है कि सुरक्षा बलों के दबाव के कारण ये हमला जल्दबाजी में किया गया था ।

इस आतंकवादी साजिश में डॉक्टर जैसे सम्मानित पेशे में काम करने वाले लोग शामिल है, इसलिए सुरक्षा बलों की समस्या को समझने की जरूरत है । अगर इन पर हाथ डालने के बाद पुलिस को कुछ नहीं मिलता तो पूरे देश के मुस्लिम, वामपंथी और सेकुलर बुद्धिजीवी उसके पीछे पड़ जाते । हमें अपनी पुलिस व्यवस्था की तारीफ करनी चाहिए कि उसकी सतर्कता के कारण हजारो लोग अपने परिवार के साथ जिंदा हैं । पूरा विपक्ष और उसका इको सिस्टम वर्षों से यह नैरेटिव चला रहा है कि गरीबी और अनपढ़ता के कारण मुस्लिम समाज के युवा आतंकवादी बनते हैं ।

बेरोजगारी को भी इसका बड़ा कारण माना जाता है लेकिन ये नैरेटिव चलाने वाले लोग भूल जाते हैं कि यह समस्या तो गैर-मुस्लिम समाज के युवाओं के लिए भी परेशानी का सबब है । इसका जवाब उनके पास नहीं है कि इन समस्याओं के कारण सिर्फ मुस्लिम समाज के युवा ही क्यों आतंकवाद के रास्ते पर जाते हैं । अब भारत में नया आतंकवाद सिर उठा रहा है जिसमें डॉक्टर, इंजीनियर, अध्यापक और दूसरे उच्च-शिक्षित लोग शामिल हैं । इन लोगों ने आतंकवादी बनकर बता दिया है कि वास्तविक समस्या से ध्यान हटाया जा रहा है । वास्तव में आतंकवाद के लिए इस्लाम और उसकी कट्टरवादी विचारधारा जिम्मेदार है जो कि आत्मघाती हमलावर डॉक्टर उमर के वीडियो से भी साबित होती है । इस्लामिक कट्टरता आतंकवादी बनने की पहली सीढ़ी है, इसके बाद ही आतंकवाद का रास्ता शुरू होता है । मुस्लिम समाज की जिम्मेदारी है कि वो इस कट्टरता के खिलाफ खड़ा हो ।

समस्या यह है कि मुस्लिम समाज विपरीत दिशा में जा रहा है, वो आतंकवादियो और आतंकवाद का बचाव कर रहा है । समस्या से भागने से कुछ नहीं होता, उसका समाधान करने की जरूरत है । दिल्ली बम विस्फोट में तीन मुस्लिम भी मारे गए हैं क्योंकि बम को नहीं पता कि मरने वाले का धर्म क्या है । आतंकवादी दीवाली, राममंदिर और काशी विश्वनाथ को निशाना बनाना चाहते थे । अगर वो कामयाब हो जाते तो देश में कैसी आग लगती, इसका अंदाजा लगाना भी मुश्किल है । अगर विपक्ष और मुस्लिम समाज चाहता है कि देश में शांति और भाईचारा बना रहे तो आतंकवाद की जड़ को खत्म करने में देश की मदद करे । दिल्ली में आत्मघाती हमला करके विस्फोट करने वाले आतंकवादी डॉ उमर ने एक वीडियो बनाया था, जो कि अब सामने आ गया है । हमारे देश के सेक्युलर और वामपंथी बुद्धिजीवी आतंकवाद और आतंकवादियों का मुस्लिम बुद्धिजीवियों से भी ज्यादा बचाव करते हैं । डॉक्टर उमर ने वीडियो में स्पष्ट रूप से कहा है कि वो इस्लाम के लिए जान दे रहा है क्योंकि जिहाद में जान देना इस्लाम में जन्नत जाने का रास्ता है । उसने कहीं नहीं कहा कि वो गरीबी, बेरोजगारी या अत्याचार के कारण जान दे रहा है । उसने कोशिश की, कि उसके हमले में ज्यादा से ज्यादा लोग मारे जाएं । उसने इस्लाम के लिए जान दी है और लोगों की जान ली है ।

डॉ उमर का वीडियो बड़े खतरे की ओर इशारा करता है जिसे पूरे देश को समझना होगा कि एक उच्च-शिक्षित व्यक्ति भी कैसे आतंकवाद के रास्ते पर जा सकता है । ऐसे व्यक्ति को समझाया भी नहीं जा सकता क्योंकि उसने अपनी एक समझ पैदा की है जिसे मिटाना बहुत मुश्किल होता है । वो अपने वीडियो में न केवल आतंकवादी हमले को जायज ठहरा रहा है बल्कि यह भी कह रहा है कि यह हमला इस्लामी मान्यताओं के अनुसार सही है । वो आत्मघाती हमलों को गैर-इस्लामी घोषित करने को गलत करार दे रहा है । क्या हम नहीं जानते हैं कि दुनिया भर में आतंकवादी संगठन आत्मघाती हमलों को जायज बताते हैं और इसे जिहाद से जोड़ते हैं । यही कारण है कि पूरी दुनिया में आत्मघाती हमले बढ़ते जा रहे हैं । भारत में आत्मघाती हमले बहुत कम हुए हैं, लेकिन अब जो आतंकी मॉड्यूल पकड़े जा रहे हैं, उनका इरादा कई आत्मघाती हमलों का अंजाम देने का था । इसके लिए वो ऐसे लोगों की भर्ती कर रहे थे जिन्हें आत्मघाती हमले के लिए तैयार किया जा सके । जो मुस्लिम संगठन और विद्वान आतंकवाद के खिलाफ काम कर रहे हैं, उनके लिए बड़ी मुश्किल खड़ी होने वाली है क्योंकि अब उच्च-शिक्षित युवा आतंकवादी बन रहे हैं ।

अब यह भी नहीं कहा जा सकता कि ये भटके हुए नौजवान हैं । कम पढ़े-लिखे युवाओं को समझाना फिर भी संभव है लेकिन उच्च-शिक्षित युवाओं को समझाना मौलानाओं के लिए भी आसान नहीं होगा । वो इस्लाम को अच्छी तरह समझते हैं और उन्होंने अपनी एक मान्यता बना ली है, इसलिए इन्हें सही रास्ते पर लाना लगभग असंभव काम है । ऐसे लोग न केवल खुद आतंकवादी बनते हैं बल्कि बहुत जल्दी अपने साथ और लोगों को भी जोड़ने में सफल हो जाते हैं । इनका मुकाबला करना सुरक्षा एजेंसियों के लिए आसान नहीं होने वाला है क्योंकि ऐसे लोग समाज में ऐसे घुले-मिले होते हैं कि इन पर संदेह करना भी मुश्किल होता है । अगर श्रीनगर पुलिस ने अपने इलाके में लगे पोस्टरों को गंभीरता से नहीं लिया होता तो ये आतंकी मॉड्यूल पकड़े नहीं जाते । इनका पता तब चलता जब ये अपनी साजिश को सफल करने में कामयाब हो जाते । ऐसे पोस्टर जम्मू-कश्मीर में लगाना आम बात है, इसके बावजूद पुलिस ने इसे गंभीरता से लिया और इसमें शामिल लोगों को ढूंढने की कोशिश की जिसके कारण एक बड़ी साजिश का भंडाफोड़ हो गया । पहलगाम आतंकी हमले के बाद दिल्ली हमले ने बता दिया है कि ऐसे हमलों में स्थानीय लोगों की मदद शामिल होती है । पहलगाम में आतंकियों को स्थानीय लोगों ने मदद दी थी, जिसके कारण वो हमला करने में सफल रहे और ऐसे ही डॉ उमर को कई लोगों ने मदद दी है, जिसके कारण वो दिल्ली को दहलाने में सफल रहा । सरकार को आतंकियों के मददगारों के साथ भी आतंकियों वाला व्यवहार करना चाहिए । आतंकवादियों और उसके मददगारों की एक ही सजा होनी चाहिए ।

डॉक्टर आतंकियों को फरीदाबाद में विस्फोटक जमा करने में इसलिए सफलता मिली क्योंकि उन्हें स्थानीय लोगों की मदद मिली थी । अल फलाह यूनिवर्सिटी जैसी संस्थाओं पर भी नजर रखनी होगी जो आतंकियों का अड्डा बन चुकी थी । इसके संचालको को बताना चाहिए कि उन्होंने अपने संस्थान को आतंकियों का अड्डा क्यों बनने दिया । अपने संस्थान में ऐसे डॉक्टर क्यों नियुक्त किए जो कि संदिग्ध थे । फरीदाबाद आतंकी मॉड्यूल में मौलवी भी शामिल पाए गए हैं जो कि आतंक का पाठ पढ़ा रहे थे । ऐसे लोगों के निटपना बेहद मुश्किल होने वाला है क्योंकि ये लोग दीन-ईमान की शिक्षा देने के साथ-साथ जिहादी आतंक का पाठ भी पढ़ाने लग जाते हैं और किसी को पता भी नहीं चलता । इस मॉड्यूल के पकड़े जाने के बाद पता चलता है कि हमारी सरकार और सुरक्षा बलों के लिए इन लोगों से निपटना बहुत मुश्किल होने वाला है ।

उच्च-शिक्षित मुस्लिम युवाओं की छानबीन करने पर विक्टिम कार्ड खेला जाएगा कि सरकार मुस्लिम समाज को परेशान कर रही है । नए आतंकवाद ने कश्मीर और शेष भारत में अलगाव पैदा कर दिया है । आतंकवादी साजिश में शामिल लोगों का संबंध कश्मीर से निकल रहा है, इसलिए शेष भारत के लोग अब कश्मीरियों को संदेह की नजर से देखेंगे । पहलगाम हमले के बाद कश्मीर में सैलानियों का जाना बहुत कम हो गया है । दिल्ली हमले के बाद अब इसमें सुधार की संभावना बहुत कम रह गई है । कश्मीरियों को खुद से सवाल पूछना चाहिए कि शेष भारत के लोग उन पर विश्वास कैसे करें । एक तरफ केंद्र सरकार कश्मीर के विकास के लिए पानी की तरह पैसा बहा रही है तो दूसरी तरफ कश्मीरी युवा आतंकवाद के रास्ते पर जा रहे हैं । अजीब बात है कि फारूक अब्दुल्ला पूछ रहे हैं कि ये लोग इस रास्ते पर क्यों जा रहे हैं । अभी उनके बेटे उमर अब्दुल्ला कश्मीर का मुख्यमंत्री हैं. इससे पहले फारूक अब्दुल्ला कई बार मुख्यमंत्री बन चुके हैं । उनके राज में ही पांच लाख कश्मीरी पंडितों को डरा धमका कर कश्मीर घाटी से भगा दिया गया था । उन्हें पूछने की जगह देश को बताना चाहिए कि क्यों उनके राज्य के युवा आतंकवाद के रास्ते पर जा रहे हैं ।

आतंकवाद के कारण देश के धार्मिक सद्भाव के लिए बड़ा खतरा उत्पन्न हो गया है । आतंकवाद का नया रूप देश की एकता और अखंडता के लिए बड़ा खतरा बनकर आया है, इसे हमें गंभीरता से लेना होगा । इसे हम सरकार के भरोसे नहीं छोड़ सकते, वो तो अपना काम कर रही है । एक समाज के रूप में हमें भी इस पर विचार करना होगा कि आतंकवादी क्यों पैदा हो रहे हैं । क्यों उच्च शिक्षित युवा कट्टरता की ओर जा रहे हैं और आत्मघाती हमलावर बन रहे हैं । आतंकवाद और आतंकवादियों का समर्थन और बचाव करने वालों की पहचान करके उन्हें भी सजा देने का इंतजाम करना होगा ।

झारखंड के किसानों को धान खरीद पर केंद्र के कलावे राज्य देगा 100 रु प्रति क्वींटल बोनस

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची , झारखंड के किसानों के लिए यह खुशखबरी है कि राज्य की सरकार किसानों को धान की खरीदी में प्रति क्विंटल सौ रुपए बोनस भी देगी. ये बोनस केंद्र सरकार के एमएसपी के अलावा होगा.

. राज्य के खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्री इरफान अंसारी ने कहा है कि सरकार किसानों को धान की खरीद का भुगतान एक बार में करेगी. इस बार खरीद प्रक्रिया 15 दिसंबर 2025 से शुरू होगी. उन्होंने कहा कि बोनस देने का प्रस्ताव तैयार है और जल्द ही कैबिनेट से मंजूरी मिल जाएगी. केंद्र ने धान खरीद सीजन 2025-26 के लिए सामान्य धान का एम एस पी 2,369 रुपये और ग्रेड-ए धान का एम एस पी 2,389 रुपये प्रति क्विंटल तय किया है. मंत्री ने कहा कि सरकार किसानों से खरीदे जाने वाले धान का भुगतान एक बार में करेगी. यह फैसला बिचौलियों से किसानों को मुक्त करने और उनकी आमदनी मजबूत करने की दिशा में एक बड़ा कदम है. उन्होंने कहा कि झारखंड में अगले 10 से 15 दिनों में धान कटाई पूरी हो जाएगी. इसी को ध्यान में रखते हुए सरकार ने खरीद की तैयारी पूरी कर ली है, जो 15 दिसंबर से शुरू होगी. राज्य में पहली बार किसानों को धान का भुगतान एक ही बार में मिलेगा. इससे पहले यह दो किस्तों में होता था और अक्सर दूसरी किस्त देर से मिलती थी, जिसके कारण किसान मजबूरी में अपना धान बिचौलियों को बेचते थे. यह घोषणा ऐसे समय में आई है जब चक्रवात मोंथा से कई जिलों में फसल को भारी नुकसान हुआ है. हजारीबाग में लगातार बारिश के कारण खेतों में पानी जमा हो गया और कटाई के लिए तैयार धान की फसल सड़ने लगी. किसानों का कहना है कि उन्हें अच्छी पैदावार की उम्मीद थी, लेकिन लगातार बारिश ने फसल और बीज दोनों को नुकसान पहुंचाया. फसल नुकसान की खबरों के बीच सरकार का बोनस और समय पर खरीद योजना किसानों के लिए राहत के तौर पर देखी जा रही है. राज्य सरकार ने फिर से कहा कि वह किसानों की मदद के लिए हर संभव कदम उठाने के लिए तैयार है.

खुद तो निकल गए, लेकिन 40 यात्रियों की जान बचा ली

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : खुद तो निकल गए, लेकिन 40 यात्रियों की जान बचा ली । . घटना तब हुई जब ओडिशा स्टेट रोड ट्रांसपोर्ट कॉर्पोरेशन की बस विशाखापत्तनम से मलकानगिरी जा रही थी। गुरुवार रात कोरापुट के पास ड्राइवर साई कृष्णा ने सीने में दर्द होने पर बस सड़क किनारे रोक दी। उन्हें कोरापुट बड़ा मेडिकल कॉलेज ले जाया गया। वहां डॉक्टर ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। मृतक ड्राइवर की सूझबूझ से 40 यात्रियों की जान बच गई ।कुंडुली के पास उन्हें सीने में दर्द महसूस हुआ। उन्होंने सूझबूझ से बस को सड़क किनारे रोककर दूसरे ड्राइवर को बताया। कर्मचारी ने एम्बुलेंस को सूचना दी। एम्बुलेंस के आने में देरी की सूचना मिलने पर रुरंत कोरापुट आए और कंडक्टर की मदद से बस को ऑटो में मेडिकल कॉलेज ले गए। वहां इलाज के दौरान ड्राइवर की मौत हो गई। बताया जा रहा है कि ड्राइवर का घर मलकानगिरी में है।

ओडिशा आपदा प्रबंधन में एक आदर्श बन गया है : मंत्री सुरेश पुजारी

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुबनेश्वर: जेंडर इक्वालिटी को बढ़ावा देने और डिज़ास्टर रिस्क को कम करने के लिए गवर्नेंस पर एक नेशनल वर्कशॉप शुरू हो गई है। ओडिशा स्टेट डिज़ास्टर मैनेजमेंट अथॉरिटी (OSDMA), यूनाइटेड नेशंस पॉपुलेशन फंड (UNFPA) के साथ मिलकर दो दिन की यह वर्कशॉप, पूरे भारत में डिज़ास्टर रिस्क को कम करने में ज़िम्मेदार गवर्नेंस पर गाइडेंस देगी।इस इवेंट में नेशनल डिज़ास्टर मैनेजमेंट एजेंसी, स्टेट डिज़ास्टर मैनेजमेंट अथॉरिटीज़ और यूनाइटेड नेशंस डेवलपमेंट पार्टनरशिप एजुकेशनल इंस्टीट्यूट के सीनियर अधिकारी शामिल हुए। डिप्टी चीफ मिनिस्टर कनक वर्धन सिंह देव ने कहा कि डिज़ास्टर मैनेजमेंट में ओडिशा की शानदार सफलता के लिए ग्लोबल पहचान के साथ, ओडिशा डिज़ास्टर मैनेजमेंट के क्षेत्र में दूसरों के लिए एक रोल मॉडल बन गया है। यह डिज़ास्टर मैनेजमेंट के क्षेत्र में सरकार के कमिटमेंट, ईमानदारी और डेडिकेशन का एक बड़ा उदाहरण है। रेवेन्यू और डिज़ास्टर मैनेजमेंट मिनिस्टर सुरेश पुजारी ने वर्कशॉप के महत्व पर ज़ोर दिया और कहा कि सरकार ने हमेशा लोगों पर केंद्रित डिज़ास्टर मैनेजमेंट को प्राथमिकता दी है। सरकार ने हमेशा अलग-अलग प्राकृतिक आपदाओं के दौरान होने वाली इमरजेंसी स्थितियों से मिले मैनेजमेंट अनुभव का इस्तेमाल लोगों की सुरक्षा और ज़ीरो कैजुअल्टी सुनिश्चित करने के लिए करने की कोशिश की है। अन्य लोगों के अलावा, एडिशनल चीफ सेक्रेटरी और ओडिशा डिज़ास्टर मैनेजमेंट अथॉरिटी के मैनेजिंग डायरेक्टर, देवरंजन कुमार सिंह मौजूद थे।

साइबर इंफ्रास्ट्रक्चर पर खतरा: क्लाउडफ्लेयर की गड़बड़ी से मिली सीख !

मंगलवार, 18 नवंबर 2025 को शाम करीब 5:20 बजे से क्लाउडफ्लेयर नेटवर्क में तकनीकी गड़बड़ी आ गई।इस तकनीकी गड़बड़ी ने दुनिया भर की ऑनलाइन सेवाओं को यकायक रोक दिया। चैटजीपीटी, ट्विटर (एक्स प्लेटफार्म),कैनवा, डिस्कोर्ड और कई बड़े प्लैटफॉर्म इस तकनीकी गड़बड़ी के कारण एक साथ डाउन हो गए, जिससे यूजर्स को काफ़ी परेशानियों का सामना करना पड़ा। इस घटना ने वैश्विक डिजिटल इकोसिस्टम में संभावित कमजोरियों को उजागर किया और यह स्पष्ट किया कि इंटरनेट अवसंरचना में तकनीकी त्रुटियों का भी व्यापक प्रभाव पड़ सकता है। बहरहाल, उल्लेखनीय है कि जैसे ही क्लाउडफ्लेयर में दिक्कत आयी, वही उसे ट्रैक करने वाले प्लैटफॉर्म डाउनडिटेक्टर ने भी काम करना बंद कर दिया।यह साफ दिखाता है कि समस्या सिर्फ एक साइट की नहीं, बल्कि इंटरनेट इन्फ्रा-लेयर पर थी। यहां पाठकों को बताता चलूं कि इंटरनेट इंफ्रा-लेयर इंटरनेट की वह आधारशिला है, जिस पर पूरा डिजिटल संसार टिका हुआ है। क्लाउडफ्लेयर आउटेज से वैश्विक क्रिप्टो ट्रेडिंग बाधित हुआ और डेटाबेस त्रुटि से 20% इंटरनेट ठप हो गया। दूसरे शब्दों में कहें तो क्लाउडफ्लेयर कंपनी, जो कुल इंटरनेट ट्रैफ़िक का लगभग 20% संभालती है, लगभग तीन घंटे तक अपने मुख्य सिस्टम में पूरी तरह से रुकावट का सामना करती रही। उपलब्ध जानकारी के अनुसार समस्या 11:05 यूटीसी(कार्डिनेटेड यूनिवर्सल टाइम) या अंतरराष्ट्रीय मानक समय(भारतीय समय शाम 4.35 बजे) पर डेटाबेस में बदलाव के साथ शुरू हुई। क्लाउडफ्लेयर अपने क्लिकहाउस डेटाबेस सिस्टम की सुरक्षा में सुधार कर रहा था, तभी कुछ गड़बड़ हो गई। डेटाबेस ने क्लाउडफ्लेयर के बॉट सुरक्षा सिस्टम द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली कॉनफ़िगरेशन फ़ाइल में डुप्लिकेट प्रविष्टियाँ बनाना शुरू कर दिया। यह फ़ाइल अपने सामान्य आकार से बढ़कर दोगुने से भी ज़्यादा हो गई, जिससे इंटरनेट ट्रैफ़िक को प्रोसेस करने वाला सॉफ़्टवेयर ठप हो गया। जब क्लाउडफ्लेयर के सर्वर ने इस बड़े आकार की फ़ाइल को लोड करने की कोशिश की, तो वे क्रैश हो गए। फ़ाइल में 200 से ज़्यादा फ़ीचर थे, जो सिस्टम की 200 की अंतर्निहित सीमा से ज़्यादा थे (सामान्य उपयोग में लगभग 60 फ़ीचर होते थे)। यह विफलता कंपनी के पूरे वैश्विक नेटवर्क में फैल गई, जिससे लाखों वेबसाइटें प्रभावित हुईं जो सुरक्षा, गति और विश्वसनीयता के लिए क्लाउडफ्लेयर पर निर्भर हैं। हालांकि, वैश्विक इंटरनेट आउटेज का कारण साइबरअटैक नहीं था, बल्कि कंपनी की आंतरिक कॉनफ़िगरेशन त्रुटि थी और इसे तीन घंटे में हल कर लिया गया था। जानकारी के अनुसार समस्या 17:06 यूटीसी तक पूरी तरह हल कर दी गई। इसे 2019 के बाद क्लाउडफ्लेयर का सबसे गंभीर आउटेज माना गया है। बहरहाल, कहना ग़लत नहीं होगा कि इंटरनेट अवसंरचना प्रदान करने वाली दिग्गज कंपनी क्लाउडफ्लेयर में आई हालिया तकनीकी गड़बड़ी को केवल एक सामान्य तकनीकी व्यवधान मानकर नजरअंदाज नहीं किया जा सकता जैसा कि यह कंटेट डिलीवरी नेटवर्क दुनिया की 20 प्रतिशत वेबसाइट से सामग्री लेती और यूजर को देती है। वेबसाइट और यूजर के बीच ऐसे मध्यस्थ का काम करने वाले ऐसे प्लेटफार्म में, जिस पर दुनिया की हर पांचवी वेबसाइट आश्रित हो, इसी साल तीसरी बार बड़ी खराबी का होना, तथा उसे घंटों बने रहना

बताता है कि दुनिया का डिजिटल ढांचा कितनी नाजुक रीढ़ पर टिका हुआ है। वास्तव में, भविष्य में ऐसी घटनाओं से बचने के लिए यह चाहिए कि कंपनी मजबूत सुरक्षा उपायों को अपनाये और इनमें क्रमशः फाइल साइज़ पर सख्त सीमा, क्रिटिकल अपडेट्स रोकने के लिए ग्लोबल किल स्विच और सिस्टम फेल होने की संभावनाओं का व्यापक विश्लेषण शामिल किए जाने चाहिए। वास्तव में, क्लाउडफ़्लेयर पर दिक्कतें न आएँ, इसके लिए सबसे महत्वपूर्ण है कि उसकी कॉनफ़िगरेशन और डेटाबेस मैनेजमेंट को बेहद सावधानी से संभाला जाना चाहिए। दरअसल, किसी भी सिस्टम में बदलाव करने से पहले उसे टेस्ट करने के लिए एक अलग जगह (स्टेजिंग) होनी चाहिए, ताकि गलती पहले ही पकड़ में आ जाए। डेटाबेस में ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए कि एक जैसी एंट्री दो बार न बन पाए और डाटा हमेशा सही रहे। सिस्टम पर नज़र रखने के लिए मॉनिटरिंग और अलर्ट ज़रूरी हैं, जिससे किसी भी गड़बड़ी का तुरंत पता चल सके। साथ ही, बैकअप और ज़रूरत पड़ने पर तुरंत पुराने संस्करण पर लौटने (रोलबैक) की सुविधा होनी चाहिए, और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि, टीमों के बीच सही तालमेल और स्पष्ट नियम हों, ताकि किसी समस्या को जल्दी समझकर ठीक किया जा सके और सेवा बिना रुकावट चलती रहे।हाल फिलहाल, क्लाउडफ्लेयर में बार-बार गड़बड़ी होने की वजह यह है कि उनका सिस्टम बहुत बड़ा और जटिल है। दुनिया भर में फैले हजारों सर्वर और नेटवर्क पॉइंट्स एक साथ काम करते हैं, इसलिए छोटी-सी तकनीकी गलती भी तुरंत प्रभाव दिखा देती है। ऊपर से इंटरनेट पर बढ़ता ट्रैफिक और लगातार बदलते सुरक्षा खतरे क्लाउडफ्लेयर को अपने सिस्टम में बार-बार अपडेट करने मजबूर करते हैं। कभी-कभी इन अपडेट्स के दौरान कोई गड़बड़ी रह जाती है, जिससे वैश्विक स्तर पर रुकावटें देखने को मिलती हैं। संक्षेप में, विशाल सिस्टम और लगातार होने वाले बदलाव मिलकर समस्या का कारण बन जाते हैं। दुनिया को तेज और सुरक्षित इंटरनेट देने वाली कंपनी क्लाउडफ्लेयर में ही तकनीकी गड़बड़ी हो गई, और इसका असर पूरी दुनिया के इंटरनेट पर दिखा। यहां तक कि हमारा देश भारत भी इससे बच नहीं पाया। कई पेमेंट ऐप, खबरों की वेबसाइटें, ऑनलाइन खरीदारी वाले प्लेटफॉर्म, पढ़ाई से जुड़े पोर्टल और कई ऐप कुछ समय के लिए बंद हो गए। आज के समय में भारत की डिजिटल अर्थव्यवस्था तेजी से बढ़ रही है, ऐसे में इस तरह की रुकावटें सिर्फ थोड़ी परेशानी नहीं, बल्कि छोटा-मोटा आर्थिक नुकसान तक भी कर सकती हैं। अगर ऐसी समस्याएं बार-बार होने लगें, तो लोगों का डिजिटल पेमेंट, बैंकिंग और ऑनलाइन सेवाओं पर भरोसा कम हो सकता है। स्टार्टअप, आईटी कंपनियां और एआई पर काम करने वाले उद्योग भी असुरक्षित महसूस करेंगे और उनकी कामकाज की रफ्तार धीमी पड़ सकती है। अंत में यही कहूंगा कि जब इस तरह की तकनीकी दिक्कत होती है तो सिर्फ एआई प्लेटफॉर्म ही नहीं रुकते, बल्कि इंटरनेट की पूरी 'रीढ़' हिल जाती है। इसी पर अस्पतालों की ऑनलाइन सेवाएं, फ्लाइट बुकिंग, ऑनलाइन क्लास, आपदा प्रबंधन और सरकारी सेवाएं चलती हैं, इसलिए सब असर में आ जाते हैं। आम लोगों के पास बचने के ज्यादा तरीके नहीं होते। कभी-कभी वीपीएन या दूसरा नेटवर्क इस्तेमाल करने से थोड़ी राहत मिल सकती है, लेकिन असली समाधान कंपनियों के हाथ में है। यहां पाठकों को बताता चलूं कि वीपीएन यानी वर्चुअल प्राइवेट नेटवर्क इंटरनेट पर एक सुरक्षित और निजी सुरंग की तरह काम करता है, जो आपके डेटा को एनक्रिप्ट करके किसी भी बाहरी व्यक्ति, हैकर या इंटरनेट प्रदाता से छिपा देता है। जब आप वीपीएन का उपयोग करते हैं, तो आपका असली स्थान छुप जाता है और इंटरनेट को ऐसा लगता है कि आप किसी दूसरे शहर या देश से ऑनलाइन हैं। यह न केवल आपकी गोपनीयता की रक्षा करता है, बल्कि पब्लिक वाई-फाई का इस्तेमाल करते समय सुरक्षा भी बढ़ाता है। इसके अलावा, यदि कोई वेबसाइट या ऐप आपके क्षेत्र में बंद है, तो वीपीएन उसे आसानी से खोलने में मदद कर सकता है। कुल मिलाकर, वीपीएन आपकी ऑनलाइन गतिविधियों को सुरक्षित, निजी और स्वतंत्र बनाता है। अतः कंपनियों को यह चाहिए कि वे सिर्फ एक ही नेटवर्क (जैसे क्लाउडफ्लेयर) पर निर्भर न रहें। साथ में दो-तीन बैकअप नेटवर्क भी रखें, ताकि एक बंद हो जाए तो दूसरा तुरंत काम संभाल ले। क्लाउडफ्लेयर को भी अपने सिस्टम में ज्यादा बैकअप, ज्यादा सुरक्षा और ऑटोमैटिक लोड-शिफ्टिंग जैसी तकनीकें मजबूत करनी होंगी, तभी ऐसी बड़ी गड़बड़ियां दोबारा नहीं होंगी।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।

राजकोषीय सुराज से स्वराज : अनुच्छेद 280 की आत्मा का पुनर्पाठ

·कज जायसवाल

बजट 2026 आने वाला है. इसके पूर्व अनुच्छेद 280 की आत्मा का पुनर्पाठ जरुरी है ताकि सरकार की दृष्टि इस पर पड़े और इस पर कुछ पहल हो सके.

भारतीय संविधान का अनुच्छेद 280 वह आधारभूत ढांचा निर्धारित करता है जो केंद्र और राज्य सरकारों के बीच वित्तीय संतुलन को बनाए रखता है। इस अनुच्छेद के अनुसार, भारत के राष्ट्रपति प्रत्येक पाँच वर्ष में या आवश्यकता पड़ने पर पहले भी एक स्वतंत्र वित्त आयोग का गठन करते हैं। इस आयोग का उद्देश्य केवल आँकड़ों का विश्लेषण भर नहीं है बल्कि देश की समग्र वित्तीय संरचना में ऐसा संतुलन सुनिश्चित करना है कि केंद्र और राज्य दोनों को संसाधनों का न्यायसंगत हिस्सा प्राप्त हो सके।

इसमें केंद्र द्वारा एकत्र किए जाने वाले करों में राज्यों की हिस्सेदारी तय करना, राज्यों को अनुदान की सिफारिश करना और उनकी वित्तीय स्थिति सुदृढ़ करने के उपाय सुझाना शामिल है। बदलते आर्थिक परिदृश्य, राज्यों की आवश्यकताओं और राष्ट्रीय विकास लक्ष्यों के बीच सामंजस्य स्थापित करना भी इसी आयोग की जिम्मेदारी है। अनुच्छेद 280 यह सुनिश्चित करता है कि यह पूरी प्रक्रिया राजनीतिक हस्तक्षेप से मुक्त रहे। इसी कारण वित्त आयोग एक स्वतंत्र संवैधानिक संस्था है और अपनी सिफारिशें सीधे राष्ट्रपति को प्रस्तुत करता है। इसके बाद केंद्र सरकार इन सिफारिशों पर निर्णय लेकर आवश्यक कार्यान्वयन करती है। समग्र रूप से अनुच्छेद 280 भारत की संघीय संरचना का एक महत्वपूर्ण स्तंभ है जो राष्ट्रीय विकास की राह को सुचारु रखते हुए वित्तीय एकरूपता और प्रशासनिक दक्षता सुनिश्चित करता है।

पहले कार्यकाल से ही वर्तमान भारत सरकार ने सहकारी संघवाद के विचार को प्रोत्साहित किया है, जो अनेक मायनों में अनुच्छेद 280 की मूल भावना को प्रतिबिंबित करता है। हालांकि स्वतंत्रता के 78 वर्ष और वर्तमान सरकार के लगभग 12 वर्ष बाद भी इस दिशा में बहुत कुछ किया जाना शेष है। भारत एक बहुस्तरीय लोकतांत्रिक व्यवस्था संचालित करता है जहाँ केंद्र और राज्य सरकारों के साथ-साथ पंचायतें और छठी अनुसूची की स्वायत परिषदें भी शासन का अभिन्न हिस्सा हैं।

इन संस्थाओं से स्थानीय नागरिकों को प्रत्यक्ष अपेक्षाएँ होती हैं क्योंकि यही लोकतांत्रिक जवाबदेही की पहली पंक्ति है। सांसद और विधायक कानून बनाते हैं परंतु "जमीनी विकास" की वास्तविक जिम्मेदारी इन्हीं स्थानीय निकायों की होती है लेकिन दशकों की लोकतांत्रिक यात्रा के बावजूद, ये संस्थाएँ अभी तक वह वित्तीय आत्मनिर्भरता हासिल नहीं कर सकी हैं, जो उन्हें प्राप्त होनी चाहिए थी। इनके क्षेत्र से एकत्र किए गए कर केंद्र तक पहुँचते हैं और फिर एक लंबे पुनर्वितरण चक्र से होकर वापस आते हैं। इस प्रक्रिया में अनेक पंचायतें अपने आर्थिक योगदान के अनुपात में लाभ नहीं पातीं या यूं कहें की न्यायसंगत वितरण नहीं होता लेकिन ऐसा भी नहीं है कि न्यायसंगत वितरण असंभव है। यह संभव है और इसकी चर्चा आगे लेख में है.

इस समस्या का समाधान स्थानीय निकायों और स्वायत परिषदों को प्रत्यक्ष राजकोषीय भागीदारी प्रदान करने में निहित है। सहकारी संघवाद की मजबूत परंपरा के बावजूद पंचायतों का देश की दो प्रमुख कर प्रणालियों प्रत्यक्ष कर और अप्रत्यक्ष कर में कोई प्रत्यक्ष भागीदारी नहीं है जबकि ये कर इन्हीं स्थानीय क्षेत्रों के निवासी चुकाते हैं। स्थानीय विकास के लिए धन आज भी लंबी प्रशासनिक यात्रा कर वापस आता है, और यह स्पष्ट लेखा नहीं होता कि नागरिकों ने कितना कर दिया और बदले में कितना उन्हें प्राप्त हुआ।

इस चुनौती का समाधान कर-आधारित जनभागीदारी शासन की अवधारणा में है। वर्तमान कर ढाँचा केवल दो स्तरों केंद्र और राज्य को कर-साझेदारी देता है, जबकि सबसे जमीनी स्तर की सरकार, यानी पंचायत या परिषद, इससे बाहर है। पंचायत या परिषद क्षेत्रों में एकत्र कर पहले ऊपर जाता है और फिर मंजूरियों की लंबी प्रक्रिया के बाद धीरे-धीरे वापस आता है।

एक "भागीदारी आधारित कर प्रणाली" में स्थानीय निकायों एवं नागरिकों को अपने कर योगदान पर सीमित विवेकाधिकार दिया जा सकता है। यह विचार वैश्विक स्तर पर नया है लेकिन भारत जैसे विशाल और बहुस्तरीय शासन वाली व्यवस्था में यह एक पथप्रदर्शक पहल हो सकता है। जमीनी स्तर पर राजकोषीय भागीदारी पर आधारित सहकारी संघवाद की यह नई मॉडल लोकतंत्र को और अधिक मजबूत करेगा, संघीय संरचना को सुदृढ़ करेगा और वित्तीय प्रशासन में नागरिकों की सहभागिता बढ़ाएगा। नागरिक अपने गाँव, कस्बे, शहर, राज्य या पसंदीदा सरकारी योजनाओं में प्रत्यक्ष धन योगदान कर सकेंगे। इससे कर-आधार बढ़ेगा, कर अनुपालन सुधरेगा, और भारत के कर प्रशासन में सरकार द्वारा स्वीकार किए गए नज सिद्धांत का वास्तविक उपयोग होगा। यह मॉडल अनुच्छेद 280 और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सहकारी संघवाद के संकल्प दोनों के अनुरूप होगा।

सरकार इस मॉडल को कुछ पंचायतों या स्वायत परिषदों में पायलट प्रोजेक्ट के रूप में लागू कर सकती है। इस प्रणाली में नागरिक और संपन्न प्रवासी अपने अपने स्थानीय निकायों के लिए स्थानीय वित्तपोषण में प्रत्यक्ष भागीदारी कर सकेंगे। यद्यपि केंद्र और राज्य सरकारें एकत्रित करों के उपयोग पर विवेकाधिकार रखती हैं, लेकिन अनुच्छेद 280 की मूल भावना के तहत व्यवस्था में सुधार कर उसका एक भाग पंचायतों और नागरिकों को भी सौंपा जा सकता है।

इसके तहत यदि कोई नागरिक अपने व्यक्तिगत कर का एक निश्चित प्रतिशत अपनी स्थानीय पंचायत या किसी स्वीकृत विकास योजना में देना चाहता है, और पंचायत की आमसभा इस परियोजना को मंजूरी देती है, तो यह राशि उसके अंतिम कर दायित्व में समायोजित की जा सकती है। अंततः यह व्यय उसी स्थान पर होना ही है, जहाँ पुनर्वितरण के बाद सरकार इसे भेजती।

इस व्यवस्था के प्रमुख लाभार्थी पंचायतें और परिषदें और अंततः जनता ही होगी । इससे अनुच्छेद 280, पंचायती राज, और सहकारी संघवाद के वास्तविक उद्देश्य को मूर्त रूप मिलेगा। इससे गांधीजी का सुराज एवं स्वराज वास्तव में साकार होगा और गाँवों-शहरों को विकास लक्षित धन जल्दी और जबाबदेही के साथ प्राप्त होगा। यदि कोई पंचायत अपनी किसी परियोजना जैसे सीवर, जल आपूर्ति, पार्क निर्माण को मंजूर करती है, तो उसे केवल राज्य या केंद्र पर निर्भर रहने की आवश्यकता नहीं होगी। वह अपने नागरिकों से निर्धारित सीमा में विवेकाधीन कर योगदान का आह्वान कर सकती है।

इसी प्रकार, यदि कोई नागरिक या उस क्षेत्र से जुड़े प्रवासी या सफल व्यक्ति किसी विशेष स्थानीय परियोजना को वित्त देना चाहे, और पंचायत की आमसभा इसे मंजूरी दे, तो वह अपने कर का एक भाग इसमें दे सकता है। उदाहरण के लिए, यदि सीमा 10% है और किसी नागरिक ने इसमें 5,000 दिए जबकि उसका कुल कर दायित्व 10,000 है, तो 1,000 को ही कर भुगतान मान उसके अंतिम कर दायित्व से समायोजित जाएगा और शेष 4,000 सरकार के विवेकाधीन संसाधन के रूप में जोड़े जा सकते हैं।

यदि किसी पंचायत को इस व्यवस्था से अनुमानित बजट से अधिक धन मिलता है, तो अतिरिक्त राशि केंद्र राज्य सरकार को वापस जाएगी। यह मॉडल केवल आयकर ही नहीं, बल्कि GST जैसे करों पर भी लागू किया जा सकता है। सरकार चाहे तो इसे 80G या CSR जैसे ढाँचों से जोड़कर और भी आकर्षक बना सकती है।

अंत में, यह प्रणाली लोकतंत्र को उसकी जड़ों तक मजबूत करेगी, प्रशासनिक जवाबदेही बढ़ाएगी, कर संग्रह को विस्तृत करेगी और राज्यों एवं पंचायतों की वित्तीय भागीदारी को बढ़ाकर सहकारी संघवाद को और सशक्त बनाएगी जो हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का भी एक प्रमुख लक्ष्य है।

विधायक जसबीर सिंह संधू और मेयर जतिंदर सिंह भाटिया द्वारा वार्ड नंबर 2, गांव मालावाली में गलियों के निर्माण कार्यों का उद्घाटन

अमृतसर, 20 नवंबर (साहिल बेरी)

हल्का पश्चिमी के विधायक डॉ. जसबीर सिंह संधू ने वार्ड नंबर 2, गांव मालावाली में गलियों के निर्माण कार्यों का उद्घाटन किया। इस अवसर पर मीडिया से बातचीत करते हुए विधायक डॉ. जसबीर सिंह संधू ने कहा कि वार्ड के काउंसलर श्री अमरजीत सिंह गुमटाला (एलआईसी वाले) के प्रयासों से वार्ड के अधूरे कार्यों के टेंडर लगकर पास हो चुके हैं और आज गांव मालावाली की बची हुई अधूरी लिंक गलियों का उद्घाटन किया गया है।

मेयर जतिंदर सिंह भाटिया ने कहा कि वार्ड के अन्य अधूरे कार्य भी जल्द ही पूरे किए जाएंगे।

इस मौके पर वार्ड काउंसलर अमरजीत सिंह गुमटाला (एलआईसी), उप प्रधान बलदेव सिंह गुमटाला, बाबा बलविंदर सिंह मालावाली, प्रधान जसबीर सिंह संधू कनौली, करण जोत (होटल रनवे वाले), कैप्टन प्रेम सिंह, हरपाल सिंह गुमटाला (किरन कॉलोनी) सहित कई अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

मानवता हुई शर्मशार... 16 पक्षियों के शव बरामद, 3 शिकारी गिरफ्तार

परिवहन विशेष न्यूज

बदायूँ से बड़ी खबर—शिकारीयों की घिनौनी करतूत सामने आई है।

बुधवार शाम करीब 7 बजे सिविल लाइन थाना क्षेत्र में पुलिस ने तीन शिकारियों को धर दबोचा। इनके कब्जे से 16 निर्दोष पक्षियों के शव और शिकार करने के उपकरण बरामद किए गए। घटना के बाद क्षेत्र में सनसनी फैल गई।

डायल 112 पर तैनात सिपाही राजप्रताप सिंह तथा गंगाराम चौधरी को सूचना मिलते ही उन्होंने तत्काल कार्रवाई कर आरोपियों को पकड़ लिया। जिसके बाद पशु प्रेमी विकेंद्र शर्मा व उनके साथी दीपेश दिवाकर मौके पर पहुँचे और वन विभाग को सूचना दी।

सूचना पर पहुंचे वन दरोगा अशोक कुमार एवं दिनेश कुमार ने कार्रवाई करते हुए तीनों आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया, जबकि उनकी एक साथी छमियां मौका पाकर फरार हो गई।

वन विभाग की तहरीर पर थाना सिविल लाइन में पशु क्रूरता अधिनियम समेत सुसंगत धाराओं में मुकदमा दर्ज कर लिया गया है। पुलिस फरार आरोपी की तलाश में जुटी हुई है।

पश्चिमी सिंहभूम जिले के बैंकों के लावारिस खाते में पड़े हैं 100.96 करोड़ रुपये

100 .96 करोड़ धनराशि की निकासी के लिए 21 नवम्बर को एसबीआई द्वारा चाईबासा मे शिविर का आयोजन

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

चाईबासा, पश्चिमी सिंहभूम अग्रणी बैंक जिला प्रबंधक दिवाकर सिन्हा के द्वारा बताया गया है कि वैसे बैंक खाते जिसमें विगत 10 वर्षों से ग्राहकोंद्वारा कोई लेन-देन नहीं हो रहा है और बिना दावे वाली बैंक जमा राशी(अनक्लेम्ड) में वर्गीकृत होकर सुरक्षा की दृष्टि से भारतीय रिजर्व बैंक के डीईएफ(डिपोजिटर एजुकेशन एंड अवेयरनेस फण्ड) खाते में जमा हो जाते हैं। उसी तरह शेयर, डिविडेंट्स, बांड्स, डिवेंचर, आदि 7 वर्षों में अनक्लेम्ड में वर्गीकृत होकर एस ईबीआई के आईं ई पी एफ (इन्वेस्टर एजुकेशन प्रोटेक्शन फण्ड) में, लघु बचत योजना, बीमा भविष्य निधि आदि 7 से 10 वर्षों में अनक्लेम्ड में वर्गीकृत होकर आई आर डी आई ए के एस सी फब्लु एफ (सीनियर सिटीजन वेलफेयर फण्ड) में और मिचुअल फंड और उसके डिविडेंट एस ई बी आई के खाते में सुरक्षा की दृष्टि से जमा हो जाता है, जिसे पुनः पाना आसन है।

उन्होंने बताया कि जागरूकता और प्रचार-प्रसार के लिए वत्तीय सेवा विभाग, वित्त मंत्रालय, भारत सरकार

DEAF ACCOUNTS

SLBC for State/UT — JHARKHAND

Details of Unclaimed despoits as on August 31, 2025

S.No	NAME OF BANK	Name of District	JHARKHAND Number of Accounts	Amount (in
	1	2	3	4
1	BANK OF BARODA	WEST SINGHBHUM	6357	
2	HDFC BANK	WEST SINGHBHUM	62	
3	JRG BANK	WEST SINGHBHUM	49976	
4	Punjab National Bank	WEST SINGHBHUM	12821	
5	Central bank of India	WEST SINGHBHUM	267	
6	Indian Overseas Bank	WEST SINGHBHUM	1115	
7	IDBI Bank Ltd	WEST SINGHBHUM	4543	
8	Panjab &Sind Bank	WEST SINGHBHUM	16	
9	Bank Of India	WEST SINGHBHUM	85,352	
10	Axis Bnak Ltd	WEST SINGHBHUM	604	
11	STATE BANK OF INDIA	WEST SINGHBHUM	21763	
12	CANARA BANK	WEST SINGHBHUM	70921	
13	INDIAN BANK	WEST SINGHBHUM	4454	
	TOTAL		258251	1

द्वारा 01 अक्टूबर से 31 दिसंबर तक देश के सभी जिलों में चरणबद्ध तरीके से ₹अनक्लेम्ड एसेट्स के कुशल एवं त्वरित निपटान अभियान₹ चलाया जा रहा है। पांचवें चरण में पश्चिमी सिंहभूम जिले में जिला स्तरीय शिविर का आयोजन दिनांक 21 नबम्बर 2025 दिन, शुक्रवार, स्थान- भारतीय स्टेट बैंक, चाईबासा शाखा प्रांगण(पोस्ट ऑफिस चौक) समय 11.00 पूर्वाह्न से आयोजित हो रही है। जिसमें जिले के सभी वित्तीय संस्थान यथा, बैंक, बीमा कंपनी, मिच्युअल फंड कंपनी, प्रतिभूति कंपनी, पेंशन भुगतान कंपनी द्वारा स्टाल लगाकर अपने-अपने अनक्लेम्ड एसेट्स का कुशल एवं त्वरित निपटान किया जाएगा। शिविर में बैंकों और वित्तीय संस्थान के वरीय अधिकारी ग्राहकों की मदद के लिए उपस्थित रहेंगें। अनक्लेम्ड रुपये के क्लेम के लिए आवेदन फॉर्म सम्बंधित स्टाल पर उपलब्ध रहेंगे, ग्राहक अपना के बाईं सी जैसे आधार कार्ड, पैन कार्ड, पासपोर्ट फोटो की स्वाभिप्रमाणित प्रत्ति जमा कर अपने रकम को ब्याज सहित प्राप्त कर सकते हैं। अगर आपके पास बैंक पासबुक/दस्तावेज नहीं है, लेकिन आपको मालूम है कि बैंक में खाते हैं, तो आर बी आई का उदगम पोर्टल (udgam.rbi.org.in) पर अपना पानी , जन्मतिथि, नाम आदि जानकरी देकर सर्च कर सकते हैं, फिर उस बैंक में अपना क्लेम फॉर्म भरकर रकम ब्याज सहित वापस पा सकते हैं।

बैंकों द्वारा बताया गया है कि बहुत सारे अनक्लेम्ड बैंक एकाउंट के ग्राहक आज की तारीख में मृत हो गए हैं, वैसे स्थिति में खाते के नोमेनी परिवार के सदस्य/उतराधिकारी उस रकम को प्राप्त करने के लिए मृतक का के वाईसी और अपना के वाई सी जमा करते हुए मृतक के खाते में जमा रकम के दावे की प्रक्रिया को अपना कर रकम प्राप्त कर सकते है। उक्त शिविर में अनक्लेम्ड एसेट्स का कुशल एवं त्वरित निपटान के साथ-साथ सामाजिक सुरक्षा योजना के तहत जनधन खाता खोलना, प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा, प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा और अटल पेंशन योजना में इनरोलमेंट भी करा सकते हैं।

जनतक स्थानों पर तंबाकू सेवन करना और खुले सिगरेट बेचना कानूनन अपराध है – डी.डी.एच.ओ. डॉ. जगर जोत कौर

अमृतसर, 20 नवंबर (साहिल बेरी)

पंजाब सरकार के निर्देशों के तहत, सिविल सर्जन डॉ. भारती धवन के दिशानिर्देशों अनुसार डिप्टी डायरेक्टर डेंटल डॉ. जगरजोत कौर की अगुवाई में स्वास्थ्य विभाग द्वारा COTPA एक्ट के अंतर्गत 14 लोगों के चालान काटे गए।

इस मौके पर डिप्टी डायरेक्टर डेंटल डॉ. जगरजोत कौर ने कहा कि जिले को तंबाकू मुक्त बनाने और COTPA एक्ट को सख्ती से लागू करने के लिए यह विशेष अभियान चलाया जा रहा है। इस अभियान के तहत एक विशेष टीम का गठन किया गया है, जिसमें जिला M.E.I.O. अमरदीप सिंह, डॉ. शबनमदीप कौर, ए.एस.आई. गुरकिरन सिंह, सुरजीत सिंह, दीपक कुमार, रशपाल सिंह, मनप्रीत सिंह, हरप्रीत सिंह और अन्य सहायक स्टाफ शामिल थे।

टीम द्वारा मौके पर कार्रवाई करते हुए शहर के विभिन्न क्षेत्रों में तंबाकू विक्रेताओं की जांच की गई। इस दौरान ढाब खटिका, हाथी गेट और हासिल गेट क्षेत्रों में 8 दुकानदारों तथा सार्वजनिक स्थानों पर सिगरेट पीते पाए गए 6 व्यक्तियों के मौके पर चालान किए गए।

उन्होंने कहा कि जिले में COTPA एक्ट को सख्ती से लागू किया जाएगा। सरकार के आदेशों के अनुसार प्रत्येक तंबाकू उत्पाद के पैकेट के दोनों तरफ एक निर्धारित मानक के तहत चेतावनी संदेश और तस्वीर छापना अनिवार्य है, जिसमें यह स्पष्ट लिखा हो कि "तंबाकू दर्दनाक मौत और कैंसर का कारण बनता है"। इसलिए बिना तय मानक वाले तंबाकू उत्पाद बेचना कानूनन अपराध है।

इसके अलावा, खुले सिगरेट बेचना और सार्वजनिक स्थानों पर तंबाकू सेवन करना भी दंडनीय अपराध है। साथ ही शैक्षणिक संस्थानों के 100 गज के दायरे में तंबाकू उत्पाद बेचना भी कानूनन प्रतिबंधित है।

अमृतसर के पुलिस कमिश्नरतट ने छेहर्टा मर्डर केस के मेन शूटर को उसके साथी के साथ अरेस्ट किया।

अमृतसर/20 नवंबर(साहिल बेरी)

एक रिवॉल्वर बरामद, कुल चार अरेस्ट

*18-11-2025 की सुबह, वरिंदर सिंह को गुरुद्वारा छेहर्टा साहिब के पास मोटरसाइकिल पर सवार दो हमलावरों ने गोली मार दी, जब वह अपने बच्चों को स्कूल छोड़कर लौट रहे थे। बाद में वेरका बाईपास पर एस्कॉर्ट फोर्टिस हॉस्पिटल में इलाज के दौरान उनकी मौत हो गई।

* छेहर्टा पुलिस स्टेशन, अमृतसर में सेक्शन 103, 61 (2) BNS 25, 27 आर्म्सएक्ट के तहत FIR नंबर 233 तारीख 18.11.2025 दर्ज की गई।

*पुलिस ने जांच के दौरान गुरलाल सिंह और उनकी पत्नी परमजीत कौर को अरेस्ट किया था।

* आगे की जांच के दौरान, पुलिस ने तुरंत कार्रवाई की और दो आरोपियों को गिरफ्तार कर लियाः मुख्य शूटर, जोबनप्रीत सिंह उर्फ जोबन और उसका साथी सुखबीर सिंह।

* पूछताछ के दौरान, आरोपी जोबनप्रीत सिंह ने बताया कि उसने जुर्म में इस्तेमाल की गई ग्लॉक 9mm पिस्टल छिपाई थी और उसे वापस दिलाने की पेशकश की। जब उससे पूछा गया कि क्या हथियार लोडेड था, तो उसने कहा कि वह खाली है। इस पर कार्रवाई करते हुए, पुलिस उसे बताई गई जगह पर ले गई।

*मौके पर पहुंचने के बाद, आरोपी ने अचानक छिपा हुआ हथियार उठाया और हेड कांस्टेबल गुरिंदर सिंह पर एक गोली चलाई, लेकिन किस्मत से गोली उसे नहीं लगी।

*जवाब में, इंस्पेक्टर लवप्रीत सिंह SHO छेहरटा ने पुलिस पार्टी को बचाने के लिए अपनी सर्विस पिस्टल से एक गोली चलाई, जो आरोपी के दाहिने पैर में लगी।

* घायल आरोपी को इलाज के लिए अस्पताल ले जाया गया।

* घटना के दौरान आरोपी के पास से एक ग्लॉक 9mm ऑस्ट्रियन मेड पिस्टल बरामद की गई।

*मुख्य आरोपी निशान सिंह ने इन शूटरों को विदेश (दुबई) भेजने का वादा करके क्राइम करने के लिए फुसलाया था।

* निशान सिंह के खुद विदेश में रहने का शक है। निशान सिंह अर्शदीप कौर का पति है।

* इस बारे में, FIR नंबर 236 तारीख 20-11-2025 को सेक्शन 109, 132, 221, 262 BNS, 25 आर्म्स एक्ट के तहत पुलिस स्टेशन छेहरटा अमृतसर में रजिस्टर किया गया है।

रिकवरी

* एक ग्लॉक 9mm ऑस्ट्रियन मेड पिस्टल

गिरफ्तार आरोपी

1. जोबनप्रीत सिंह उर्फ जोबन, गांव फत्तूपुर, पुलिस स्टेशन कोटली सूरत मल्ही, गुरदासपुर

उम्रः 22 साल, प्रोफेशनः बेरोज़गार, पिछले केसः कोई नहीं

2. सुखबीर सिंह उर्फ सुख, गांव महल, पुलिस स्टेशन कलानौर, गुरदासपुर

उम्रः 22 साल, प्रोफेशनः बेरोज़गार, पिछले केसः कोई नहीं

पहले गिरफ्तार

3. गुरलाल सिंह, गांव चंबा, तरनतारन

4. परमजीत कौर पत्नी गुरलाल सिंह, गांव चंबा, तरनतारन

घायल आरोपीः

1. जोबनप्रीत सिंह उर्फ जोबन, गांव फत्तूपुर, पुलिस स्टेशन कोटली सूरत मल्ही, गुरदासपुर

टीमः श्री रविंदरपाल सिंह, DCP/इन्वेस्टिगेशन, श्री सिरिवेनेला, ADCP-2, श्री. शिवदर्शन सिंह, ACP वेस्ट और इंस्पेक्टर लवप्रीत सिंह, SHO, पुलिस स्टेशन छेहरटा।

जमीन म्यूटेशन की नकल देने हेतु ले रहा था 55 हजार, एसीबी ने दबोचा बड़ा बाबू को

पलामू ही नहीं झारखंड में सर्वत्र विराजमान हैं जमीन भ्रष्टाचारी "दानव"

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

सरायकेला, झारखंड गठन के साथ दिनों झारखंड में भ्रष्ट जमीन कारोबारियो का पौ बारह है , जिसका मूल कारण भ्रष्टाचार ने विभाग को संभवतः खरीद लिया है. पलामू के बाद पूर्व देशी रियासत सरायकेला जैसे जिले में स्वच्छ गणतंत्र का स्वरुप स्वरूप को ही बदल डाला दिया है .आज लगभग 90 प्रतिशत अधिकारी कर्मचारी माला माल हो रहे हैं भ्रष्टाचार से . सरकार किसी भी पार्टी का क्यों न हो झारखंड गठन के बाद मूलवासी वर्ग गरीब से अति गरीब होने चला है तो दुसरी तरफ बाहरी इसका फायदा लेकर झारखंड को लूट रहे हैं , विद्यौलियों पर कोई लगाम ही नहीं . आज स्थिति यह है कि सही लोग आफिस का महिनों वर्षों चक्कर काट रहे वहीं दलाल देर रात भी काम को अंजाम दिलवा रहे हैं. यह मांजरा केवल सरायकेला ही नहीं अनेक जगहों पर है . इसी क्रम में आज एसीबी ने जमीन कारोबार पर पलामू में बड़ा धावा बोला है . घूस लेने के आरोप में चैनपुर अंचल कार्यालय के बड़ा बाबू विनोद राम को एसीबी ने गिरफ्तार किया है. बड़ा बाबू विनोद राम पर म्यूटेशन की नकल देने के नाम पर घूस लेने का आरोप है. विनोद राम मेदिनीनगर सदर थाना क्षेत्र के सिंगरा खुर्द पूर्णाडीह के रहने वाला हैं. वे पिछले कई वर्षों से चैनपुर अंचल कार्यालय में तैनात था.

कार्रवाई के संबंध में पलामू प्रमंडलीय एसीबी की तरफ से एक प्रेस रिलीज जारी किया गया है और मामले की जानकारी दी गई है. एसीबी की

तरफ से प्रेस रिलीज में बताया गया है कि चैनपुर के रहने वाले अनुज कुमार ने अपने जमीन के म्यूटेशन के लिए आवेदन दिया था. म्यूटेशन होने के बाद मनोज कुमार लगातार चैनपुर अंचल कार्यालय में नकल लेने के लिए दौड़ लगा रहा था.

इस दौरान अंचल कार्यालय के बड़ा बाबू विनोद राम ने नकल देने की एवज में 10 हजार घूस मांगा था. मनोज कुमार घूस नहीं देना चाहते थे और पूरे मामले को लेकर एसीबी से शिकायत की थी. गुरुवार को पलामू प्रमंडल एसीबी की टीम ने पूरे मामले में ट्रैप लगाते हुए चैनपुर अंचल कार्यालय से बड़ा बाबू विनोद राम को 5500 रुपए घूस लेने के आरोप में गिरफ्तार कर लिया.चैनपुर अंचल कार्यालय अधिकारी विनोद राम की गिरफ्तारी के बाद एसीबी की टीम ने विनोद राम के घर की तलाशी भी ली, हालांकि इसमें कुछ नहीं मिला. मेडिकल जांच के बाद विनोद राम को न्यायिक हिरासत में भेजे जाने की तैयारी है. बता दें कि एक लंबे समय बाद पलामू के इलाके में एसीबी ने बड़ी कार्रवाई की है.पर जमीन कारोबार पर भ्रष्टाचार सर्वत्र व्याप्त है . देखना दिलचस्प होगा ऊट किस दिशा में करवट ले रहा है ।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com

(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी .आर .बी . एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023